

आर.एन.आई. नं. 3653/57
मुद्रण तिथि 5 से 8 अप्रैल, 2021
डाक प्रेषण तिथि 10 अप्रैल, 2021

वर्ष : 79 अंक : 04
चैत्र, 2077 मूल्य : ₹ 10
पृष्ठ संख्या 104

डाक पंजीयन संख्या Jaipur City/413/2021-23
WPP Licence No. Jaipur City/WPP-04/2021-23
Posted at Jaipur RMS (PSO)

ISSN 2249-2011

हिन्दी मासिक

जिनवाणी

अप्रैल, 2021

महावीर जयन्ती अंक



Website : www.jinwani.in

वीतरागवाणी सुख-दुःख के कारणों को समझाकर
प्राणी को कुमार्ग से बचाती एवं सुमार्ग में जोड़ती है।

– आचार्यश्री हस्ती

संसार की समस्त सम्पदा और भोग
के साधन भी मनुष्य की इच्छा
पूरी नहीं कर सकते हैं।

- आचार्य हस्ती



आवश्यकता जीवन को चलाने
के लिए जरूरी है, पर इच्छा जीवन
को बिगाड़ने वाली है,
इच्छाओं पर नियंत्रण आवश्यक है।

- आचार्य हीरा



जिनका जीवन बोलता है,
उनको बोलने की उतनी जरूरत भी नहीं है।

- उपाध्याय मान

With Best Compliments :
Rajeev Nita Daga Foundation Houston

जय गुरु हस्ती

जय महावीर

जय गुरु हीरा-मान

श्री कुशलरत्नगजेन्द्रहीरागणिभ्यो नमः

अंक सौजन्य

जीवन उन्नत करना चाहें तो,
सामायिक-साधन कर लो।

-आचार्यश्री हस्ती

अनन्य गुरुभक्त दृढधर्मी, सरलमना



संघसेवी, श्रावकश्रेष्ठ
श्री भागचन्द्र सेठ



संघसेवी, श्राविकारत्न
श्रीमती राजदुलारी सेठ

-:: नमनकर्ता ::-

हेमेश-सीमा (हांगकांग)

अनन्त-ऋतु (जयपुर)

उपनीश-नीतू (जयपुर)

एवं समस्त सेठ परिवार

जय गुरु हस्ती

जय महावीर

जय गुरु हीरा-मान

श्री कुशलरत्नगजेन्द्रहीरागणिभ्यो नमः

अंक सौजन्य

सामायिक-स्वाध्याय के प्रबल प्रेरक, अनन्त श्रद्धा के केन्द्र

आचार्यप्रवृत्त 1008 श्री हस्तीमलजी म.सा.

व्यसनमुक्ति के प्रबल प्रेरक

श्रद्धेय आचार्यप्रवृत्त 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा.

के चरण कमलों में शत-शत वन्दन, नमन।

अनन्य गुरुभक्त श्रावकरत्न स्व. श्री भँवरलालजी,

श्राविकारत्न स्व. श्रीमती माँगीदेवी जैन एवं

श्रावकरत्न स्व. श्री शिवनारायणजी जैन (बिलोता वाले)

के सुसंस्कार एवं देव, गुरु, धर्म की

छत्र-छाया में पल्लवित.....

❀ श्रद्धान्वित गुरुभक्त बिलोता-परिवार ❀

सुपुत्र-सुपुत्रवधूँ :: सोभागमल-श्रीमती सन्तोषदेवी, हरकचन्द-श्रीमती प्रेमलता, हनुमान प्रसाद-श्रीमती कलावती, महावीर प्रसाद-श्रीमती प्रेमदेवी, कपूरचन्द-श्रीमती विमलादेवी।

सुपौत्र-सुपौत्रवधूँ :: अशोक-श्रीमती कंचन, सुनीत-श्रीमती सुनीता, दिनेश-श्रीमती भारती, सुधीर-श्रीमती अनिता, महेन्द्र-श्रीमती रेखा, डॉ. राजीव-श्रीमती माधुरी, संजय-श्रीमती अभिलाषा, डॉ. पंकज-श्रीमती वन्दना, आशीष-श्रीमती मोनिका।

प्रपौत्र-प्रपौत्रवधूँ :: अनुपम-श्रीमती खुशबू, पुलकित-श्रीमती शिवांगी।

प्रपौत्र-प्रपौत्री :: आयुष (IFS), वैभव, यश, कृति, दिशा, मैत्रेय, हृदया, श्रेष्ठ, नव्या, आहान, युदित, अद्वैत।

अलीगढ़ (रामपुरा)-सवाईमाधोपुर-कोटा-जयपुर

जिनवाणी

मंगल-मूल, धर्म की जननी, शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी, फिर प्रगटी यह 'जिनवाणी' ॥

संरक्षक

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ
प्लॉट नं. 2, नेहरूपार्क, जोधपुर (राज.), फोन-0291-2636763
E-mail : absjrhssangh@gmail.com

संस्थापक

श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़

प्रकाशक

अशोककुमार सेठ, मन्त्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
दुकान नं. 182, के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003(राज.)
फोन-0141-2575997
जिनवाणी वेबसाइट- www.jinwani.in

प्रधान सम्पादक

प्रो. (डॉ.) धर्मचन्द जैन

सह-सम्पादक

नीरतनमल मेहता, जोधपुर
मनोज कुमार जैन, जयपुर

सम्पादकीय कार्यालय

ए-9, महावीर उद्यान पथ, बजाजनगर, जयपुर-302015 (राज.)
फोन : 0141-2705088
E-mail : editorjinwani@gmail.com

भारत सरकार द्वारा प्रदत्त

रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57
डाक पंजीयन सं.- JaipurCity/413/2021-23
WPP Licence No. JaipurCity-WPP-04/2021-23
Posted at Jaipur RMS (PSO)



परस्परपद्मो जीवनाम्

परिजूरुड ते सरीर्यं,
केसा पंडुरया हवंति ते।
से घाण-बले य हायडु,
समयं गौयम! मा पमायडु॥

-उत्तराध्ययन सूत्र, 10.23

हो रहा जीर्ण यह तन तेरा,
हो रहे केश ये धवल पककर।
घट रहा घ्राणबल है तेरा,
गौतम! प्रमाद क्षण का मतकर॥

अप्रैल, 2021

वीर निर्वाण सम्वत्, 2547

चैत्र, 2077

वर्ष 79

अंक 4

सदस्यता शुल्क

त्रिवार्षिक : 250 रु.

20 वर्षीय, देश में : 1000 रु.

20 वर्षीय, विदेश में : 12500 रु.

स्तम्भ सदस्यता : 21000/-

संरक्षक सदस्यता : 11000/-

साहित्य आजीवन सदस्यता- 4000/-

एक प्रति का मूल्य : 10 रु.

शुल्क/साभार नकद राशि "JINWANI" बैंक खाता संख्या SBI 51026632986 IFSC No. SBIN 0031843 में जमा

कराकर जमापत्री (काउन्टर-प्रति) अथवा ड्राफ्ट मेजने का पता 'जिनवाणी', दुकान नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.)

फोन नं.0141-2575997, E-mail : sgpmandal@yahoo.in

मुद्रक : डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियो का रास्ता, जयपुर, फोन- 0141-4043938

नोट- यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो।

विषयानुक्रम

सम्पादकीय-	चेतना	-डॉ. धर्मचन्द जैन	7
अमृत-चिन्तन-	आगम-वाणी	-डॉ. धर्मचन्द जैन	10
विचार-वारिधि-	जीवन-निर्माण के सूत्र	-आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा.	11
प्रवचन-	जानें तप का स्वरूप	-आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा.	12
	समाधि में रहना आ जाए	-महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनिजी	17
	पुण्य-प्रकाश (2)	-तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनिजी म.सा.	21
	छिद्रान्वेषी ना बण	-श्रद्धेय आचार्य श्री विजयराजजी	25
उपाध्याय-दिवस-	अनासक्ति के पर्याय थे उपाध्यायप्रवर	-श्रद्धेय श्री जितेन्द्रमुनिजी म.सा.	27
महावीर-जयन्ती-	महावीर चालीसा	-श्री तरुण बोहरा 'तीर्थ'	28
	महावीर का स्वास्थ्य-दर्शन	-डॉ. चंचलमल चोरड़िया	29
	भगवान महावीर के व्यक्तित्व में सामाजिक आयाम	-डॉ. दिलीप धींग	33
	क्षमा की ताकत	-श्री कस्तूरचन्द बाफणा	36
स्मृति-दिवस-	आचार्यश्री हस्ती के श्रद्धालु भक्तों का प्रेरणादायी समर्पण एवं संघ की रीति-नीति का निर्धारण	-श्री नौरतनमल मेहता	39
English-section	Why Brahmacharya?	-Prof. Dharm Chand Jain	47
कविता-	अमूल्य बोध	-डॉ. रमेश 'मयंक'	50
तत्त्व-चिन्तन-	सर्वज्ञसिद्धि	-प्रो. वीरसागर जैन	51
तत्त्वबोध	शवासोच्छ्वास पर्याप्ति और जीव	-डॉ. ओ. पी. चपलोट (सी.ए.)	54
शोधालेख-	उत्तराध्ययनसूत्र में पर्यावरणीय चेतना एवं संरक्षण	-डॉ. एन. के. खींचा	56
तत्त्व-चर्चा	आओ मिलकर कर्मों को समझें (11)	-श्री धर्मचन्द जैन	58
नारी-स्तम्भ-	मेरे पास कुछ अच्छा नहीं है	-श्रीमती निधि दिनेश लोढ़ा	64
जीवन-व्यवहार-	व्यावहारिक जीवन के नीति वाक्य (4)	-श्री पी.शिखरमल सुराणा	65
चिन्तन-	शास्त्र-श्रवण से आत्मा को बल मिलता है	-डॉ. मंजुला बम्ब	66
भावाभिव्यक्ति-	बिन्दु की तपस्या एवं गुरुदेव की कृपा	-श्रीमती बीना मेहता	67
रिपोर्ट -	आचार्य हस्ती-स्मृति व्याख्यान माला का वेबिनार के माध्यम से आयोजन	-डॉ. धर्मचन्द जैन	70
	Vasudhaiva Kutumbakam : Jain Philosophy from Covid-19	-Dr. Mahaveer Golecha	72
गीत/कविता-	पर की आस	-श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा.	16
	सफलता या सरसता	-श्रीमती अंशु संजय सुराणा	24
	धिकतान्	-श्री शान्तप्रकाश सत्यदास	27
	महावीर के भक्तों से मुझे, यही बात बस कहना है	-श्री मोहन कोठारी 'विनर'	32
	मैत्री भावना	-श्रीमती अभिलाषा हीरावत	38
	पतन का कारण है भाव	-श्रीमती अंशु संजय सुराणा	46
	बीत रहा मानुष जन्म	-श्रीमती अमिता बाबेल	55
	क्या सच में मैं हूँ आत्मार्थी साधक?	-सी.ए. श्री निपुण डागा	69
विचार/चिन्तन-	सृष्टि की जैन मान्यता	-डॉ. पी. सी. जैन	20
	सामायिक की महिमा	-सौ. कमला सिंघवी	49
साहित्य-समीक्षा-	नूतन साहित्य	-श्री गौतमचन्द जैन	74
समाचार-विविधा-	समाचार-संकलन	-संकलित	77
	साभार-प्राप्ति-स्वीकार	-संकलित	89
बाल-जिनवाणी -	विभिन्न आलेख/रचनाएँ	-विभिन्न लेखक	91

चेतना

◆ डॉ. धर्मचन्द जौन

आधुनिक विज्ञान भले ही आत्मा को स्वीकार न करता हो, किन्तु वह चेतना के अनुभव को अवश्व स्वीकार करता है। चेतना (Consciousness) जीव का प्रमुख गुण है तथा यह उसका लक्षण भी है। संसारी जीव हो या मुक्त जीव सभी में चेतना होती है। यह जीव की पर्याय भी है। ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप, वीर्य एवं उपयोग चेतना को ही सूचित करते हैं। जो जड़ पदार्थ होते हैं उनमें ज्ञान, दर्शन आदि उपलब्ध नहीं होते। चेतना की अभिव्यक्ति संसारी जीवों में इन्द्रिय, शरीर आदि के माध्यम से भी होती है। मुक्त जीवों में शरीर नहीं होता, अतः उनमें चेतना की अभिव्यक्ति ज्ञान, दर्शन एवं उपयोग गुणों से होती है।

चेतना की अभिव्यक्ति के विभिन्न माध्यम हो सकते हैं, यथा-1. दर्शन एवं ज्ञान इन दोनों के व्यापार स्वरूप उपयोग। 2. दशविध प्राण- एकेन्द्रिय जीवों में चार प्राण से लेकर पञ्चेन्द्रिय जीवों में दस प्राण होते हैं। इन प्राणों के माध्यम से चेतना की अभिव्यक्ति होती है। 3. चार अथवा दस प्रकार की आहार आदि संज्ञाओं से भी चेतना की अभिव्यक्ति होती है। 4. इच्छाओं की उत्पत्ति भी चेतना के बिना नहीं होती। 5. क्रोध, मान, माया, लोभ आदि कषाय भी चेतन जीव में ही उपलब्ध होते हैं। 6. मन, वचन एवं काया की प्रवृत्ति स्वरूप योग भी चेतना को प्रकट करता है। 7. सुख एवं दुःख की अनुभूति भी चेतन जीव को ही होती है। अचेतन को सुख-दुःख नहीं होते हैं। 8. आध्यात्मिक मूल्य यथा-क्षमा, मार्दव, आर्जव आदि भी चेतन जीव को ही प्रकट करते हैं। 9. चारित्र भी जीव का लक्षण है। 10. उत्साह, प्रयत्न पुरुषार्थ, पराक्रम जीव में ही होते हैं। 11. अप्रमत्तता चेतना का प्रमुख लक्षण है। 12. आदतों का निर्माण गोत्र कर्म के अनुसार जीव में ही होता है। 13. पारस्परिक सहयोग का भाव जीव का व्यावहारिक

लक्षण है। तत्त्वार्थसूत्र में इसे 'परस्परोपग्रहो जीवानाम्' सूत्र से स्पष्ट व्यक्त किया गया है। इस प्रकार चेतना की अभिव्यक्ति शताधिक माध्यमों से हो सकती है।

यह स्वीकार किया गया है कि यह चेतना मूलतः सभी जीवों में समान होती है, किन्तु उसकी अभिव्यक्ति सब में समान नहीं होती है। उसके अनेक कारण हैं-

1. आठ प्रकार के कर्मों के कारण चेतना पर आवरण आ जाता है या उसकी अभिव्यक्ति में रुकावट उत्पन्न हो जाती है।
2. आध्यात्मिक विकास में भिन्नता के कारण भी जीवों की चेतना की अभिव्यक्ति में भेद पाया जाता है।
3. प्राणों की भिन्नता के कारण भी चेतना की अभिव्यक्ति न्यूनाधिक होती है। दस प्राण वाले जीव में चार, छह, सात, आठ एवं नौ प्राण वाले जीवों की अपेक्षा चेतना अधिक प्रकट होती है।
4. मदिरा, विष, औषधि, अधिक भोजन आदि से भी चेतना प्रभावित होती है।
5. शारीरिक, मानसिक बीमारियों से भी चेतना की अभिव्यक्ति बाधित होती है। स्मृति भ्रंश, लकवा, कोमा (बेहोशी) आदि में यह स्पष्ट देखा जाता है।
6. सामायिक, प्रतिक्रमण, ध्यान आदि की साधना से चेतना की अभिव्यक्ति में परिष्कार देखा जाता है। जागरूकता में अभिवृद्धि अनुभूत होती है।

आठ प्रकार के कर्मों का यदि विचार करें तो ज्ञात होगा कि कर्मों के आवरण या उदय आदि के कारण जीवों की चेतना की अभिव्यक्ति में भेद पाया जाता है। ज्ञानावरणीय कर्म ज्ञानशक्ति को आवरित करता है जिससे प्रत्येक जीव में ज्ञान की अभिव्यक्ति समान रूप से नहीं होती। दर्शनावरणीय कर्म उसकी संवेदन शक्ति

को ढक देता है। वेदनीय कर्म जीव को सुख-दुःख की अनुभूति कराता है। मोहनीयकर्म दो प्रकार का कार्य करता है—यह सत्य को जानने की दृष्टि को मोहित या मूढ़ बना देता है तथा व्यक्ति के आचरण को क्रोधादि कषाय से युक्त रखता है। इसके कारण चेतना का पूर्ण विकास नहीं हो पाता। आयुष्य नामकर्म किसी जीव को नरक, तिर्यञ्च, मनुष्य या देव भव में निश्चित अवधि तक फलभोग कराता है। नामकर्म के कारण गति, जाति, शरीर आदि प्राप्त होते हैं। ये जिस प्रकार के प्राप्त होते हैं उसी के अनुसार चेतना कार्य करती है। यदि किसी जीव को नरक गति प्राप्त हुई है तो वह दुःख का ही अनुभव अधिक करता है।

गोत्रकर्म के कारण हीन एवं उच्च संस्कारों या आदतों का निर्माण होता है और तदनुरूप ही चेतना की अनुभूति होती है। अन्तरायकर्म जीव के दान, लाभ, भोग-उपभोग एवं वीर्य लब्धि को बाधित करता है। उसमें पुरुषाकार पराक्रम प्रकट नहीं हो पाता है।

नामकर्म के अनेक भेद हैं। प्रमुख रूप से इसकी 42 पिण्ड प्रकृतियाँ हैं तथा 93 उत्तर प्रकृतियाँ हैं। ये सभी जीव की चेतना को प्रभावित करती हैं। नरक गति में दुःख की तथा देव गति में सुख की वेदना अधिक होती है। किन्तु ये नरक एवं देव अपनी आत्मा का विकास करने में सक्षम नहीं होते हैं। चतुर्थ गुणस्थान सम्यग्दृष्टि से आगे ये जीव नहीं बढ़ सकते हैं। तिर्यञ्च गति में पाँचों प्रकार की जातियों के जीव होते हैं। कोई मात्र स्पर्शनिन्द्रिय वाला जीव होता है जिसे एकेन्द्रिय कहा गया है। पृथ्वी, अप, तेजस्, वायु एवं वनस्पति के जीव इस श्रेणि में आते हैं। इन्हें मात्र स्पर्शनिन्द्रिय से ज्ञान होता है। उनकी चेतना का इतना ही विकास है। इनमें कुछ जीव बादर होते हैं तथा अधिकांश जीव सूक्ष्म होते हैं। एकेन्द्रिय जीवों में जानने की शक्ति अत्यल्प होती है। वनस्पतिकायिक के तो अनन्त जीव एक शरीर के आश्रित रहते हैं, जिन्हें साधारण वनस्पतिकाय जीव कहा जाता है। इन्हें निगोद जीव भी कहा गया है। उनकी चेतना की क्या दशा होती होगी, इसका मात्र अनुमान लगाया जा सकता है। एकेन्द्रिय जीव में सहिष्णुता के

अतिरिक्त साधना का कोई उपाय नहीं होता है। इनमें स्पर्शनिन्द्रियबलप्राण, कायबलप्राण, श्वासोच्छ्वास एवं आयुष्यबलप्राण—ये चार प्राण होते हैं, जिनसे ये जीते हैं। प्राण का पूर्ण विनाश ही मृत्यु है। द्वीन्द्रिय जीव स्पर्शन के साथ रसना इन्द्रिय से भी जानते हैं। उनमें छह प्राण होते हैं—एकेन्द्रिय से इनमें दो प्राण अधिक होते हैं—रसनेन्द्रिय बल प्राण और वचनबल प्राण। त्रीन्द्रिय जीव में घ्राणेन्द्रिय बढ़ जाती है और इससे सम्बन्धित प्राण की भी अभिवृद्धि होती है। चतुरिन्द्रिय जीव में चक्षु इन्द्रिय का विकास हो जाता है और इससे सम्बन्धित प्राण भी उनमें उपलब्ध होता है। पञ्चेन्द्रिय जीव दो प्रकार के होते हैं—मन वाले और बिना मन वाले। बिना मन वाले पञ्चेन्द्रिय जीवों में श्रोत्रेन्द्रिय का विकास होता है और मन वाले जीवों में मन की भी उपलब्धि होती है। अतः असंज्ञी पञ्चेन्द्रिय जीवों में श्रोत्रेन्द्रिय सहित नौ और संज्ञी जीवों में मनोबल सहित दस प्राण होते हैं। इस प्रकार जानने के साधनों के अनुसार जीवों में चेतना प्रकट होती है। मन वाले जीवों में मनुष्य सर्वोच्च है, क्योंकि वह अपना आत्मिक विकास करके अपनी चेतना को अधिक निर्मल एवं विकसित कर सकता है। तिर्यञ्च गति का जो पञ्चेन्द्रिय जीव है वह मन वाला होकर भी पाँचवें गुणस्थान से आगे नहीं बढ़ता, जबकि मनुष्य केवलज्ञान प्राप्त कर चौदहवें गुणस्थान तक पहुँच सकता है। इस दृष्टि से कहें तो पशु-पक्षियों की अपेक्षा मनुष्य का मन अधिक विकसित है। जैनदर्शन में मस्तिष्क (ब्रेन) की स्वतन्त्र चर्चा नहीं है, किन्तु यह अङ्गोपाङ्ग के अन्तर्गत सम्मिलित हो जाता है। समनस्क पञ्चेन्द्रिय जीवों में ही विकसित मस्तिष्क का स्वरूप उपलब्ध होता है। एकेन्द्रिय आदि जो जीव हैं वे तो केवल मांसपेशियों के आधार पर ही जानते हैं।

नामकर्म के कारण औदारिक, वैक्रिय आदि शरीर प्राप्त होते हैं। ये शरीर भी एकेन्द्रिय आदि जीवों के अनुसार प्राप्त होते हैं। सारे औदारिक शरीर समान रूप से विकसित नहीं होते। इसी प्रकार वैक्रिय शरीरों में भी भेद होता है। आहारक शरीर तो मात्र चौदह पूर्व धारी प्रमत्त संयत को प्राप्त होता है। तेजस एवं कार्मण शरीर

सभी जीवों में होते हैं।

यहाँ पर यह उल्लेखनीय है कि जैनदर्शन के अनुसार चेतना शरीर व्यापी होती है। शरीर का जितना आकार होता है उसी में चेतना व्याप्त हो जाती है। इसे जैनदर्शन में देह परिमाणत्व कहा गया है। नामकर्म ही इस देह परिमाणत्व का कारण विदित होता है। जिस जीव को छोटा-बड़ा जैसा शरीर प्राप्त होता है उसके अनुसार ही उसकी चेतना कार्य करती है।

नामकर्म की सभी प्रकृतियाँ चेतना को प्रभावित करती हैं। संहनन नामकर्म शरीर रचना को सशक्त या निर्बल बनाता है। यह संहनन औदारिक शरीरधारियों में ही होता है। जैनधर्म के अनुसार ब्रजऋषभ नाराच संहनन ऐसी पात्रता है जिसके होने पर ही शुक्लध्यान तक पहुँचा जा सकता है एवं चेतना का पूर्ण प्रादुर्भाव कर केवलज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। दूसरे संहननधारी इस योग्य नहीं होते। संस्थान भी चेतना की अभिव्यक्ति को प्रभावित करता है। समचतुरस्र संस्थान जहाँ केवलज्ञान प्राप्ति के लिए अनिवार्य शारीरिक योग्यता है, वहाँ अन्य हुण्डक आदि संस्थानधारी जीव इस विकास से उस भव में वञ्चित रहते हैं। इसी प्रकार त्रस नामकर्म जहाँ जीव को अपने शरीर के साथ एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने की योग्यता प्रदान करता है वहाँ स्थावर नामकर्म इसे बाधित करता है। सभी एकेन्द्रिय जीव स्थावर नामकर्म से युक्त होते हैं तथा द्वीन्द्रिय से लेकर पञ्चेन्द्रिय तक के जीव त्रस होते हैं। इस प्रकार त्रस एवं स्थावर प्रकृतियाँ भी चेतना के प्रकटीकरण को प्रभावित करती हैं।

पर्याप्त एवं अपर्याप्त नामकर्म भी चेतना की अभिव्यक्ति को प्रभावित करते हैं। अपर्याप्त अवस्था में शरीर, इन्द्रिय, श्वासोच्छ्वास, भाषा एवं मन की रचना पूर्ण नहीं होती, जबकि पर्याप्त अवस्था में इस योग्यता का विकास हो जाता है।

जीन वैज्ञानिकों का मन्तव्य है कि शरीरादि का विकास जीव के आनुवंशिक गुणों (Genes/ chromosomes) के अनुसार होता है। इस सम्बन्ध में जैनदर्शन की ओर से कहा जा सकता है कि जीव जब

गर्भ में आता है तो वह प्रथम भोजन जीन युक्त रज-वीर्य को ही बनाता है, जिसे ओजाहार कहा गया है। उस ओजाहार के आधार पर ही वह सम्पूर्ण शरीर का विकास करता है।

निर्माण नामकर्म शरीर के निर्माण में तथा घाव, चोट आदि लगने पर उसको ठीक करने में सहायक होता है। उपघात नामकर्म जहाँ शरीर के लिए हानिकारक है वहाँ पराघात नामकर्म उसे अनेक बीमारियों से बचाता है। इस प्रकार से यह प्रतिरोधक शक्ति (Immunity power) का विकास करता है।

नामकर्म की एक प्रकृति तीर्थङ्कर नामकर्म है। इस प्रकृति के उदय से कोई जीव अपनी चेतना की अभिव्यक्ति तीर्थङ्कर के रूप में करने में समर्थ होता है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है सिद्धों एवं संसारी जीवों की आत्मा एक जैसी होते हुए भी कर्म आदि विभिन्न बाह्य कारणों के रहते उनकी चेतना की अभिव्यक्ति में भेद रहता है। सिद्धों की आत्मा पूर्ण शुद्ध है, संसारी जीवों की अशुद्ध या आंशिक शुद्ध होने से चेतना का प्रकटीकरण तदनु रूप ही होता है। शुद्धता हमारा लक्ष्य है, चेतना का पूर्ण विकास हमारा लक्ष्य है, किन्तु यह भी सत्य है कि हमारी चेतना वर्तमान में हमारे शरीर आदि एवं कर्मों के प्रभाव के अनुसार कार्य कर रही है। वह इसीलिए योगात्मा, कषायात्मा आदि भी कही जाती है।

शरीर एवं आत्मा एक-क्षेत्रावगाही है, इसलिए शरीर का विकास भी आत्मा के कारण होता है। वही शरीर फिर चेतना के अनुभव का उपकरण भी बन जाता है, जिसकी प्रत्येक कोशिका में चेतना निहित रहती है, इसलिए शरीर में कहीं भी कोई समस्या होती है तो पूरी चेतना को उसका भान होता है एवं पीड़ा का अनुभव होता है।

आत्मा को शरीर से भिन्न समझना आध्यात्मिक दृष्टि है, ताकि चेतना का विकास किया जा सके एवं उसमें निहित अशुद्धियों को दूर किया जा सके। अपनी चेतना का पूर्ण विकास करने वाले प्रभु महावीर को कोटिशः नमन। ■

आगम-वाणी

डॉ. धर्मचन्द जैन

दुपरिच्यया इमे कामा, नो सुजहा अधीर-पुरिसेहिं।
अह संति सुव्वया साहू, जे तरंति अतरं वणिया व॥

-उत्तराध्ययनसूत्र भाग-1, अध्ययन 8, गाथा 6,

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल से प्रकाशित

अर्थ-इन काम-भोगों का त्याग दुष्कर है, अधीर पुरुषों से इनका त्याग होना आसान नहीं है, किन्तु जो निरतिचार व्रतधारी साधु हैं, वे इन दुस्तर कामभोगों को उसी तरह पार कर जाते हैं, जैसे पोतवणिक दुस्तर सागर को।

विवेचन-काम-भोगों का त्याग दुष्कर कहा गया है, क्योंकि जब तक इनके प्रति रुचि का नाश नहीं होता तब तक काम-भोगों का त्याग कठिन है। रुचि तब तक बनी रहती है जब तक उनमें सुख की प्रतीति होती है या वे अच्छे लगते हैं। इनसे प्रतीत होने वाला सुख क्षणिक एवं अस्थायी होता है, वह निरन्तर घटता जाता है एवं अन्तिम परिणाम में पराधीनता एवं दुःख का ही अनुभव होता है। इनमें रही हुई रुचि निरन्तर काम-भोगों की प्राप्ति एवं वृद्धि के लिए परिश्रम कराती है।

हमें यद्यपि जो पाँच इन्द्रियाँ मिली हैं वे जानने के लिए मिली हैं, किन्तु जानते समय जो अनुकूल स्पर्श रस, गन्ध, रूप एवं शब्द का बोध होता है, उसको अच्छा लगने से लगातार जानता चाहते हैं और यही भोग के रूप में परिणत हो जाता है। यह भोग जड़ता, पराधीनता एवं अविवेक की ओर ले जाता है। भोग का रस मदिरा के रस की भाँति बेभान बनाता है, चेतना को जड़ता से आच्छादित कर देता है एवं उस रस की पुनः कामना पराधीनता का अनुभव कराती है। आत्मा में जो विकास का सामर्थ्य है वह भी तिरोहित हो जाता है। मनुष्य विवेक को खो देने पर पतन के मार्ग की ओर चल पड़ता है। भोगों का नशा मदिरा से भी भयानक है। मदिरा की आदत जिस प्रकार सरलता से नहीं छोड़ी जा सकती

उसी प्रकार काम-भोगों की आदत आसानी से नहीं छूटती है।

जो अधीर पुरुष हैं, जिनमें धैर्य नहीं है जो तुरन्त अपनी इच्छाओं एवं वासनाओं की पूर्ति करने में अपने को बाध्य अनुभव करते हैं वे काम-भोगों का त्याग करने में समर्थ नहीं हो पाते हैं। वे अपने विवेक से नहीं, काम-भोगों की रुचि के अनुसार जीते हैं। शरीर के लिए आवश्यक वस्तुओं का सेवन करना त्याज्य नहीं है, उनके सेवन के क्षणिक सुख में आसक्त होना एवं उनकी बार-बार चाहना करना एवं भोग करना त्याज्य है।

काम-भोगों की रुचि का विनाश सम्यग्दृष्टिकोण के विकास एवं सत्य के बोध से ही सम्भव है। जब स्वयं अपने अनुभव के स्तर पर तटस्थ होकर सत्य को जान लिया जाता है कि यह काम-भोग की लिप्सा स्वयं के लिए कितनी घातक है तो उसके प्रति रहा आकर्षण समाप्त होने लगता है। पूर्व संस्कार जो चित्त पर अंकित हैं, या वे कर्म के उदय रूप में आते हैं, उन्हें सम्यग्ज्ञान पूर्वक व्रत के आचरण एवं समता के द्वारा समाप्त किया जा सकता है। इसीलिए कहा कि जो सम्यक् प्रकार से व्रतों या महाव्रतों का आचरण करते हैं वे साधु उन कामभोगों की लिप्सा को तैर जाते हैं। उनकी लिप्सा दुर्बल पड़कर समाप्त हो जाती है।

साधु-जीवन स्वीकार कर लेने पर भी पाँच इन्द्रियों एवं मन के द्वारा विषय-सेवन की प्रवृत्ति पूर्णतः विराम नहीं पाती है। स्वादिष्ट भोजन, अनुकूल आवास, अनुकूल श्रावक-श्राविकाओं का आकर्षण बना रह सकता है। इस आकर्षण को भी सम्यग्दृष्टिकोण, सत्य के बोध एवं सजगतापूर्वक व्रताचरण से मिटाया जा सकता है। साधु का जीवन आत्म-विजय का जीवन है, पाँचों इन्द्रियों के विषयों पर विजय का जीवन है। वे इन विषयों को जीतकर संसार समुद्र को पार कर लेते हैं।

जीवन-निर्माण के सूत्र

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म. सा.

- ❧ महापुरुष अपनी जगहितकारी प्रवृत्तियों और कल्याण कामना से स्वयं याद आते हैं, वे याद कराये नहीं जाते।
- ❧ त्यागी होने पर भी जब तक साधु छद्मस्थ है- आहार, विहार और सङ्ग का प्रभाव होता ही है।
- ❧ गुरु और गुणीजनों की सेवा, बाल-जन का सङ्ग-त्याग, स्वाध्याय और एकान्त चिन्तन भाव-निर्माण के साधन हैं।
- ❧ सद्भावों की लहरें कई बार आती हैं, परन्तु अनुकूल सङ्ग और वातावरण के बिना टिकती नहीं।
- ❧ जिसने सदाचार का पालन नहीं किया वह साहसी और निर्भय नहीं रह सकता।
- ❧ शासन एवं धर्म-रक्षण का कार्य केवल साधुओं का ही समझना भूल है, साधु की तरह श्रावक संघ का भी उतना ही दायित्व है।
- ❧ श्रावक-श्राविकाओं के द्वारा स्वाध्याय अध्यात्मबल से पुष्ट होना चाहिए।
- ❧ जरा-सा भी कोई सामाजिक कार्य में चूका कि लोग उसकी अच्छाइयाँ भूलकर निन्दा करने लग जाते हैं। सामाजिक-जीवन का यह दूषण है।
- ❧ सद्दृष्टि के अभाव में शास्त्र शस्त्र बन जाता है।
- ❧ लोभ-मोह पर जिसका अंकुश है वह स्व-पर का हित कर सकता है।
- ❧ सैकड़ों आदमी आपके सम्पर्क में आते हैं। यदि व्यवहार के साथ अहिंसा, निर्व्यसनता आदि का प्रचार करें तो अच्छा काम हो सकता है।
- ❧ साधक महिमा-पूजा और सत्कार को भी परीषह मानता है। उसमें प्रसन्न होना, फूलना एवं अहंकार करना अपनी कमाई को गँवाना है।
- ❧ संघ का कर्तव्य गुणीजन का आदर करना है।
- ❧ गुणप्रेमी अपना कर्तव्य समझकर सत्कार-सम्मान करे या गुणानुवाद करे, परन्तु साधक को उसमें निर्लेप रहना चाहिए।
- ❧ गृहस्थ चाहे पूर्ण पाप या आरम्भ परिग्रह का त्यागी नहीं है, फिर भी उसका लक्ष्य पाप घटाने का होना चाहिए।
- ❧ वीतरागवाणी का यह महत्त्व है कि वह सुख-दुःख के कारणों को समझाकर प्राणी को कुमार्ग से बचाती एवं सुमार्ग में जोड़ती है।
- ❧ जो मन में कुछ और रखता है तथा बोलता कुछ और है, वह धर्म का अधिकारी नहीं होता।
- ❧ मनमाना या इच्छानुकूल नहीं चलकर स्व-आत्मा के नियन्त्रण में चलना ही स्वतन्त्रता है।
- ❧ गुरु से कपट करने वाला शिष्य शिक्षा के अयोग्य होता है।
- ❧ कामी सौन्दर्य में कृत्रिमता करता है।
- ❧ यदि एक विद्वान् सही अर्थ में धर्मारोधन से जुड़ जाता है तो वह अनेक भाई-बहनों के लिए प्रेरणा का स्तम्भ बन जाता है।
- ❧ असंयम दुःख और संयम सुख का कारण है।
- ❧ प्रतिदिन सामायिक का अभ्यास विषमभाव को घटाकर मन में समभाव की सरिता बहाने वाला है।
- ❧ महर्षियों ने धर्म का सार तीन बातों में कहा है-1. आत्मा को वश में करो, 2. पर-आत्मा को अपने समान समझो और 3. परमात्मा का भजन करो।
- ❧ शरीर में आँख की चूक से कभी पैर में काँटा लग जाय, तो क्या पैर आँख का भरोसा नहीं करेगा? समाज में ऐसा ही सम्प हो तो अशान्ति नहीं होगी।

- 'नमो पुरिसवरगंधहृत्पीणं' ग्रन्थ से साभार

जानें तप का स्वरूप

परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा.

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के द्वारा सुराणा मार्केट स्थित सामायिक-स्वाध्याय भवन, पाली में तप क्या है, तप कौन कर सकता है, तप के कितने भेद हैं, तप को षट् कार्य में क्यों रखा? विषय पर 8 सितम्बर 2010 को फरमाए प्रवचन का आशुलेखन सह-सम्पादक श्री नौरतनमलजी मेहता, जोधपुर ने किया है।

-सम्पादक

नाणेण जाणइ भावे, दंसणेण य सद्वहे।
चरित्तेण निगिण्हाइ, तवेण परिसुज्झइ॥

-उत्तराध्ययनसूत्र, 28/35

तप की अग्नि में कर्म के ईन्धन को जलाकर कृत-कृत्य होने वाले सिद्ध भगवन्त, इच्छा-निरोध कर अनन्तज्ञानी-अनन्तदर्शनी बनने वाले अरिहन्त भगवन्त तथा कर्मों को तपाने के लिए तप की साधना करने वाले 'तवे सूरु अणगारा' सन्त भगवन्तों के चरणों में कोटि-कोटि वन्दन!

तीर्थंकर भगवान महावीर की आदेय-अनमोल वाणी उत्तराध्ययनसूत्र के 'मोक्ष-मार्ग' अध्ययन में ज्ञान से जानकारी कर, दर्शन से विश्वास जमाकर, चारित्र में चरण बढ़ाकर, कुपथ से अलग हटाने वाले तप की महिमा बताई जा रही है। प्राचीन सन्त भगवन्त कहा करते थे- 'आमलक अनमोल औषधि है।' आँवला औषधि है, जो घुटने के दर्द को और वायु विकार को दूर करती है। आँवला फायदा करता है, कब? जब पथ्य रखे। आँवला खाने वाला अगर इमली खाता है तो घुटने का दर्द कम होने के बजाय बढ़ जाता है, घुटनों में सूजन आ जाती है। आँवले के सेवन में पथ्य जरूरी है। शास्त्रकारों ने कहा-

पथ्ये सति गदार्थस्य, किमौषध-निसेवनं।

पथ्येऽसति गदार्थस्य, किमौषध-निसेवनं॥

कहते हैं-अगर कोई पथ्य का पालन करता है तो उसे औषधि लेने की जरूरत नहीं है। धीरे-धीरे पथ्य के साथ बीमारी दूर होती चली जाएगी। एक है, जो औषधि तो ले रहा है, लेकिन पथ्य का पालन नहीं कर रहा तो

औषधि बीमारी दूर करने वाली नहीं होगी। औषधि के साथ पथ्य का पालन जरूरी है।

मोक्ष-मार्ग में जानना, मानना और चलना जरूरी है। जानने के रूप में ज्ञान है, मानने के रूप में श्रद्धा, चलने के रूप में चारित्र और पथ्य के रूप में तप कहा जा रहा है।

आपने शायद सुना होगा-रसायन क्रिया से ज़हरीले पारे को मकरध्वज वटी के रूप में बदल कर ताकत देने वाला पदार्थ बनाया जा सकता है। वैज्ञानिक मिट्टी के कणों से अणु-परमाणु जैसा ताकतवर बम बना सकते हैं। पानी को गर्म करते-करते भाप में बदलकर, उस भाप से हजारों टन वजन खींचकर इञ्जन के सहारे माल एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचाया जाता है। ऐसे कई उदाहरण रखे जा सकते हैं। मैं रसायन-भौतिक-वैज्ञानिक तथ्यों के बजाय तप की शक्ति, तप की ताकत बताना चाहता हूँ कि तप कैसे सञ्चित कर्मों को जला-बलाकर आत्मा को परमात्मा बना देता है?

तप की परिभाषा की गई- 'तप्यन्ते अष्टकर्माणि अनेनेति तपः।' जिससे आठों कर्म तपाए जाते हैं, वह तप है। हमारी-आपकी लड़ाई शरीर से नहीं, हमारी लड़ाई खाने के पदार्थों से भी नहीं है। हमारा विरोध है आसक्ति से। तप करके भी खाने की आसक्ति बढ़ती है, तो वह तप, तप के रूप में नहीं कहला सकता।

तप क्या? जैसे अग्नि सोने में रहे मैल को दूर करती है, हंस की चोंच दूध से पानी को अलग करती है इसी तरह तप आत्मा से कर्मों के मैल को दूर करता है। मैं तप की सरल परिभाषा करूँ तो कहना होगा-

इच्छानिरोधस्तपः। इच्छाओं का निरोध करना तप है।

इच्छा अलग है, आवश्यकता अलग। इच्छा और आवश्यकता में आकाश-पाताल का अन्तर है। आवश्यकता अनिवार्य होती है जबकि इच्छा जरूरी नहीं, भटकाने वाली है। आप छोटी-सी बात याद रखें - इच्छा का निरोध तप है। तप की दूसरी परिभाषा में कहूँ - हमारी हर सद्प्रवृत्ति तप है। सद्प्रवृत्ति आत्मा की ओर ले जाने वाली है, विभाव से हटाने वाली है, पाप से मुक्त करने वाली प्रवृत्ति तप में शुमार है। इसमें विनय भी है, तो सेवा भी है। इसमें स्वाध्याय भी है, तो ध्यान भी। कायोत्सर्ग भी सद्प्रवृत्ति है। ये सब सद्प्रवृत्ति में शुमार हैं।

अनशन तप है, ऊनोदरी तप है, रस परित्याग तप है, भिक्षाचरी तप है। जो-जो भी सद्प्रवृत्तियाँ हैं, वे सब तप हैं। तप हर कोई कर सकता है। आदमी चाहे छोटा हो या बड़ा, अमीर हो या गरीब, हर व्यक्ति कोई-न-कोई तप कर सकता है। आप इस भ्रान्ति में मत रहना कि हम तप नहीं कर सकते। हर व्यक्ति तप कर सकता है एवं करना चाहिए। शास्त्रकारों ने सद्गृहस्थ के लिए षट् कर्म आवश्यक बताये हैं। षट् कर्म में तप भी है।

शरीर को स्वस्थ रखने के लिए भी षट्-कर्म करने पड़ते हैं, आत्म-शुद्धि के लिए भी हर गृहस्थ को प्रतिदिन छह कर्म करणीय बताए हैं, उनमें तप भी एक कर्म है।

अब प्रश्न आता है-तप रोज कैसे करें? प्रायःकर अधिकतर लोग उपवास, बेलें और तेलों को तप कहते हैं। प्रतिदिन उपवास तो नहीं हो सकता। उपवास तो शक्ति के अनुसार होता है। तप करने वाले हैं जो एक-एक दिन बढ़ाते-बढ़ाते छह मासी तप कर सकते हैं, पर उपवास ही तप नहीं है, खाना भी तप हो सकता है।

मुझे एक दृष्टान्त याद आ रहा है। द्वारिका के बाहर यमुना नदी के तीर पर दुर्वासा ऋषि का पधारना हुआ। वे ऋषि तो थे, पर भोजनभट्ट भी थे। उनकी खुराक ज्यादा थी। खुराक ज्यादा थी तो उनमें तेजोलश्या भी थी। एक बार नदी में पानी अधिक आ गया। दुर्वासा

ऋषि के लिए भोजन गोपियाँ लेकर आतीं। गोपियाँ नित्य भोजन लातीं, लेकिन आज नदी में पानी का वेग ज्यादा होने से नदी पार पहुँचना मुश्किल हो रहा था। नदी में तेज बहाव है, उसे पार करके भोजन दुर्वासा ऋषि तक पहुँचाया नहीं जा सकता। आस-पास नाव भी नहीं थी। भोजन कैसे पहुँचाया जाय, इसकी चिन्ता गोपियों को थी। वे सोच रही थीं कि देर होने पर दुर्वासा ऋषि का क्रोध भड़क सकता है। ऐसी स्थिति में गोपियों की चिन्ता स्वाभाविक थी। अब करें तो क्या करें?

गोपियों को हैरान-पेशान देखकर श्री कृष्ण ने एक युक्ति बताई। तुम नदी के किनारे जाकर कहो-हे नदी! यदि दुर्वासा ऋषि तपस्वी हैं तो हमें रास्ता दो। गोपियों के ऐसा कहने पर यमुना नदी ने रास्ता दे दिया। गोपियों ने नदी पार पहुँच कर दुर्वासा ऋषि को भोजन दे दिया। गोपियाँ जितना भोजन लाईं, वह दुर्वासा ऋषि ने पूरा खा लिया। गोपियों ने मन-ही-मन सोचा कि इतना भोजन करने वाला तपस्वी कैसे? खैर.... भोजन कराने के बाद गोपियों को घर लौटना था, पर नदी पार कैसे करें? इसलिए उन्होंने ऋषि से पूछ लिया कि हम यह नदी कैसे पार करें?

दुर्वासा ऋषि ने कहा-तुम नदी से कहो कि श्री कृष्ण यदि ब्रह्मचारी हैं तो हमें रास्ता दे दो। गोपियों ने ऐसा ही कहा और यमुना नदी ने रास्ता दे दिया। गोपियाँ विचार मग्न हो गईं कि श्री कृष्ण जिनके सोलह हजार रानियाँ हैं, वह ब्रह्मचारी कैसे? गोपियों का सोचते-सोचते दिमाग चकराने लगा कि दुर्वासा ऋषि इतना खाता है तो वह तपस्वी कैसे और श्री कृष्ण के इतनी रानियाँ हैं तो वह ब्रह्मचारी कैसे?

ये सवाल गोपियों के मन में थे तो क्या आपके चिन्तन में ये प्रश्न हैं या नहीं? आपमें से कई सोचते होंगे कि दुर्वासा तपस्वी कैसे और श्री कृष्ण ब्रह्मचारी कैसे? बात यह है कि न तो दुर्वासा ऋषि को इतना खाते हुए भी आसक्ति थी और न श्री कृष्ण के इतनी रानियाँ होते हुए भी वह भोग-भोगने में आसक्त थे।

आपने रावण का नाम सुना होगा। रावण के अठारह हजार रानियाँ थीं फिर भी वह आसक्ति के कारण भटक गया। रावण के भटकाने में आसक्ति ही कारण रहा। रावण भटक गया, इसीलिए तो वह आज तक जलाया जाता है।

मैं फिर कहूँ-इच्छानिरोधस्तपः। इच्छा का निरोध तप है। इच्छा किसी की न पूरी हुई, न होगी। जबकि आवश्यकता सबकी पूरी होती है चाहे वह राजा हो या रंक। मारवाड़ी कहावत है-हाथी को मण और कीड़ी को कण। पेट भरने की जरूरत पूरी हो सकती है, पर पेट भरने की इच्छा कभी पूरी नहीं होती। चाहना कहां, आकांक्षा कहां, एक ही बात है।

एक सेठ जी थे। उनका व्यापार ऊन का था। ऊन खरीदने के लिए वे खेतों-जंगलों तक चले जाते। किसान प्रायः कांदा-रोटी खाकर मस्त रहता है, जबकि सेठ कई तरह के व्यञ्जन खाकर भी सन्तुष्ट नहीं होता। सेठजी जंगल में ऊन खरीदने गये, लेकिन वहाँ देरी हो गई। उन्हें भूख लगी तो देखा किसान कांदा-रोटी बड़े चाव से खा रहा है। सेठ जी अपने घर पर तो माल खाते। कभी रसमलाई तो कभी मिश्री मावा। भूख में आदमी जो मिलता है, खाता है। खाना हमारी आवश्यकता है, पर मुझे मीठा खाना है, नमकीन खाना है, यह अच्छा है, ये सब इच्छाएँ हैं। खाने की तरह पानी की आवश्यकता तो पूरी हो सकती है लेकिन मुझे रेफ्रिजरेटर का पानी पीना है, शर्बत पीना है, ठण्डाई और कोकोकोला पीना है तो ये सब इच्छाएँ हैं। तन ढकने के लिए वस्त्र चाहिए यह आवश्यकता है, पर मुझे जीन्स चाहिए, मुझे सोने के तार वाली साड़ी चाहिए ये आसक्ति है, इच्छाएँ हैं। आवश्यकता पूरी होती है इच्छाएँ कभी किसी की पूरी हुई नहीं, होगी भी नहीं।

तप क्या? इच्छा का निरोध तप है। जिस जगह, जिस समय जो मिल जाय उसे भगवान का प्रसाद मानकर आवश्यकता-पूर्ति कर लें। इच्छा की पूर्ति किसी की हुई नहीं, होती नहीं। इच्छा करने वाला खुद तो दुःखी रहता

ही है, दूसरों को भी दुःख पहुँचाता है।

शरीर है तो खाना पड़ेगा। खाना जरूरत है, लेकिन विपरीत खाना, विशेष खाना यह विकृति है। जो खाना स्वाद के लिए खाया जाय वह स्वास्थ्य के लिए प्रतिकूल हो सकता है। किसी को शुगर है वह यदि मीठा खाने का कहे या खाए तो शुगर बढ़नी ही है। होते हैं कई जो मीठा खाते हैं, मीठे के बिना रञ्जते नहीं। स्वाद के कारण आग्रह में आकर विपरीत खाना विकृति है। कहा भी है-‘विपरीतं अशनं व्यसनम्, विशेष अशनं व्यसनम्।’

विशेष क्या? विपरीत क्या? जो खाने लायक नहीं, वह व्यसन है। पीढ़ी-दर-पीढ़ी शाकाहारी भोजन करते-करते न जाने कितनी पीढ़ियाँ, कितने वंश, कितनी परम्पराएँ पूरी हो गईं, पर आज क्या? आज क्या-क्या खाया जा रहा है? मैं नहीं कहूँ, आप मन-ही-मन विश्लेषण करना।

विपरीत खाना कर्म-बन्धन का कारण है। विपरीत खान-पान, स्वास्थ्य बिगाड़ने वाला है। घर-परिवार की प्रतिष्ठा धूमिल करने वाला है। छोटे-बड़े सबमें असन्तोष बढ़ाने वाला है। आप विपरीत खान-पान छोड़िये।

तप की सरल परिभाषा है-इच्छाओं का निरोध। अवस्था के साथ कदाचित् आप तप नहीं कर सकते या जिनकी रुग्णता है, बीमारी है वे तप न करें तो जो भाणे में आ रहा है उसे अमृत समझकर खा लें, यह भी तप है। बात-बात में तुनकना, थाली फेंकना ठीक नहीं। क्रोध करना यह पाप है। जो भी खाने को मिल जाय, उसे खीर-खाण्ड समझकर, प्रसाद मानकर ग्रहण करना भी तप है। उड़द के बाकुले भी खीर-खाण्ड का भोजन समझकर खा लेंगे, तो वह पच जाएगा।

आप जितनी-जितनी इच्छाओं का निरोध कर सकते हैं, उतना-उतना तप है। आप देखादेखी तप मत करना। होड़ा-होड़ी गोड़े फोड़ने से क्या मिलने वाला है? आप कर सकें तो अनशन आदि जो भी तप कर

सकते हैं, करें, पर देखादेखी तप नहीं हो। तप हो तो भावना से। पुरुषार्थ से तप करें, उसमें कोई बाधा नहीं है।

तप करने वाले पहले थे, आज भी हैं। लम्बी तपश्चर्याएँ पहले चलती थी, आज भी चलती हैं। स्थूलिभद्र के समय सन्त चार-चार माह की तपस्या करते थे। कोई शेर की गुफा पर तो कोई वेश्या के यहाँ चौमासा करके चार माह तप में निकाल देते। आज भी तप करने वाले हैं। इचरजबाई लुणावत ने पाँच माह के चातुर्मास में एक सौ पच्चीस दिन की तपस्या की। परिवार वालों ने पारणे का पूछा, तो कह दिया गुरुदेव (आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमलजी महाराज) पधारेंगे तब पारणा करूँगी। उस तपस्वी बहन ने 165 दिन की तपस्या की।

चेनरूपचन्द जी बाफणा की धर्मपत्नी प्रकाश देवीजी ने चैन्नई चातुर्मास में कहा-“बाबजी! मुझे मास खमण करना है।” मासखमण पश्चात् भी साता होने से पारणक की मन में नहीं आई। बहिन ने पाँच-पाँच की तपस्या बढ़ाते-बढ़ाते एक सौ इक्कीस उपवास कर लिए। मात्र गर्म पानी के आधार पर पूरे चातुर्मास तक तप-साधना करके आदर्श उपस्थित किया।

भूख से लड़ना सबके बस की बात नहीं है। भाई से लड़ना सरल है, दुकान पर ग्राहक से लड़ाई हो सकती है, और-और लोगों से लड़ाई की जा सकती है, पर रोटियों से लड़ना सहज नहीं है। अनशन तप है तो ऊनोदरी को भी भगवान ने तप कहा है। ऊनोदरी क्या? ऊनोदरी का मतलब है-खाने में कुछ कम खाना। भगवान ने कहा है-अप्पकोहे अप्पमाणे अप्पसद्दे अप्पझंझे।

कहाँ बोलना-कहाँ नहीं बोलना, इसको भी कुछ समझने की जरूरत है। कहीं-कोई आपे से बाहर आकर बोलता ही बोलता है, वहाँ बिना मतलब नहीं बोलना चाहिए। आवश्यकता के बिना नहीं बोलना भी ऊनोदरी तप है। जहाँ दो लोगों के बीच बोलचाल हो रही हो वहाँ नहीं जाना चाहिए। दो जने लड़े वहाँ अलग रह सको तो

ठीक है। कई छुड़ाने जाते हैं। लड़ाई में छुड़ाने वाले पर भी कभी-कभी एक हाथ पड़ जाता है।

आपके पहनने के लिए पहले से कई ड्रेसें हैं कोई नया कपड़ा देखा नहीं कि सिलाने को तैयार हो जाते हैं। इस इच्छा के कारण कर्म-बन्ध क्यों करना? हम गोचरी जाते हैं। एक घर में गोचरी के लिए जाने का प्रसङ्ग बना। वह शादी का घर था। वहाँ देखा-एक पर एक सन्दूकें रखी हुई हैं और हर सन्दूक में साड़ियाँ भरी हैं। बहिन के पास इतनी साड़ियाँ हैं कि पहनने का नम्बर तक नहीं आता। वह बाई बोली-“यहाँ असूझता कुछ भी नहीं है। यहाँ तो मेरी ड्रेसें हैं। इतनी ड्रेसें होने पर भी नई डिजाइन देखी नहीं कि लेने का मन हो जाता है! आज रात को सोने की अलग ड्रेस है तो रसोई के काम के लिए अलग। कहीं बाहर जाना होता है तो ड्रेस चेंज। शादी-विवाह में जाने के लिए दूसरी ड्रेस है तो क्या सामायिक के लिए भी ड्रेस है क्या? सामायिक की ड्रेस नहीं, इसलिए बाबू साहब पेंट पहने-पहने सामायिक कर रहे हैं। बाबू साहब के पास सामायिक के वस्त्र नहीं, बाकी सब ड्रेसे हैं। मैं आपको दिगम्बर की तरह रहने की बात नहीं कह रहा हूँ। आप वस्त्रों की मर्यादा कर सकते हैं। हाँ, कोई ड्रेस फट गई तो नई बनवाने में रुकावट नहीं है। कभी किसी की ड्रेस चोरी हो जाय तो उसकी पूर्ति नई बनवाकर की जा सकती है।

आवश्यकता जितनी कम रहेगी उतनी आसक्ति भी कम होगी। ज्यादा आसक्ति से ज्यादा कर्म-बंध होंगे ही। आज तो रंग-रंगीली साड़ियाँ हैं, वैसी ही चूड़ियाँ, वैसी बिन्दी और वैसे ही रंग की चप्पल।

मुझे यहाँ जंवरीलालजी पारख का नाम याद आ रहा है। वे उस जमाने के सी.ए. थे, गोल्ड मेडलिस्ट थे, लेकिन खाने-पीने, पहनने-ओढ़ने और काम की सभी चीजों की मर्यादा थी। वे द्रव्यों की मर्यादा भी रखते। उन्होंने स्वयं ने बताया-बाबजी! मेरी बेटी के पास छत्तीस तरह की मेचिंग के जूते हैं। आज घर-घर में मेचिंग का रोग लगा हुआ है।

मैं ऊनोदरी की बात कह रहा हूँ। जितने-जितने पदार्थ अधिक होंगे उतनी-उतनी आसक्ति भी अधिक होगी। मैं आसक्ति की क्या बात कहूँ, कुछ तो ऐसे भाई हैं जो व्याख्यान में तो बैठे हैं, उनका ध्यान अपने जूतों पर है। कोई ले न जाय। बहिनों की आसक्ति तो और ज्यादा होती है। कुछ बहिनें थैली में चप्पल डालकर आसन के नीचे रखती हैं ताकि खोने का डर न रहे।

आप तप कीजिये। अनशन हो तो अनशन करें नहीं तो ऊनोदरी करें, रस-परित्याग करें। रस-परित्याग का मतलब है-स्वादवृत्ति कम कीजिए। जो मिला है समभाव से कर्म निर्जरा का कारण मानकर खाने की भावना रखिये। सद् गृहस्थ आपका स्वधर्म भाई है, वह ज़हर देने वाला नहीं है। असावधानी से खाने के पदार्थ में कभी कोई विपरीतता आ भी जाय तो आप उस समय भी इच्छा का निरोध करके तप कर सकते हैं।

भगवान महावीर ने पाँच महीने पच्चीस दिन की तपस्या में उड़ के बाकुले से पारणक किया। धन्ना अनगार गोचरी में कैसा आहार लाते थे, आपने सुन रखा है। जिह्वा वश में, तो रस की आसक्ति कम होगी ही। एक रसना को जीतने वाला अन्य-अन्य इन्द्रियों को सरलता से जीत सकता है। आपका रस-परित्याग तप है तो हमारा भिक्षाचरी। खाने में कई चीजें आ सकती हैं, सबका स्वाद मत लीजिए। रस-परित्याग भी तप है, लेकिन आज प्रायः अधिकतर लोगों का ध्यान इधर कम जाता है। हर कोई चाहता है-मुझे झरझरता मिले। सब्जी भी लेगा तो रंगदार चाहिए।

रस-परित्याग तप है तो कायक्लेश भी तप है।

आप जितने समय तक एक आसन पर बैठ सकते हैं, तो बैठने का अभ्यास करें। आसन की दृढ़ता भी तप है। यह अभ्यास करने से आता है। अनुभवियों ने तो यहाँ तक कहा कि आहार, आसन और निद्रा दृढ़ हैं तो वह लम्बा आयुष्य और नीरोगता प्राप्त करेगा।

तप भी दो प्रकार के हैं। एक बाह्य तप है तो एक आभ्यन्तर। विनय, सेवा, स्वाध्याय, ध्यान कायोत्सर्ग ये सब तप हैं। आप जिस किसी तप को करना चाहें, करें। तप प्रतिदिन किया जा सकता है, करना चाहिए। तप मुश्किल भी नहीं है। सद्प्रवृत्ति तप है तो शुभ योग भी तप है। तप कर्म काटने की अचूक रामबाण औषधि है। आप निश्चित मानिये-तप के बिना किसी का मोक्ष हुआ नहीं, होगा नहीं। अनशन से ही मुक्ति होती तो गजसुकुमाल की मुक्ति कैसे हुई? गजसुकुमाल न तो गोचरी गए, न भूमि पर सोए और न ही उग्र विहार ही किया। जिस दिन दीक्षा ली, उसी दिन मुक्ति प्राप्त कर ली। उनका तप ध्यान आदि रहा।

आप प्रतिदिन तप कर सकते हैं। आप विनय करें। सन्त-सतीवृन्द का आदर-सम्मान करना भी तप है। तप के बारह भेद हैं। आपकी जिस तप में रुचि हो, उसे करें। कर्म-क्षय करने के लिए तप जरूरी है। तप में और निर्जरा में अन्तर नहीं है। आप इच्छा के अनुसार चलने के बजाय आवश्यकता-पूर्ति के लिए प्रयास करें, आपका स्वतः तप हो जाएगा। तप सञ्चित कर्मों को खपाने और मुक्ति मिलाने का मार्ग है, इसलिए आप नित्य प्रति कोई-न-कोई तप करें। इच्छा का निरोध हर पल-हर क्षण किया जा सकता है।

पर की आस

श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म. सर.

पर की आस में, निराशा का वास है।

जो रखे परायी आस, वह पुद्गल का दास है।।

पौद्गलिक सुख के पीछे मत बन पागल,

अब तो लगा दे पाप के कार्यों के आगल।।

तन धन परिजन, सब है पराया,

तुझे अपना आत्मा क्यों नहीं मन भाया।।

निज में ही दूँढ़ निज का सहारा,

मिट जायेगा तेरा दुःख द्वन्द्व सारा।।

-संकलनकर्त्ता-श्री धर्मचन्दजी जैन,

रजिस्ट्रार-अ. भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक

शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

समाधि में रहना आ जाए

महान् अर्धवसायी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा.

रत्नसंघ के ज्येष्ठ और श्रेष्ठ सन्तरत्न श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. सरलतम लोकभाषा में प्रवचन करते हैं। मुनिश्री के प्रवचन जैन-जैनेतर आबाल-वृद्ध सभी बड़े श्रद्धाभाव एवं चाव से सुनते हैं। कहावतों-मुहावरों के साथ मारवाड़ी शब्दों से मुनिश्री विषय का प्रतिपादन करते हैं। मुनिश्री ने जोधपुर के दिग्विजय नगर में 11 अप्रैल, 2018 जन समुदाय को हर स्थिति-परिस्थिति में समाधिस्थ रहने के उद्देश्य से समाधि के कारणों पर प्रकाश डाला है। प्रवचन का आशुलेखन एवं सम्पादन श्री नीरतनमल मेहता, जोधपुर ने किया है।

-सम्पादक

बन्धुओं!

आप और हम भाग्यशाली हैं कि हमें आचार्य भगवन्त (पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा.) की अनन्त कृपा से श्रुतवाणी का स्वाध्याय करने और सुनाने का सुअवसर प्राप्त हुआ है। भगवान की वाणी हमारी आधि-व्याधि-उपाधि का हरण कर समाधि में सञ्चरण कराती है। आगमकारों ने समाधि का वर्णन किया है।

आप-हम-सब समाधि चाहते हैं, पर समाधि है क्या? समाधि के कितने प्रकार होते हैं? आगमकारों ने विषय-वस्तु का विस्तृत विवेचन किया है। मैं सारी बातें थोड़े समय में नहीं रख सकता तो भी समाधि कितने प्रकार की होती है, रखने का प्रयास करूँगा।

समाधि चार प्रकार की होती है। यह चार कारणों से प्राप्त की जा सकती है। समाधि प्राप्त करने के चार कारण कौनसे हैं?

बन्धुओं! आर्य शयम्भव ने समाधि के चार कारण बताए हैं। पहला है-विनय-समाधि, दूसरा-श्रुत-समाधि, तीसरा-तप-समाधि और चौथा कारण है-आचार-समाधि।

आगे बढ़ें। आप आधि-व्याधि चाहते हैं या समाधि?

(सभा में से) हम समाधि चाहते हैं।

ठीक है, आप ही क्या, संसार का कोई भी

जीव न आधि चाहता है, न व्याधि। सब जीव समाधि चाहते हैं।

आप-सब समाधि चाहते हैं, समाधि बनी रहे इसकी बात भी करते हैं, पर कहने से या मन की चाहना से समाधि मिलने वाली नहीं है। आगमकारों का कथन है-“हमने जैसे कर्म किए हैं, वैसे ही फल मिलने वाले हैं।” मतलब क्या? समाधि कहने से नहीं आती। समाधि मिलती है करणी करने से। आपने कई बार सुना है, सुना ही क्यों, कहा भी है “जैसा बोओगे वैसा काटोगे।” ‘कर भला तो हो भला।’ ‘करणी का फल सबको भोगना ही पड़ता है।’ जिसके भाणे में रूखा-सूखा आता है वह उसकी करणी का फल है और जिसके भाणे में सात पकवान आते हैं वह भी उसकी करणी का ही फल है। जिणरे राबड़ी लिखियोड़ी है उणने रबड़ी नी मिले। मेरी बात आप अच्छी तरह से समझ गए होंगे फिर भी मैं एक दृष्टान्त के माध्यम से समझाना चाहता हूँ।

एक किसान था। वह गाँव में रहता था। आज तो हम नगर में हैं। नगर भी कौनसा? यह तो दिग्विजय नगर है। मैं जरा आपसे सवाल करूँ-दिग्विजय कहते किसे हैं?

आप उत्तर नहीं दे रहे हैं। मैं आगे बढ़ूँ-शास्त्र में भरत चक्रवर्ती की साधना का वर्णन आता है। भरत चक्रवर्ती को छह खण्ड साधने में और

दिग्विजय मिलाने में साठ हजार वर्ष लगे। चार-पाँच दिन में दिग्विजय होने वाला नहीं है। मैं आपकी नहीं, हमारी बात कह रहा हूँ। मेरे से तो दिग्विजय होने वाला नहीं है। यहाँ के निवासी तो मच्छरों से पूरी तरह विजय नहीं पा सकते तो फिर दिग्विजय ?

आप आचार्य भगवन्त को रोकने के लिए सब तैयार हो जाएँगे, पर संवर-साधना करने के लिए कितने तैयार हैं? हाँ, वीर पिता इन्द्रचन्दजी गाँधी, आचार्य भगवन्त जब से जोधपुर पधारे हैं, रोज संवर-साधना में रहते हैं। वीर पिताश्री तो विहार में साथ चलते हैं, फिर संवर भी करते हैं। आप यदि दस-पन्द्रह संवर-साधक तैयार हो जाओ तो मच्छरों का प्रकोप उतना नहीं रह पाएगा क्यों तो वे बँट जाएँगे।

हाँ, तो अपनी बात चल रही थी-वह किसान गाँव में रहता था। उसे खाने के लिए रोज राबड़ी मिलती। वह भी रोज-रोज राबड़ी खाता और मस्त रहता। राबड़ी शरीर के लिए फायदा करती है।

एक दिन उस किसान को आगरा से उसकी बहिन का बुलावा आया। बहिन ने कहलवाया-भाई! बहुत समय हो गया, आप एक बार तो आगरा आओ ही।

भाई ने भी सोचा-बहिन बुला रही है तो आगरा चलना चाहिए। किसान मन-ही-मन सोच रहा था कि आगरा जाने पर तो उसे खीर-खाण्ड का भोजन मिलेगा। आगरा के पेटे बड़े मशहूर हैं, वे तो खाने को मिलेंगे ही।

किसान भाई आगरा जाने के लिए रवाना हुआ। वह चलते-चलते सोचता भी है कि बहिन ने बुलाया तो वहाँ रबड़ी-खीर खाने को जरूर मिलेगी। किसान राबड़ी की जगह रबड़ी खाने की सोच रहा है तो उधर बहिन की सोच में कि मेरा भाई रोज राबड़ी खाता है, उसे राबड़ी पसन्द है तो मैं क्यों

नहीं उसकी पसन्द का भोजन तैयार करूँ। बहिन अपने भाई की पसन्द का भोजन तैयार करना चाहती है। बहिन ने भाई के लिए राबड़ी बना दी।

किसान भोजन करने बैठा तो भाणे में रोज की तरह राबड़ी आई। अब क्या करता? उसने राबड़ी खाई। आप दृष्टान्त से क्या समझे? जिणरे भाग में लिखियोडी है, वा चीज खावणने मिले। भाई की कल्पना मिष्टान्न खाने की थी, लेकिन भाग्य में जो लिखा है वही तो मिलता है।

हमारा विषय समाधि को लेकर चल रहा था। आप समाधि चाहते हैं तो आपको भी समाधि की चार बातें जाननी होंगी, समझनी होगी। विनय समाधि के लिए ज्ञानी कहते हैं-जैसे विनय गुण आता जाएगा, वह व्यक्ति समाधि को प्राप्त करता जाएगा। विनयवान में नम्रता होगी, लघुता रहेगी। वह अहंकार से दूर रहेगा। जहाँ अहंकार है, वहाँ समाधि नहीं रह सकती। अहंकारी हर समय मैं-मैं करता है। जो मैं-मैं करता है वह समाधि से कोसों दूर रहता है। आपने कहावत सुनी होगी-

बकरी मैं-मैं करत है, नित उठ गलो कटाय।

मैं ना, मैं ना करती मैंना, नित उठ मेवा खाय।।

बकरी जब भी बोलती है-मैं-मैं करती है। जो मैं-मैं करती है उसे गला कटाना पड़ता है। एक होती है-मैंना। मैंना बोलती है तो वह मैं.... ना, मैं ना कहती है इसीलिए उसे खाने को मेवा-मिष्टान्न मिलता है।

आपको क्या करना? कई ऐसे होते हैं जो दूसरों को ठगते हैं। दूसरों को ठगने वाला खुद नहीं ठगता। मुझे एक दृष्टान्त याद आ रहा है। एक सेठ जी थे। वे बड़े होशियार थे। एक बार रेलगाडी में सफ़र कर रहे थे कि उनके डिब्बे में दो ठग आ गए। ठगों ने देखा, सेठ जी अकेले हैं। इनके पास माल भी जरूर होगा। चलो, आज इनको ठगते हैं।

ठग दो थे, सेठजी एक। बात-चीत हुई। ठगों

ने सेठजी से कहा-हम आपस में प्रश्नोत्तर करेंगे। यदि प्रश्न पूछने वाले को उत्तर नहीं आया तो सामने वाले को कुछ देना होगा।

ठगों ने सेठजी से और सेठ ने ठगों से बातचीत करके तय कर लिया कि प्रश्न का उत्तर नहीं आने पर शर्त के अनुसार हर्जाना भरना पड़ेगा।

सेठ ने कहा-भाई, तुम दो हो और मैं अकेला। प्रश्न और उत्तर में कोई-न-कोई शर्त तो होनी ही चाहिए।

ठग खुश हुए। बोले-हमें शर्त मञ्जूर है।

सेठ ने कहा-भाई, मैं कोई प्रश्न पूछूँगा और उसका जवाब नहीं आया तो तुम्हें मुझे दस रुपये देने होंगे।

ठगों ने कहा-हमें शर्त मञ्जूर है।

सेठ ने कहा-देखो भाई, तुम तो दो हो मैं अकेला, इसलिए मैं आधा ही दूँगा। तुम प्रश्न उत्तर नहीं दे सके तो तुम्हें दस रुपये देने होंगे और यदि मैं जवाब न दे सका तो मैं अकेला हूँ इसलिए पाँच रुपये ही दूँगा।

सेठजी ने आगे कहा-भाई, तुम दो हो मैं अकेला, इसलिए पहला प्रश्न मैं पूछूँगा।

ठगों ने हाँ कर दी।

सेठ ने प्रश्न किया-ऐसा कौनसा जानवर है जो एक ही जगह रहता है और वह न उड़ता है, न सोता है और न ही जागता है?

ठगों को वैसे जानवर का नाम याद नहीं आया।

सेठजी बोले-तुम्हें उत्तर नहीं आता तो लाओ दस रुपये।

ठगों ने दस रुपये निकाल कर सेठजी को दे दिए। फिर कहा-अब, आप उत्तर बताओ?

सेठ बोला-मुझे भी प्रश्न का उत्तर नहीं आता। शर्त के अनुसार सेठजी ने पाँच रुपये का नोट निकाला और कहा-लो, शर्त के अनुसार ये तुम्हारा।

आप दृष्टान्त बड़े चाव से सुन रहे हैं, पर आप ऐसी होशियारी मत करना। क्यों तो जो अहंकारी होता है वह समाधिस्थ नहीं हो सकता।

आप-हम भाग्यशाली हैं, क्योंकि गुरुदेव हमारी हर जिज्ञासा का समाधान देते हैं। आप पूज्य गुरुदेव से प्रश्न करें, आपको समाधान मिलेगा। गुरुदेव हर स्थिति-परिस्थिति में समाधिस्थ रहते हैं अतः हमारी जिज्ञासाओं का पूज्यश्री समाधान देते हैं।

आप-सब घर गृहस्थी चलाते हैं, इसलिए आपको अनुभव है कि घर कैसे चलाया जाता है? आपको अपना एक घर सम्भालना मुश्किल हो रहा है तो संघनायक पूरे संघ को कैसे सम्भालते हैं?

आज पुराने जमाने की बात नहीं रही। समय और परिस्थिति के साथ बदलाव आया है, बदलाव आता ही जा रहा है। एक समय था जब एक-एक घर में कई-कई सदस्य रहते थे। आज हम दो-हमारे दो। अब तो इस बात में भी बदलाव आ रहा है-हम दो, हमारे एक। जब यह स्थिति है तब भी समस्याएँ कम नहीं हो रही है। एक-एक घर और एक-एक परिवार में आज क्या हालत है?

घर में पिता-पुत्र तो हैं, लेकिन पुत्र शहर में रहता है, पिता गाँव में। पिता सुख में है या दुःख में पुत्र न पूछता है, न बोलता है तो? लड़का होकर भी पिता की सेवा न करे तो वह किस काम का? आज भाई से भाई दूर है। आपस में बनती नहीं। जब पिता-पुत्र और भाई-भाई में अनबन है तो फिर यह धन-वैभव किस काम का?

बाहर जय-जयकार और घर में हा-हाकार तो उस घर की स्थिति कैसी होगी? घर में दो बहुएँ हैं। सासू किससे कहे, बड़ी बहू को कहे तो छोटी नाराज़ और छोटी को कहे तो बड़ी नाराज़। जब घर-घर में ऐसा वातावरण है तो आप सोचें संघनायक चतुर्विध संघ को कैसे सम्भालते हैं?

आचार्यश्री हीरा ने 27 साल तक अपने गुरुदेव आचार्यश्री हस्ती का विनय किया, आप देख रहे हैं 27 वर्षों से गुरुदेव कैसे संघ का सञ्चालन कर रहे हैं?

समाधि में जिन चार कारणों का उल्लेख है उनमें विनय समाधि पहला कारण है। श्रुत समाधि, तप समाधि और आचार समाधि वाले गुरुदेव के चरणों में जिज्ञासाएँ रखते हैं और समाधान पाते हैं।

गणधर गौतम स्वामी चार ज्ञान के धनी थे,

चौदह पूर्वों के ज्ञाता और चौदह हजार शिष्यों के प्रमुख, वे भी भगवान के चरणों में जिज्ञासाएँ रखते। आप आचार्य भगवन्त के चरणों में अपने-अपने क्षेत्रों की विनतियाँ रख रहे हैं आप विनति रखें, प्रश्नोत्तर करें, जिज्ञासाओं का समाधान पाएँ, पर जब तक आधि-व्याधि का अन्त नहीं होगा तब तक समाधि प्राप्त नहीं हो सकती। आप समाधि प्राप्त करें इसी मंगल मनीषा के साथ.....।

सृष्टि की जैन मान्यता

डॉ. पी. सी. जैन

सृष्टि के बारे में अनेक मान्यताएँ हैं। कुछ के अनुसार सृष्टि का आदि है। कुछ इसे अनादि अनन्त मानते हैं। कुछ के अनुसार सृष्टि का कोई निर्माता है। कुछ इसे स्वाभाविक मानते हैं। इसकी उत्पत्ति मानने वालों की अवधारणाएँ भी एक जैसी नहीं हैं। जैनदर्शन में सृष्टि के लिए लोक शब्द का प्रयोग अधिक हुआ है। जैनदर्शन उसे परिणामी नित्य मानता है। नित्य का अर्थ है शाश्वत और परिमाणी का अर्थ है परिणामन-शीलता या परिवर्तन धर्मिता। इस लोक का कोई कर्ता नहीं है। इसका आदि नहीं है, अन्त भी नहीं है। यह शाश्वत है, पर इसके पर्यायों का परिवर्तन होता रहता है।

लोक का मूलभूत आधार है आकाश। आकाश लोक तक सीमित नहीं है। यह लोक के बाहर भी है। उसे अलोकाकाश कहा जाता है। लोक-अलोक की यह अवधारणा सम्भवतः जैनदर्शन के अतिरिक्त कहीं नहीं है। अलोकाकाश असीम है, अनन्त है। उसमें किसी जीव या पुद्गल की गति-स्थिति नहीं हो सकती। जो आकाश लोक का हिस्सा है, उसमें जीव हैं, पुद्गल हैं, काल और जीव पुद्गल की गति एवं स्थिति में सहायक तत्त्व धर्मास्तिकाय और अधर्मास्तिकाय है।

इस लोक में जीव और पुद्गल की अवस्थिति आठ प्रकार की बताई है-

आकाश स्व प्रतिष्ठित होता है। उसे किसी

आधार की अपेक्षा नहीं रहती। वायु आकाश पर प्रतिष्ठित है। उसके दो रूप होते हैं-तनुवात और घनवात। आकाश पर तनुवात है और उस पर घनवात है। वायु पर समुद्र प्रतिष्ठित है। समुद्र भी सघन है, ठोस है। समुद्र पर पृथ्वी प्रतिष्ठित है। पृथ्वी पर त्रस और स्थावर सभी प्रकार के प्राणी रहते हैं। लोक स्थिति के ये चार प्रकार हवा और पानी से भरे हुए मशक के उदाहरण से समझे जा सकते हैं।

लोकस्थिति के अन्य चार प्रकारों का वर्णन अग्राङ्कित है-अजीव जीव प्रतिष्ठित है। अजीव तत्त्व के जितने रूप हैं, जितने दृश्य परिवर्तन और परिणामन हैं, वे जीव द्वारा कृत हैं। जो कुछ दिखाई देता है, वह जीव शरीर है अथवा जीवमुक्त शरीर है।

जीव का जितना नानात्व है, वह कर्म पर आधारित है। इस दृष्टि से जीव को कर्म-प्रतिष्ठित माना गया है।

अजीव-जीव संगृहीत है। जीव-अजीव का ग्रहण कर उसमें एक अपेक्षा से तादात्म्य स्थापित कर लेता है। इस कारण अजीव में परिवर्तन होता रहता है।

जीव कर्म संगृहीत होते हैं। कर्मों का जीव के साथ सम्बन्ध होने से ही जीव की नाना अवस्थाएँ होती हैं। इन आठ प्रकारों को जानने वाला लोक के स्वरूप को सम्यक् प्रकार से जान सकता है।

-निदेशक, सरस्वती उच्च स्तरीय अध्ययन अनुसन्धान संस्थान, बी 417, प्रधान मार्ग, मालवीय नगर, जयपुर-302017 (राज)

पुण्य-प्रकाश (2)

तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा.

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के आज्ञानुवर्ती तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. द्वारा प्रस्तुत रचना का 13 जून, 2020 को महासती श्री दिव्यप्रभाजी म.सा. द्वारा महावीर नगर जयपुर में दिव्यवाणी में गान किया गया, जिसका संकलन श्रीमती सुनीताजी डागा ने किया है। पार्श्वनाथ जयन्ती, सन् 2020 में रचित यह काव्य हरिगीतिका छन्द में है तथा इसमें पुण्य की महत्ता का प्रतिपादन किया गया है।

-सम्पादक

योजन हजार से कुछ अधिक, अरविन्द की अवगाहना।
पुद्गल विपाकी वपु लही, उत्कृष्टता है पावना।।
त्रिकाली ध्रुव को मानते, उत्पाद व्यय ठुकरावते।
परिणामी नित्यका प्रभुवचन, अपलापवोही करावते।।55।।
द्वय तत्त्व जीव अजीव तो, बस ज्ञेय हैं श्रद्धेय हैं।
पाप आस्रव बन्ध तीनों, साधना में हेय हैं।।
मोक्ष फल है धर्म का, संवर व निर्जरा धर्म है।
पुण्य मुक्ति मार्ग में सहकारी देशना मर्म है।।56।।
मरुभूति-भव उस जीव को, यह मर्म उद्घाटित हुआ।
पूर्व पुण्य खुटाने से, तिर्यंच गति भावित हुआ।।
वैर दुष्परिणाम तज, शुभ योग को विकसाइए।
मिथ्यात्व तीव्र कषाय से, निज आत्मा को बचाइए।।57।।
नवतत्त्व पहले जानना, फिर हेय को छिटकावना।
पुण्यवर्धन करने, संवर समाधि पावना।।
निर्जरा बस काम की, सम्यक्त्व गुण के साथ में।
पुण्य अधिकाधिक रहा, दृष्टि सही के साथ में।।58।।
पुद्गल जनित उपकार से, गति जाति काया भेद है।
अष्टविध है वर्गणा, अरु कर्म अष्टम भेद है।।
कर्म आठ प्रकार का, घाति चतुः व अघाति में।
घाति चारों पाप हैं, पुण्य पाप होता अघाति में।।59।।
मुक्ति मारग पुण्य बिन, कोई कभी पाता नहीं।
हीन पुण्य जो जीव हैं, संवर उन्हें भाता नहीं।।
मुक्ति सहायक पुण्य को, जो पाप लख छिटकाता है।
योग मन वच काय से, वो पाप को ही बढ़ाता है।।60।।

नाव के दृष्टान्त से हैं, छोड़ते जो पुण्य को।
तट पर पहुँचना बाकी है, तज देते हैं जो नाव को।।
डूबते मँझधार में, नहीं विज्ञ माने जाते हैं।
पुण्य बिन ना धर्म है भव-जलधि गोते खाते हैं।।61।।
यह सत्य पार्श्व के जीव ने, मरुभूति भव में पाया था।
इस सत्य पर विश्वास दृढ़, पोतनपुरी प्रकटाया था।।
भाई के दुष्कर्म वश, ठुकराया जब इस तथ्य को।
गिरपापहाथी बनसम्भल, अपनायाहितमितपथ्यको।।62।।
जीव आत्मगुणों को तो, नहीं कर्म पूरा दबाता है।
आत्मगुण के प्रभाव से, कुछ-कुछ तो पुण्य कमाता है।।
अन्तर्मुहूर्त से अधिक ना, पाप में रह पाता है।
कतिपय प्रकृति पुण्य की, प्रतिपल ही जीव बँधाता है।।63।।
उपयोग पूरा जीव का, आवृत्त कभी होता नहीं।
पुण्य अल्प प्रभाव से, तनु बन्ध भी होता सही।।
काय पुण्य-सहाय से, नर जन्म तक वर्धाता है।
नव पुण्य का अधिकार तो, तब ही समुचित पाता है।।64।।
प्राप्त कर संयोग जो, उपयोग अच्छा ना करे।
मन्दमति सद्गति को तज, दुर्गति व दुर्मति को बरे।।
उपयोग दुष्ट तो पुण्य ना, वह पाप आस्रव बन्ध है।
पुण्य सद्उपयोग है, नहीं पाप से सम्बन्ध है।।65।।
दण्ड तीनों दण्ड से, दण्डित हुआ यह जीव है।
दण्ड में जब जब कमी पुण्यवर्धक जीव है।।
नर देव बनकर पुण्य से, नहीं भोग में ललचाता है।
पाप से दुर्गति को पा नहीं दोष पर पे लगाता है।।66।।

दुःख में दोष के त्याग से, हितकारी भावना भाता है।
 सुख में सबकी सेवा से, आसक्ति दूर कराता है॥
 उदित होता अस्त में, दूजा तो अस्ताचल वरे।
 अस्त होता उदय कर, चौथा उदित आगे बढ़े॥67॥

प्रथम पूर्व के पाप या, फिर पुण्य का सूचन करे।
 कुयोग या शुभ योग को, पद दूसरा सूचन करे॥
 स्पष्ट है प्रभु वाणी में, ना पुण्य कुछ भी बिगाड़ता।
 संवर व निर्जरा धर्म में, बस पुण्य ही पहुँचावता॥68॥

हरिकेशी के दृष्टान्त से, सम्यक् समझ में आया है।
 मानव का तन संहनन, प्रथम पञ्चेन्द्री पुण्य सवाया है॥
 जाति कुल बल रूप श्रुत, नहीं लाभ भी अनुकूल था।
 सहज संवर साधना, पुरुषार्थ तप भरपूर था॥69॥

उदित हो चक्री बने, भरतादि वर्णन देख लो।
 पुण्य में पुरुषार्थ कर, मुक्ति-वरण की सीख लो॥
 पुण्य पाप कराता है मिथ्या प्ररूपण जो करे।
 जिनवाणी को ठुकराते हैं, संसार में दुःख को वरे॥70॥

पाँच लघु अक्षर अधिक, बिन योग इस संसार में।
 जीव रह सकता नहीं, प्रभु वाणी है विस्तार में॥
 शुभ योग केवल जब रहे, उस वीतरागी भाव में।
 कैवल्य प्रकटेगा तभी, घाति चतुष्क अभाव में॥71॥

शुभ योग आस्रव में कहा, तस मर्म को पहचानिए।
 तत्त्वार्थ अध्ययन षष्ठ है, सम्यक् समझ विकसाइए॥
 धर्म दशविध गाया है, संवर में जिसको गिनाया है।
 भाव शुभ आराधना शुभ योग आस्रव भाया है॥72॥

शुभ योग होता कभी नहीं, संक्लेशमय परिणाम में।
 मिथ्यात्व और कषाय के, बढ़ते हुए परिणाम में॥
 हानि कषाय की होती है, शुद्धि तो बढ़ती जाती है।
 घटना कषाय का पुण्य है, वो शुभ्रता प्रकटाती है॥73॥

उपयोग शुद्धि ज्ञान है, विपरीतता अज्ञान है।
 मिथ्यात्व तम पैदा करे, दुःख की वही तो खान है॥
 सम्बन्ध होता कषाय से, सावद्य योग कहाता है।
 लेश्या अशुद्धि कर वह, बस पाप नाम धराता है॥74॥

सद्धा परम है दुल्लहा, सन्देह इसमें है नहीं।
 शुभ योग बिन श्रद्धा प्रकट, त्रिकाल हो सकती नहीं॥
 हाथी के भव शुभ योग से, समकित पुनः प्रकटित हुई।
 उपयोग शुद्धि समत्व में, घड़ियाँ सफल सर्जित हुई॥75॥

पाप मानव भव हुआ, हस्ती ने समता से सहा।
 सम्यक्त्व की आराधना, शुभ योग पावन तब रहा॥
 देव वैमानिक बना, महायश व ऋद्धि पाई है।
 निन्दा करे देवत्व की, महामोह कर्म बँधाई है॥76॥

संयम सुलभ जब तक रहे, समकित सुलभता गई है।
 तीर्थ के विच्छेद में, समकित कठिन ही बताई है॥
 काल पञ्चम आरे में, दोनों की संगति गई है।
 प्रभु वाणी की सच्चाई को, ग्रन्थों में खोल दिखाई है॥77॥

मरुभूति-भव में हार कर, गजपति ने भाव को संवारा है।
 आत्म श्रद्धा भाव से, सम्यक्त्व दृढ़ता धारा है॥
 समकित में आयु बाँधता, दुर्गति से छुट्टी पावता।
 देव वैमानिक तथा, मानव गति ही जावता॥78॥

आयु सहित शुभ भाव से, वह पुण्य को विकासावता।
 महाऋद्धि यश मिलती उसे, नहीं उसमें वह अटकावता॥
 पुण्य उत्तम भाव से, दस बोल नरगति में लहे।
 आराधना अरु साधना, स्वर्गों में भी समता लहे॥79॥

स्वर्ग समता भाव से, चारों ही मध्यम भव कहे।
 उपसर्ग मृत्यु कमठ का, शान्ति समाधि सङ्ग सहे॥
 अनुभाग बढ़ता पुण्य का, समकित का गुण प्रकटावता।
 पाप का अनुभाग भी, प्रतिपल ही घटता जावता॥80॥

अनुभाग बढ़ता पुण्य का, तो पाप घटता जावता।
 घट बढ़ सरीखा जो कहे, भ्रमणा में फँसता जावता॥
 प्रतिपक्षी कहते वीर तो, ठाणांग दूजे ठाणे में।
 वीर वाणी है सही, शुभयोग समकित पाने में॥81॥

संवर के सारे भेद ही, शुभ योग की अनिवार्यता।
 निर्जरा हो सकाम भी, जब पाप तजते जावता॥
 सामग्री उत्तम पाता है, पाकर के पीठ दिखावता।
 संयम-समाधि-भाव से, शुद्धि सदा विकासावता॥82॥

परमेष्ठी उत्तम चार में, प्रभु ने कहे शुभयोग हैं।
 पूर्व पुण्य उदय बिना, नहीं चार पद का जोग है।
 धन-सम्पदा को पाने में, पुनवानी को जो मानते।
 धन-सम्पदा के त्याग में, अति पुण्य वो सरसावते।।83।।
 रोटी मिली मनभावनी, यह पूर्व सुकृत को कहे।
 साधु श्रावक धर्मी सङ्ग, श्रद्धा से त्यागी को लहे।
 विधि द्रव्य दाता पात्र की, शुद्धि की महिमा गाई है।
 अनुकम्पा-भाव से दीन को, देना सदा सुखदाई है।।84।।
 वस्त्र-पानी-औषधि, शय्या उपाश्रय देता है।
 सेवा करे बिन स्वार्थ से, सत्पुण्य लावा लेता है।
 भाव शुद्धि होने से, शुभ योग अच्छा ही कहा।
 त्रय गुप्ति संवर भेद में, शुभ योग अच्छा ही रहा।।85।।
 सुवर्ण बाहु विदेह का, चक्री बना भव आठवें।
 पुण्य-अर्जन शुभ रहा, जो त्यागी ऋद्धि चाव से।
 हाथी के भव के बाद से, सुपुण्य बढ़ता ही गया।
 संवर व निर्जरा साथ में, शुभ योग बढ़ता ही गया।।86।।
 शुभ योग संवर निर्जरा, अरु साधना-आराधना।
 आस्रव अशुभ हटता गया, जिननाम कर्म निकाचना।
 राग बदला त्याग में, अरु द्वेष गलता ही गया।
 मैत्री मुदिता करुणता, माध्यस्थ बढ़ता ही गया।।87।।
 जिननाम कर्म के बन्ध से, शुभ योग बढ़ता ही गया।
 अन्तर्मुहूर्त से अधिक, सीमा समय चढ़ता गया।
 आस्रव अशुभ कम तो हुआ, पर पूरा छूट ना पाया है।
 कैवल्य प्रकटेगा तभी, छुटकारा पूरा पाया है।।88।।
 कर्म बाकी हैं अभी, वे पूर्व सञ्चित पाप के।
 पुद्गल प्रतिक्षण आ रहा, उस योग के परिमाण से।
 समकित सहायक भावना, शुभ भाव वर्धाती सदा।
 उपयोग-शुद्धि साथ में शुभ योग वर्धाती सदा।।89।।
 आगम-सुधा का पान कर, उत्सूत्र विष को निकालिए।
 शुद्धि हो उपयोग की, और योग शुभ प्रकटाइए।
 काय वच मन गुप्ति में, संवर व निर्जरा मानते।
 प्रणिधान सुन्दर तीनों का, शुभ योग पावन जानते।।90।।

वीतरागी भाव में, शुभ योग हितकारी रहा।
 सह योग जब तक केवली, शुभ योग सुखकारी रहा।
 नववर्ष आयु में लहे, जो जीव इस गुणठाण को।
 शुभ योग पूर्व करोड़ तक प्रतिपल बढ़ावे ज्ञान को।।91।।
 जब तक उदय है कषाय का, होती रहे परिवर्तना।
 योग दोनों प्रकार का, अनुक्रम करे तब वर्तना।
 कलुषित कषाय को काटकर, गुण बारहवें में आता है।
 शुभ योग एकला जब रहे, कैवल्य को प्रकटाता है।।92।।
 सत्य मन व्यवहार मन, प्रभु ने कहे कैवल्य में।
 प्रश्न पूछते देव भी, उत्तर मिले नैर्मल्य में।
 देशना उपदेश में, शिष्यों के हित में प्रेरणा।
 वचन सत् व्यवहार का, जिनराज भाषित देशना।।93।।
 शुभ वचन मन योग तो, कुछ काल तक ही होता है।
 शुभ काया का व्यवहार तो, प्रतिपल वहाँ पे रहता है।
 राग-द्वेष की क्षीणता, बस दो समय का बन्ध है।
 साता वेदनी मात्र का, रहता वहाँ सम्बन्ध है।।94।।
 पार्श्व प्रभु के जीव ने, इस सत्य को पहचाना था।
 शुभ योग उत्तम भाव से छह, खण्ड को ठुकराया था।
 धर्म संवर निर्जरा संग, पुण्य अतिशायी रहा।
 समभाव परीषह मरण का, भव आठवें भी सुसहा।।95।।
 देवाङ्गना के भोग को, संयम का फल जो मानते।
 छद्मस्थ साधु साधना, संयम की निन्दा करावते।
 जिनमार्ग की विपरीतता, भ्रमणा को ही फैलावते।
 संसार सागर तरणिका, संयम को वो छिटकावते।।96।।
 शृङ्खलाएँ वैर की, भ्राता के चित्त में दृढ़ रही।
 उपसर्ग वध का तीव्रतम, इतिहास गाथा कह रही।
 मरुभूति भव की विराधना, आराधना आगे सही।
 कर्ज पूरा करने को, समता सरलता है सही।।97।।
 बस पाप आस्रव बन्ध का, परिणाम दुःखदायी रहा।
 शुभ भाव समता-योग से, वहाँ पुण्य सुखदायी रहा।
 धर्म संवर निर्जरा, सुपुण्य को वर्धाते हैं।
 मुक्तिपुरी के मार्ग में, वे पुण्य साथ निभाते हैं।।98।।

आत्मा को जानना, यह पुण्य की तो बात है।
आत्मा को मानना, यह पुण्य की सौगात है।।
रमणता स्वभाव में, बिन पुण्य हो पाती नहीं।
शुद्धता निज भाव की, बिन पुण्य प्रकटाती नहीं।।99।।
पार्श्व प्रभु संयम लिया, शुभ भाव के परिणाम से।
कर्म चारों काट के शुभ योग के व्यापार में।।

उन ही प्रभु के गान करके, तत्त्व कीन्ही विचारणा।
गुरुदेव पूर्ण कृपा रही सत् तत्त्व कीन्ही प्ररूपणा।।100।।
निष्कामता निर्वैरता, निर्भयता समता-भाव हो।
मुदिता अनुपम प्रकट हो, रस आत्मा का स्राव हो।।
पुण्य पूर्व प्रभाव से, गुरुदेव का शरणा मिला।
संवर व निर्जरा साधना, पुण्य अधिकाधिक खिला।।101।।

सफलता या सरसता

श्रीमती अंशु संजय सुराणा

मन की तरङ्गे कुछ बयां करती हैं,
बुद्धि की होती कुछ अलग आवाज
सफलता और सरसता में से क्या हो ?
जीवन जीने का अन्दाज़।
ज़िन्दगी के उच्च स्तर को, मापने का पैमाना
आखिर हमने, सफलता को ही तो है माना।
पद, पैसा, प्रतिष्ठा को पाना ही तो है
ज़िन्दगी का मुकाम
इसी एक लालसा में तो होती,
अपनी मित्रों! सुबह से शाम
सफल बनने की धुन में, न कभी चित्त को दिया विश्राम
बस एक ही चिन्तन चला निरन्तर,
कैसे हो जग में मेरा नाम ?
तीर्थपति ने करके करुणा, दिया तीर्थ में,
हमें भी स्थान
पर सफल होने की होड़ में
हम भूल गए अपनी पहचान
कौन हूँ मैं ? कहाँ से आया ?
क्या करना था असली काम ?
भौतिक सुख की लिप्सा में हमने,
मोक्ष सुखों को दिया विराम।
ऐसी भौतिकता के चक्कर में हमसे,
आत्मीयजन दूर हो जाते हैं

फिर जीवन को एक पड़ाव पर,
हम केवल पछताते हैं।
विपुल साधनों से घिरे हैं फिर भी,
खुद को अकेला पाते हैं
पर साधक आत्मा तो सरसता से
सफलता का मार्ग बनाते हैं।
जिस सफलता को पाने में,
बचपन और यौवन पीछे छूटा
फिर इसके अवयवों को ढोने में,
बुढ़ापे ने हमको लूटा
मनुज जीवन के अनमोल समय का,
दे दिया व्यर्थ बलिदान
मनुज जीवन के अनमोल समय का,
दे दिया व्यर्थ बलिदान
गुरु कृपा से अब समझ में आया,
ये तो सपना ही था झूठा
जीवन सच में वही सफल,
परिपूर्ण जिसमें बसे सरसता।
जहाँ देख दुःखीजनों को,
अनुकम्पित नैनों से मेघ बरसता
गुणी जनों के दर्शन पाकर,
हृदय खुशातिरेक से वहाँ हरसता
सरस हृदय वाला ही आखिर,
स्वाद सफलता का है चखता।

-एस 149, महावीर नगर, टॉक रोड, जयपुर-

छिद्रान्वेषी ना बण

आचार्य श्री विजयरजजी म.सा.

गुरु केवे चेला ने-छिद्रान्वेषी ना बण!

चेलो पूछे गरु ने-क्यँ गुरुदेव ?

गुरु केवे - "कर्मा रो परिणाम समझ!"

चिन्तन

छिद्रान्वेषण का अर्थ है-छिद्र देखना, छिद्रों की खोज करना। छिद्रान्वेषण का अर्थ है-किसी में रहे दुर्गुण, कमियाँ, कमज़ोरियाँ, आर-पार दिखने जैसी स्थिति।

छिद्र देखते हैं-चोर अथवा दुश्मन । चोर यह देखता है कि घर में कमज़ोर जगह कौन-सी है? कमज़ोर दीवार का पता लगते ही वे दीवार तोड़कर सेन्ध लगा लेते हैं। खिड़की, दरवाज़े, रोशनदान, आर-पार होने से दीवार जितने ठोस नहीं होते हैं, अतः प्रायः चोर इनके स्क्रू खोलकर या सलाखें काटकर भीतर प्रवेश कर जाते हैं।

दुश्मन भी भीतर प्रवेश करने के लिए छिद्र देखते हैं अर्थात् राजा की कमज़ोरियाँ देखते हैं, फिर हमला करते हैं।

छिद्रों का होना भी अच्छा नहीं और छिद्रों को देखना भी अच्छा नहीं। नाव में छिद्र हो जाए तो नाव सागर में डूब जाती है, टंकी या मटकी में छिद्र हो जाए तो पानी रिस-रिस कर सारा बह जाता है। लकड़ी में घुन लग जाता है तो वह लकड़ी को छेद-छेदकर उसे भीतर से खोखला और कमज़ोर कर देता है, अतः छिद्र का होना भी अच्छा नहीं छिद्र का देखना और दिखते रहना भी अच्छा नहीं है।

कहीं छिद्र होते हैं और कहीं छिद्र बनाए जाते हैं। अंग्रेजों ने भारत की एकता में छिद्र करने का तरीका यह अपनाया कि-‘फूट डालो और राज करो।’ फूट डालने से वे भारत की एकता तोड़कर भारत में बने रहने में

सफल हो गए। छिद्र नहीं थे तो बना लिए। सशक्त भारत में ‘फूट’ के हथौड़े मार-मारकर कमज़ोर कर दिया।

छिद्र देखना और छिद्र करना राग और द्वेषबुद्धि का कार्य है, गुणबुद्धि का नहीं। राग-बुद्धि अपनों के छिद्र ढकती है और कोई छिद्र दिख भी जाए तो उसे देखकर अनदेखा कर देती है, मगर दूसरों के छिद्र तो देखती ही है अर्थात् राग-बुद्धि सिर्फ़ जिनसे राग है उन्हीं के छिद्र नहीं देखती है, बल्कि सभी के देखती है और द्वेष-बुद्धि भी सभी के दोष देखती है। राग और द्वेष-बुद्धि दो अलग-अलग बुद्धियाँ नहीं हैं। एक ही बुद्धि के दो पार्ट हैं, एक ही सिक्के के दो पहलू हैं।

राग कभी-भी द्वेष में बदल जाता है और द्वेष कभी-भी राग में बदल जाता है। अगर हम दूसरों के दोष देखते हैं तो हम भी किसी दृष्टि से चोर हैं, क्योंकि प्रश्नव्याकरणसूत्र में प्रभु महावीर ने सिर्फ़ उसे ही चोर नहीं कहा है जो किसी का धन-माल लूटता है, बल्कि उसे भी चोर कहा है जो दूसरों के दोष देखता है, पर निंदा करता है, विकथा कहता है, अतः प्रभु की दृष्टि में छिद्र देखना भी चोरी है। किसी के दोष देखने, उनके प्रचार-प्रसार करने, उनकी निंदा-विकथा करने में अचौर्य महाव्रत भङ्ग होता है। इसे अदत्तादान आस्रव रूप माना है, अतः कर्मों के आवागमन का महाद्वार है छिद्रान्वेषण रूप चौर्य कर्म।

जो द्वेष भाव रखता है, वही सच्चे अर्थों में दुश्मन कहलाता है, भले ही वह दुश्मन मित्र के वेश में हो या रिश्तेदार के वेश में, पारिवारिक सदस्य हो या शिष्य या गुरु। सच्चा दुश्मन कोई अन्य इन्सान या पशु नहीं है बल्कि बुद्धि, मन एवं आत्मा में रहा हुआ द्वेष है।

द्वेषग्रस्त मानव हर बुरा कार्य कर गुजरता है, व्यक्ति की कमज़ोरियाँ देखकर उनका दुष्प्रचार करना,

उन्हें गिराना, उनके नुकसान में प्रसन्न होना दुश्मन का कार्य है।

जब-जब भी व्यक्ति द्वेष के भावों में रत रहता है, वह दुश्मन बना रहता है। सिर्फ दुष्प्रचार करना, उन्हें गिराना, उनके नुकसान में प्रसन्न होना दुश्मन का कार्य है।

जब-जब भी व्यक्ति द्वेष के भावों में रत रहता है, वह दुश्मन बना रहता है। सिर्फ दूसरों का ही नहीं, अपने आपका भी, क्योंकि राग और द्वेष दोनों हमारी ही आत्मा के शत्रु हैं, हम जब-जब राग-द्वेष करते हैं, अपने आपसे शत्रुता करते हैं। दूसरों के शत्रु तो बाद में बनते हैं, पहले स्वयं के शत्रु बनते हैं, अतः हमें अपने आपसे भी दुश्मनी त्यागनी है तो द्वेष-भाव को त्यागें, दोष-दृष्टि को त्यागें।

द्वेष के अनेक अङ्गों में से एक अङ्ग है-दोष-दर्शन। जैसे कैंसर की गाँठ से नई-नई गाँठें बनने वाली होती हैं तो उनसे नई-नई जड़ें फूटकर वह और अधिक फैल जाती हैं, इसी प्रकार द्वेष रूपी कैंसर की गाँठ से दोष देखना, ईर्ष्या रखना, निंदा-विकथा करना, मारना, पीटना, युद्ध करना, कलह करना आदि उसभी भिन्न-भिन्न जड़ें हैं। हमें यदि दोष-दृष्टि रूप कैंसर की जड़ों को बढ़ने से रोकना है तो मन में रहे द्वेष को समूल नष्ट करना होगा।

संसार में जीव को जितना राग रुलाता है, उतना ही द्वेष भी रुलाता है। जन्म-मरण की जितनी वृद्धि राग

से होती है, उतनी ही द्वेष भी होती है। क्रोध और मान तो द्वेष के ही अङ्ग हैं। नरक और मनुष्य गति क्रोध और मान संज्ञा का परिणाम फल है। दोनों का जीवन विस्तार है।

माया और लोभ राग के अङ्ग हैं। तिर्यञ्च गति और देवगति में माया और लोभ का ही विस्तार है। वहाँ राग की मात्रा अधिक होती है। सच्चा गुणान्वेषण राग और द्वेष दोनों से मुक्त होने पर होता है। राग और द्वेष से मुक्ति ही मोक्ष है और इस मुक्ति का उपाय है- गुणान्वेषण करना। गुण-दृष्टि यथार्थ-दृष्टि है, प्रियसत्य का दर्शन है। आज का युग अन्वेषण का युग है, खोज का युग है, खोज में वैज्ञानिकों की फ़ौज जुटी हुई है, मगर वे जगत् खोजकर रहे हैं, जीवन की नहीं।

हम जीवन की खोज में जुटे हैं, जीवन के पद चिह्न ढूँढ़ रहे हैं। जीवन की खोज गुणों की खोज है, गुणों की खोज सुख की खोज है, सुख की खोज सिद्धि की खोज है, अतः गुणों की खोज ही केवलज्ञान, केवलदर्शन की खोज है, गुणों की खोज ही वीतरागता की खोज है और गुणों की प्राप्ति ही मज्जिल की प्राप्ति है, अतः हम निःशंक रूप से यह कह सकते हैं कि गुणान्वेषण ही मुक्ति का अन्वेषण है, अतः हमें मुक्ति चाहिए तो छिद्रान्वेषण त्यागें, गुणान्वेषण करें। दुर्गुण नहीं सदगुण का अन्वेषण करें।

-ऐसी हुई जब... गुरुकृपा भाग-1 से साभार

जिनवाणी पर अभिमत

श्री आनन्द कर्णावट

जनवरी 2021 जिनवाणी में प्रकाशित 'साधना में तनाव बाधक' डॉ. चंचलमलजी चोरड़िया का लिखा बहुत ही सटीक एवं आज के समय का अत्यन्त उपयोगी लेख है। इसको लिखने के लिए स्वयं की भी उत्कृष्ट साधना होना आवश्यक है, जो कि उनके उद्गार में प्रत्यक्ष प्रतीत होता है।

अच्छे श्रावकों को संघ तथा समाज एवं साधु समुदाय की रक्षा एवं सुरक्षा का दायित्व सौंपना आज की जरूरत है। अभी भी देर नहीं हुई है हम सबको अच्छे चारित्र वाले श्रावकों को जो ज्ञान-दर्शन में अच्छी जानकारी रखते हों तथा श्रद्धा में दृढ़ हों उन्हें आगे लाकर उन्हें जवाबदारी देकर हम अपने संघ समुदाय, साधु समुदाय की संस्कृति एवं संस्कार को बचा सकते हैं।

-एण्टवर्प, बेल्जियम

अनासक्ति के पर्याय थे उपाध्यायप्रवर

श्रद्धेय श्री जितेन्द्रमुनिजी म.सा.

शान्त-दान्त-गम्भीर श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. का वैशाख शुक्ला नवमी 21 मई, 2021 को 31वाँ उपाध्यायपद दिवस तथा वैशाख शुक्ला त्रयोदशी 24 मई, 2021 को 59वाँ दीक्षा दिवस उपस्थित हो रहा है। पूज्य उपाध्यायप्रवर का गत वर्ष सन् 2020 पौष शुक्ला सप्तमी को स्वर्गगमन हो गया था। उसके पश्चात् जोधपुर में श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा. आदि ठाणा के दर्शनों का अवसर प्राप्त हुआ तब श्रद्धेय श्री जितेन्द्रमुनिजी म.सा. से उपाध्यायप्रवर के सम्बन्ध में चर्चा हुई थी। जो संक्षेप में यहाँ प्रस्तुत है।

-सम्पादक

पूज्य उपाध्यायप्रवर प्रायः आहार त्याग की अपेक्षा आस्रव एवं आसक्ति के त्याग को प्रमुखता देते थे। तपस्या करने वाले को कहा करते थे-उपावस तो करें, किन्तु व्यापार, ताश खेलने आदि आस्रव का कार्य न करें। इससे उपवास का लाभ आधा रह जाता है।

उनका संथारा भले ही लम्बे काल का नहीं रहा, किन्तु अन्तिम डेढ़-दो वर्षों में उन्होंने खूब तपस्या की। पाँचों तिथियों को डेढ़ पौरुषी के पूर्व आहार नहीं लेते थे। अष्टमी, चतुर्दशी को उपवास रखते थे। दोज, पञ्चमी एवं एकादशी को प्रायः एकाशन की तपस्या करते थे। उन्होंने चातुर्मासिक चौमासी को बेले की तथा भगवान महावीर निर्वाण कल्याणक के अवसर पर तेले की तपस्या भी की। मुझे उनके सान्निध्य में ग्यारह वर्ष रहने का अवसर प्राप्त हुआ। उनसे निरन्तर कुछ न कुछ सीखने को मिलता रहता था। उनमें समता, सहजता, प्रशान्त भाव, आत्मीयता आदि विशिष्ट गुण थे। जीवन

में कभी मच्छरदानी का प्रयोग नहीं किया। वे संथारा विशेषज्ञ थे जब भी कहा संथारा कराने का अवसर होता तो वे स्थिति को भाँपकर विधिवत् संथारा कराते थे। वे ज्योतिष की दृष्टि से मुहूर्त का विचार नहीं करके कहते थे, उत्साह से बढ़कर क्या मुहूर्त है?

उनके सारे कीर्तिमान शुक्ल पक्ष में हुए। दीक्षा वैशाख शुक्ला त्रयोदशी को, उपाध्याय पद वैशाख शुक्ला नवमी को तथा समाधिमरण पौष शुक्ला सप्तमी को हुआ। उन्होंने किसी को पराया नहीं समझा और किसी से ममत्व भी नहीं किया। वे निर्द्वन्द्व सन्त थे। कोई परम्परा ऐसी नहीं थी जो उन्हें आदर नहीं देती हो। उन्होंने तीन महान् सन्तों (श्रद्धेय बड़े लक्ष्मीचन्द्रजी म.सा., बाबाजी म.सा., श्री जयन्तमुनिजी म.सा. आदि) की सेवा का अनुपम लाभ लिया। उपाध्यायप्रवर की सन्निधि में रहने वाले 22 सन्तों ने उनकी सेवा का लाभ लिया।

धिक्कतान्

श्री शान्तप्रकाश सत्यदास

येषां श्रीमज्जिनेन्द्रोदितवचनसुधासिञ्चितौ नैव कर्णौ।
सिद्धानामर्हतां वा गुणगणगणने नानुरक्ता रसज्ञाः॥
रागादिग्रन्थिच्छेत्तुच्छ्रमणचरणयुग्मे रतिर्नास्ति येषाम्।
धिक्कतान् धिक्कतान् धिगेतान् ध्वनति पटुरंश्चारुघोषोमृदङ्गः॥

जिनके कर्ण श्री जिनेन्द्र प्रभु द्वारा भाषित वचनामृत से सिञ्चित नहीं हुए अथवा अरिहंत-सिद्ध प्रभु के गुणकीर्तन में जिनकी रसना/जिह्वा संलग्न नहीं हुई, रागादि दोषों की ग्रन्थि को छेदने वाले/ काटने वाले श्रमण भगवन्तों के चरणों में जिनकी प्रीति नहीं हुई, उनको धिक्कार है, धिक्कार है धिक्कार है ऐसा धिक्कतान् धिक्कतान् धिगेतान् रट लगाता मधुर घोष करने वाला मृदङ्ग पट्ट रूप से ध्वनित करता है।

महावीर चालीसा

श्री तरुण बोहरा 'तीर्थ'

माँ त्रिशला का नैन सितारा, शासननायक वीर हमारा,
सिद्धार्थ के कुल का 'हीरा', जय-जय बोलो
जय महावीरा-2

चेत सुदी तेरस को जन्मे, खुशियाँ छाई सबके मन में
कुण्डलपुर का भाग्य सवाया, वीर ने पाई कञ्चन काया-2

वर्धमान जब नाम बुलावे, मात-पिता का मन हर्षावे,
सुदर्शन नन्दी का प्यारा, वीर अनुज है राजदुलारा-2

ज्ञान ध्यान में बीता बचपन, यौवन में संयम का चिन्तन,
उदासीन है भोगों से मन, पर कर्म योग में शादी बन्धन-2

दीक्षा की जब घड़ियाँ आई, प्रियदर्शना की पितृ विदाई,
वीर की पत्नी वीर यशोदा, अब है बिन पानी के पौधा-2,

राजमहल का वैभव छोड़ा, संयम से अब नाता जोड़ा,
कष्टों की बरसात हुई है, सहने की शुरुआत हुई है-2

कोई पाँव में आग जलाता, शूलवाणी विष नाग चलाता
छः महीने तक दुःख की धारा, आखिर में संगम भी हारा-2

कानों में कीलों की पीड़ा, दर्दनाक कर्मों की क्रीड़ा,
शीशा देकर शूल लिया है, ब्याज मिलाकर मूल दिया है-2

इन कर्मों का बदला भारी, राम, कृष्ण अब वीर की बारी
तकलीफों में धीर बने हैं, वीर वो ही महावीर बने हैं-2

भक्तिभाव में चन्दनबाला, श्रद्धा के फूलों की माला,
धन्य है ऐसे शील का चन्दन, दो आँसू से रुक गये भगवन्-2

जयन्ती सुलसा मृगावती है, वीर की शिष्या शीलवती है,
चण्डकौशिकको दिया सहारा, विषके बदले अमृतधारा-2

वीर में तप का तेज दमकता, तप कर सोना और चमकता,
वीर हुए हैं केवलज्ञानी, समोसरण में अमृतवाणी-2

इन्द्रभूति थे मद में हरदम, वीर ने बोला- 'आओ गौतम!'
मन का संशय दूर हुआ है, अहंकार भी चूर हुआ है-2

अर्जुनमाली और सुदर्शन, पहुँचे वीर को करने वन्दन,
सहनशीलता में जो जीता, श्रद्धा से भवसागर तिरता-2

पूरण की एक शुद्ध सामायिक, कैसे खरीदे राजा श्रेणिक?
नरकगतिका भव अति दुष्कर, पर धर्मदलाली से तीर्थकर-2

शालिभद्र ने त्यागा सब धन, धन्नाजी का धन्य समर्पण,
शरणागत तकदीर फिरी है, एवन्ता की नाव तिरि है-2

वीतरागता की सृष्टि है, सब जीवों पर समदृष्टि है,
गोशालक पर क्रोध नहीं है, गौतम से भी मोह नहीं है-2

वीर प्रभु इतने उपकारी, उत्तराध्ययन है अन्तिम वाणी,
शाश्वतसुखसे मनी दीवाली, सब कर्मों की जल गई होली-2

ग्यारह हैं भगवन् के गणधर, आर्य सुधर्मा वीर के पट्टधर,
गौरवशाली वीर का शासन, तारणहारा ये जिनशासन-2

धन दौलत की प्यास नहीं है, नाम और यश की आस नहीं है
'तीर्थ' के मन की बस एक चाहत, मोक्ष मिले तो मिलती राहत-2

- "JINSHASAN", B-102, Veetrag City, Jaisalmer
bypass Road, Jodhpur-342008 (Raj.)

महावीर का स्वास्थ्य-दर्शन

डॉ. चंचलमल चोरड़िया

सम्यक् जीवन शैली : स्वास्थ्य का मूलाधार

महावीर का दर्शन मौलिक रूप से स्वास्थ्य और चिकित्सा का दर्शन नहीं है, वह तो आत्मा से आत्मा का दर्शन है। परन्तु जब तक आत्मा मोक्ष को प्राप्त नहीं हो जाती तब तक आत्मा शरीर के बिना रह नहीं सकती। शरीर की उपेक्षा कर आत्म-शुद्धि हेतु साधना भी नहीं की जा सकती। महावीर की दृष्टि में शरीर का आत्म-साधना हेतु महत्त्व होता है, इन्द्रियों के विषय भोगों के लिए नहीं। उनका अधिकांश चिन्तन आत्मा को केन्द्र में रख कर हुआ, परन्तु उन्होंने शरीर के निर्वाह हेतु केवल ज्ञान के आलोक में, जिस सम्यक् जीवन शैली का कथन किया, वह स्वतः मानव जाति के स्वास्थ्य का मौलिक शास्त्र बन गया।

जीवन हेतु प्राण आवश्यक

जीवन जीने की शक्ति को प्राण कहते हैं। संसार में दो तत्त्व मुख्य होते हैं। प्रथम-जीव या आत्मा अथवा चेतना और दूसरा अजीव अथवा जड़ या अचेतन। इन तत्त्वों से ही सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड की संरचना होती है। इसी आधार पर ऊर्जा को भी मोटे रूप में दो भागों में विभाजित किया जा सकता है। पहली चैतन्य अथवा प्राण ऊर्जा और दूसरी भौतिक ऊर्जा। जिस ऊर्जा के निर्माण, वितरण, सञ्चालन और नियन्त्रण हेतु चेतना की उपस्थिति आवश्यक होती है, उस ऊर्जा को प्राण ऊर्जा और बाकी सभी ऊर्जाओं को जड़ अथवा भौतिक ऊर्जा कहते हैं। जब तक शरीर में आत्मा अथवा चेतना का अस्तित्व रहता है, प्राण ऊर्जा क्रियाशील होती है। मानव जीवन का महत्त्व होता है, परन्तु उसकी अनुपस्थिति में अर्थात् मृत्यु के पश्चात् प्राण ऊर्जा के अभाव में मानव शरीर का कोई महत्त्व नहीं। अतः उसको जला अथवा दफना कर नष्ट कर दिया जाता है।

भौतिक विज्ञान प्रायः जड़ पर ही आधारित होता है। अतः उसकी सारी शोध एवम् चिन्तन जड़ पदार्थों तक ही सीमित रहती है। फलतः विज्ञान के इतने विकास के बावजूद आज के स्वास्थ्य वैज्ञानिक शरीर के किसी भी अवयव जैसे बाल, नाखून, कोशिकाएँ, रक्त, वीर्य जैसे किसी भी अवयव का निर्माण करने में अपने आपको असमर्थ पा रहे हैं, जिसका चेतना युक्त शरीर में स्वयं निर्माण होता है।

प्राण ऊर्जा और उसके मूल स्रोत : पर्याप्तियाँ (Bio Potential Energy Source)

भगवान महावीर के सिद्धान्तानुसार जब मानव का जीव गर्भ में आता है तो उसे अपने कर्मों के अनुसार आहार, शरीर, इन्द्रिय, श्वासोच्छ्वास, भाषा और मन रूपी छह पर्याप्तिस्वरूप मूल ऊर्जा के स्रोत (Bio Potential Energy Source) प्राप्त होते हैं। प्रत्येक पर्याप्ति अपने-अपने गुणों के अनुसार पुद्गलों को आकर्षित कर मानव शरीर का विकास करती है। जिन्हें ये शक्तियाँ पूर्ण रूप से प्राप्त होती हैं, उनका सम्पूर्ण एवं सन्तुलित विकास होता है तथा जिन्हें ये पर्याप्तियाँ आंशिक रूप में प्राप्त होती हैं उनका विकास आंशिक ही होता है।

महावीर ने चेतना के विकास में इन्द्रियों के स्वतन्त्र अस्तित्व का कथन किया। जबकि अन्य दर्शनों एवं चिकित्सा वैज्ञानिकों ने उनकी शरीर के एक अवयव तक ही कल्पना की। उनका सम्बन्ध पञ्च तत्त्वों में से किसी तत्त्व अथवा अंग तक ही सीमित कर दिया।

श्वासोच्छ्वास पर्याप्ति से ही वायुमण्डल से श्वसन योग्य पुद्गलों को ग्रहण कर जीव उन्हें शरीर के लिए आवश्यक विशेष ऊर्जा में परिणित करता है। भाषा पर्याप्ति के कारण ही जीव भाषा योग्य पुद्गलों को ग्रहण

कर बोलने की योग्यता प्राप्त करता है। जिन जीवों में भाषा पर्याप्ति का अभाव होता है, वे मुँह होते हुए भी बोल नहीं सकते। मन पर्याप्ति के प्रभाव से जीव में मनोवर्गणा के पुद्गलों को ग्रहण कर द्रव्य मन की सहायता से चिन्तन मनन करने की क्षमता प्राप्त होती है। जिन जीवों को मन पर्याप्ति प्राप्त नहीं होती, वे मनुष्य की भाँति मनन, चिन्तन, अध्ययन आदि नहीं कर सकते। उपचार करते समय जब तक चेतना के विकास के इस क्रम की उपेक्षा होगी, निदान अपूर्ण और उपचार अस्थायी होगा।

ये जीवनी शक्तियाँ कार्य के अनुसार मुख्य रूप से दस भागों में रूपान्तरित हो मानव की समस्त गतिविधियों का सञ्चालन करती हैं। जिन्हें प्राण भी कहते हैं। प्राण जीवनशैली को शक्ति प्रदान करता है। प्रत्येक प्राण अपने लिये आवश्यक पुद्गलों को आसपास के वातावरण से ग्रहण कर अपने-अपने कार्य कर सकते हैं।

कानों के द्वारा शब्दों को ग्रहण करने अथवा सुनने की शक्ति विशेष को श्रोत्र इन्द्रिय बल प्राण, आँखों के द्वारा देखने की शक्ति विशेष को चक्षु इन्द्रिय बल प्राण, नासिका द्वारा गन्ध ग्रहण करने की शक्ति विशेष को घ्राणेन्द्रिय बल प्राण, जीभ द्वारा स्वाद का अनुभव कराने की शक्ति विशेष को रसनेन्द्रिय बल प्राण, शरीर द्वारा ठण्डा-गरम, कोमल-कठोर, हल्का-भारी आदि स्पर्श का ज्ञान कराने वाली शक्ति विशेष को स्पर्शनेन्द्रिय बल प्राण, मन से चिन्तन मनन करने की शक्ति को मनोबल प्राण, भाषा वर्गणा के पुद्गलों की सहायता से वाणी की अभिव्यक्ति की विशेष ऊर्जा वचन बल प्राण, शरीर के माध्यम से उठने-बैठने, हलन-चलन करने की विशेष शक्ति काय बल प्राण, श्वासोच्छ्वास वर्गणा के पुद्गलों की सहायता से श्वास लेने और बाहर निकालने की शक्ति विशेष श्वासोच्छ्वास बल प्राण तथा निश्चित समय तक निश्चित योनि में जीवित रहने की शक्ति विशेष आयुष्य बल प्राण कहलाती है। आयुष्य बल प्राण के अभाव में अन्य प्राणों का कोई अस्तित्व नहीं होता।

आयुष्य बल प्राण का प्रमुख सहयोगी श्वासोच्छ्वास बल प्राण होता है। प्रत्येक व्यक्ति की एक निश्चित आयुष्य होती है जिसका निर्धारण उसके पूर्व भव में ही हो जाता है। अन्य प्राणों की स्थिति बदल सकती है। क्षय के साथ-साथ उन प्राणों का निर्माण भी हो सकता है। प्राणों की विविधता के कारण ही प्रत्येक व्यक्ति के सुनने, देखने, चखने, सूँघने, चिन्तन-मनन करने, वाणी की अभिव्यक्ति आदि अलग-अलग होती है। कभी-कभी भौतिक उपचारों से कान, नाक, चक्षु, जीभ आदि इन्द्रियों के द्रव्य उपकरणों में उत्पन्न खराबी को तो दूर किया जा सकता है, परन्तु उनमें प्राण ऊर्जा न होने से भौतिक उपचार सदैव सफल नहीं होते। इसी कारण सभी नेत्रहीनों को नेत्र प्रत्यारोपण द्वारा रोशनी नहीं दिलाई जा सकती। सभी बहरे उपकरण लगाने के बाद भी सुन नहीं सकते। मूर्ति में मानव की आँख लगाने के बाद उसमें देखने की शक्ति नहीं आ जाती।

सारी प्राण शक्तियाँ आपसी सहयोग और समन्वय से कार्य करती हैं, परन्तु एक दूसरे का कार्य नहीं कर सकती। आँख सुन नहीं सकती। कान बोल नहीं सकता, नाक देख नहीं सकता इत्यादि। प्राण ऊर्जा का जितना सूक्ष्म एवं तर्क संगत विश्लेषण महावीर दर्शन में है उतना, आधुनिक चिकित्सा पद्धति में भी नहीं किया गया।

संयम ही स्वस्थ जीवन की कुञ्जी

प्राण और पर्याप्तियों पर ही हमारा स्वास्थ्य निर्भर करता है। शरीर एवं प्राण का परस्पर सम्बन्ध न जानने पर कोई भी व्यक्ति न तो प्राणों का अपव्यय अथवा दुरुपयोग ही रोक सकता है और न अपने आपको नीरोग ही रख सकता है। आत्मिक आनन्द और सच्ची शान्ति तो प्राण ऊर्जा के सदुपयोग से ही प्राप्त होती है। यही प्रत्येक मानव के जीवन का सही लक्ष्य होता है। प्रतिक्षण हमारे प्राणों का क्षय हो रहा है। अतः हमारी सारी प्रवृत्तियाँ यथा सम्भव सम्यक् होनी चाहिये। पाँचों इन्द्रियों, मन, वचन का संयम स्वास्थ्य में सहायक होता है तथा उनका असंयम रोगों को आमन्त्रित करता है।

हवा, भोजन और पानी से ऊर्जा मिलती है, परन्तु उनका उपयोग कब, कैसे, कितना, कहाँ का सम्यग्ज्ञान और उसके अनुरूप आचरण आवश्यक होता है ? स्वाध्याय, ध्यान, कायोत्सर्ग भी ऊर्जा के स्रोत होते हैं, जिनका जीवन में आचरण आवश्यक होता है। प्राण ऊर्जा के सदुपयोग से शरीर स्वस्थ, मन संयमित, आत्मा जागृत और प्रज्ञा विकसित होती हैं।

स्वास्थ्य की दृष्टि से पर्याप्तियों और प्राणों का बहुत महत्त्व होता है। अतः महावीर ने प्राण और पर्याप्तियों के संयम एवं सदुपयोग को सर्वाधिक महत्त्व दिया। जहाँ जीवन है वहाँ प्रवृत्ति तो निश्चित रूप से होती ही है। अतः पर्याप्तियों और प्राणों के संयम का मतलब हम उनका अनावश्यक दुरुपयोग अथवा अपव्यय न करें, अपितु अनादिकाल से आत्मा के साथ लगे कर्मों से छुटकारा पाने हेतु सदुपयोग द्वारा सम्यक् पुरुषार्थ करें।

1. **आहार संयम**—जीवन चलाने के लिए जितना आवश्यक हो भक्ष्य-अभक्ष्य का विवेक रखकर आहार-पानी आदि ग्रहण करना।
2. **शरीर का संयम**—शरीर की अनावश्यक प्रवृत्तियों से बचना एवं सम्यक् पुरुषार्थ करना।
3. **इन्द्रियों का संयम**—इन्द्रियों की क्षमता से अधिक तथा अनावश्यक कार्य न लेना। वीर्य का नियन्त्रण रखना अर्थात् ब्रह्मचर्य का पालन करना। इन्द्रिय विषयों को उत्तेजित करने वाली प्रवृत्तियों एवं वातावरण से यथा सम्भव दूर रहना।
4. **श्वास का संयम**—मन्द गति से दीर्घ श्वास लेना तथा पूरक और रेचक के साथ-साथ कुम्भक कर श्वास को अधिकाधिक विश्राम देना। जितना अधिक श्वास का संयम होगा, उतना व्यक्ति संवेगों से सहज बच जाता है। इससे शरीर और मन को बहुत आराम मिलता है। आवेग नहीं आते हैं। आवेग से शरीर में असन्तुलन और रोग होने की सम्भावनाएँ बढ़ जाती हैं।

5. **भाषा का संयम**—वाणी का विवेक एवं यथा सम्भव मौन रखना, परन्तु आवश्यकता पड़ने पर सत्य एवं मधुर बोलना। अनावश्यक बोलने से जीवनी शक्ति क्षीण होती है। वाणी के प्रकम्पन हमारे स्वास्थ्य को प्रभावित करते हैं। ध्वनि और मन्त्र चिकित्सा का यही आधार होता है। वाणी शरीर और मन दोनों को प्रभावित करती है।

6. **मन का संयम**—मन से अनावश्यक मनन, चिन्तन, स्मृति और कल्पनार्थ न करना अर्थात् मन की सम्यक् प्रवृत्ति करना। मनोबल कमजोर करने वाले दृश्यों को न तो देखना और न सुनना मन का संयम होता है। हिंसा, क्रूरता, घृणा, कामुकता, भय इत्यादि मनोबल कमजोर करने वाले वातावरण में रहना, मन का असंयम होता है।

संयम ही स्वास्थ्य की कुञ्जी है

जो चिकित्सा पद्धतियाँ कर्म बन्धन में सहयोगी होती हैं, महावीर ने उनका पूर्ण निषेध किया। रोग का मूल कारण अप्राकृतिक जीवन शैली, अनियन्त्रित, स्वच्छन्द, असंयमित-मन, वचन, काया की प्रवृत्तियाँ ही होती हैं। अतः महावीर ने प्राकृतिक स्वावलम्बी जीवन शैली और मन, वचन और काया के संयम को सर्वोच्च प्राथमिकता दी। जितनी ईमानदारी से उनका पालन किया जाता है, उतना ही व्यक्ति स्वस्थ होता है तथा पूर्व सञ्चित असातावेदनीय कर्म के कारण रोग की स्थिति बन भी जाती है तो भी वह परेशान नहीं होता। वह शरीर को आत्मा से अलग, विनश्वर और विध्वंसन होने वाला मानता है। अतः उसकी प्राथमिकता शरीर पर नहीं रहती। शरीर से ध्यान हटाते ही शरीर के दर्द, पीड़ा आदि कष्ट नहीं पहुँचा सकते। जहाँ रोग का आदर सत्कार नहीं होता, वहाँ रोग अधिक दिनों का मेहमान नहीं रह सकता। सभी रोगों का कारण पर्याप्तियों के असंयम से होने वाले प्राणों का असन्तुलन ही होता है। पर्याप्तियों के संयम से शरीर में रोग उत्पन्न होने की सम्भावनाएँ काफी कम हो जाती हैं और यदि रोग की स्थिति हो भी जाती है

तो पर्याप्तियों के संयम से पुनः शीघ्र स्वास्थ्य को प्राप्त किया जा सकता है। यही महावीर के सिद्धान्तानुसार शरीर स्वास्थ्य का मूलाधार है।

महावीर का स्वास्थ्य-चिन्तन पूर्णतः वैज्ञानिक

महावीर का चिन्तन सुना-सुनाया, रटा-रटाया अथवा चुराया हुआ चिन्तन नहीं है, परन्तु अनुभूति पूर्ण सत्य पर आधारित है, जिसका उन्होंने स्वयं साक्षात्कार कर प्रतिपादन किया। महावीर का स्वास्थ्य दर्शन पूर्ण रूप से मौलिक एवं वैज्ञानिक है। अहिंसा को आधार मानकर, अनेकान्त दृष्टि से उसमें स्वास्थ्य के विवेक पूर्ण सनातन सिद्धान्तों को स्वीकारते हुए चिन्तन किया गया है। महावीर ने जहाँ एक ओर प्राण और पर्याप्तियों के संयम को स्वास्थ्य का आधार कहा, वहीं दूसरी ओर अशुभ कर्मों एवं आस्रवों से बचने की स्पष्ट प्रेरणा दी तथा उन्हें ही रोग हेतु जिम्मेदार बतलाया। सम्यक् प्रवृत्ति एवं संवर युक्त जीवन शैली का कथन कर महावीर ने

जनमानस को स्वस्थ जीवन जीने का राजमार्ग बतलाया। पूर्व में उपार्जित अशुभ कर्मों के रूप में होने वाले रोग के कारणों के उपचार हेतु बारह प्रकार के तपों की सम्यक् आराधना का सुझाव दिया, जिससे न केवल आत्म शुद्धि ही होती है, अपितु अधिकांश पुराने शारीरिक एवं मानसिक रोगों से भी मुक्ति मिलती है।

शरीर एवं रोगों की अपेक्षा रोग के मूल कारणों को दूर करने पर उन्होंने जो जोर दिया वह आधुनिक स्वास्थ्य विज्ञान के लिए चिन्तनीय है। अतः उनके दर्शन पर जितनी अधिक शोध की जायेगी उतने-उतने स्वास्थ्य के प्रति नये आयाम सामने आते जायेंगे। महावीर का दर्शन अपने आप में परिपूर्ण है। अतः उसकी उपेक्षा करने वाला आधुनिक स्वास्थ्य विज्ञान अपने आपको पूर्ण वैज्ञानिक मानने का दावा नहीं कर सकता।

-चोरड़िया भवन, जालोरी गेट के बाहर, जोधपुर-
342003(राज.)

महावीर के भक्तों से मुझे, यही बात बस कहना है

श्री मोहन कोठरी 'विनर'

महावीर के भक्तों से मुझे, यही बात बस कहना है,
जीवन के हर पल, हर क्षण को, 'जैनत्व' के सङ्ग में जीना है।

महावीर के भक्तों से मुझे.....।।टेर।।

हम जैन, हमारा जैनधर्म, जिसकी महिमा जग में भारी,
हम महावीर के वारिसदार, पहचान हमारी है न्यारी।

जग के सब जीवों से हमको, मैत्री का भाव निभाना है,
महावीर के भक्तों से मुझे.....।।1।।

हो सरल, सादगीमय जीवन, आडम्बर से सदा दूर रहें,
नफ़रत न हो हमारे सीने में, भाईचारा भरपूर रहे।

प्रतिकूल प्रसङ्ग जब आ जाए, समता के रस को पीना है,
महावीर के भक्तों से मुझे.....।।2।।

रात्रि भोजन के हम त्यागी हैं, हम जमींकन्द नहीं खाते हैं,
बनता है हमारे 'जैन फूड', सम्मान सदा हम पाते हैं।
हो त्यागमय जीवन अपना, ऐसी पहचान बनाना है,

महावीर के भक्तों से मुझे.....।।3।।

हम रहें समर्पित धर्म के हित, यह धर्म हमारा सच्चा है,
'जैनत्व' की रक्षा में ही तो, जिनशासन की सुरक्षा है।
हर जैनी का हो यह नारा, हमें सच्चा जैनी बनना है,

महावीर के भक्तों से मुझे.....।।4।।

तेरा लाख लाख है शुक्र प्रभु, ऐसा ऊँचा है धर्म दिया,
मिला जैन कुल ऊँचा हमको, हम पर है बड़ा उपकार किया।
यह जैनधर्म है महान् अरे, सचमुच में कोहिनूर हीरा है,

महावीर के भक्तों से मुझे.....।।5।।

-जनता साड़ी सेण्टर, फरिश्ता कॉम्प्लेक्स,
स्टेशन रोड़, दुर्ग-491001 (छत्तीसगढ़)

भगवान महावीर के व्यक्तित्व में सामाजिक आयाम

डॉ. दिलीप धोंग

जैनधर्म के 24वें तीर्थंकर महावीर के जन्म के समय समाज की दशा बहुत अच्छी नहीं थी। तेबीसवें तीर्थंकर पार्श्वनाथ के अन्तिम प्रतिनिधि श्रमण केशीकुमार ने इस स्थिति को देखकर कहा था कि चारों ओर अन्धकार ही अन्धकार है, भोली-भाली जनता अन्धकार में भटक रही है। इस काल-निशा का अन्त कब होगा और कौन-सा सूर्य क्षितिज पर प्रकाश रश्मियाँ बिखेरता हुआ संसार को आलोकित करेगा? उनकी चिन्ता को दूर करते हुए इन्द्रभूति गौतम ने कहा था कि चौबीसवें तीर्थंकर भगवान महावीर समाधान-के-सूरज हैं।

वर्धमान

भगवान महावीर अहिंसा के सूर्य और सर्व-समृद्धि के आलोक-पुञ्ज थे। जैसे सूर्योदय से पूर्व ही उजाला होने लग जाता है, वैसे ही उनके गर्भ में आते ही नव-परिवर्तन और पुनर्जागरण के स्पष्ट संकेत मिलने लग गये थे। सबसे पहले तो उनके गर्भ में आते ही सम्पूर्ण राज्य में धन-धान्य, हिरण्य-सुवर्ण और सुख-शान्ति की अभिवृद्धि होने लगी थी। फलस्वरूप उनका नाम वर्धमान रखा गया, जो ऋद्धि, सिद्धि, वृद्धि और समृद्धि का सूचक है।

कौटुम्बिक प्रेम

यह उनके गर्भ-काल का चर्चित प्रसङ्ग है। उन्होंने गर्भवास में विचार किया कि उनके हिलने-डुलने से माँ त्रिशला को कष्ट होता है, सो उन्हें वैसा नहीं करना चाहिये। उन्होंने हिलना-डुलना बन्द कर दिया। परिणामस्वरूप त्रिशला चिन्तित हो गई। वर्धमान ने विचार किया कि उन्होंने तो माँ के सुख के लिए हिलना-डुलना बन्द किया था, परन्तु इससे तो माता-पिता और अन्य सभी की चिन्ता बढ़ गई है। ऐसा जानकर उन्होंने पूर्ववत् पुनः हलन-चलन शुरू कर दी। इससे सबके

चेहरे खिल उठे। इस घटना पर वर्धमान संकल्प करते हैं कि माता-पिता के जीवित रहते वे प्रव्रज्या अङ्गीकार नहीं करेंगे। तीर्थंकर महावीर ने न सिर्फ अपने संकल्प को निष्ठा से निभाया, बल्कि उसे और आगे बढ़ाया। माता-पिता की संलेखनामय दिवंगति के बाद जब उन्होंने अपने अग्रज नन्दीवर्धन से दीक्षा की अनुमति चाही तो नन्दीवर्धन ने उन्हें कुछ समय और रुक जाने के लिए कहा। वर्धमान ने बड़े भाई की भावना का सम्मान करके भ्रातृत्व का परिचय भी दिया। माता-पिता और बड़े-बुजुर्गों की उपेक्षा तथा भाइयों के आपसी मनमुटाव से अनेक कुटुम्ब टूट-बिखर जाते हैं और ऐसे कुटुम्ब के सदस्य जीवन के सच्चे सुख से वञ्चित होकर आत्म-वञ्चना में जीते हैं। वे जाने-अनजाने समृद्धि की सुखमय राह छोड़ देते हैं। बड़े-बुजुर्गों के अनादर से पारिवारिक-सामाजिक कष्ट बढ़ते हैं।

संयमित जीवन

भगवान महावीर के माता-पिता भगवान पार्श्वनाथ की परम्परा के श्रावक-श्राविका थे। इसलिए उनके परिवार में अहिंसा, संयम और तप की आराधना होती थी। दीक्षा से पूर्व गृहवास में महावीर का जीवन भी व्रत, नियम, संयम और सादगी से अनुप्राणित था। वे अचित्त जल और अचित्त आहार ग्रहण करते थे। रात्रिभोजन नहीं करते थे। अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह आदि व्रतों का सहज और सूक्ष्म रूप से पालन करते थे। आचाराङ्ग में कहा गया कि गृहस्थ जीवन के अन्तिम दो वर्षों में भगवान महावीर सचित्त जल नहीं पीते थे। उनका सारा व्यवहार क्रोधोदि कषायों से रहित था। उनका जीवन त्याग, तितिक्षा और समता से अनुप्राणित था। सामाजिक और आर्थिक दृष्टि से संयमित जीवन का अत्यधिक मूल्य है।

वर्षादान

तीर्थकर दीक्षा लेने से पूर्व एक वर्ष तक निरन्तर दान देते हैं, उसे ग्रन्थों में वर्षादान या वार्षिक-दान के रूप में जाना जाता है। वे सूर्योदय से लेकर प्रातःकालीन आहार तक एक करोड़ आठ लाख स्वर्ण-मुद्राएँ प्रतिदिन दान करते हैं। वर्षभर में कुल 3 अरब, 88 करोड़, 80 लाख स्वर्ण-मुद्राओं का दान उनके द्वारा किया जाता है। आचाराङ्ग और कल्पसूत्र में दीक्षा-पूर्व तीर्थकरों के दान को सर्वस्व-त्याग कहा है। उनसे दान लेने वालों में सनाथ, अनाथ, भिक्षुक, रोगी, दरिद्र आदि सभी वर्गों, क्षेत्रों और श्रेणियों के लोग आते थे। सम्पन्न भी उनसे कुछ प्राप्त करने की अभिलाषा रखते थे। वे लोग (और अन्य सभी दान ग्रहणकर्ता) केवल दान ही नहीं; दान, सहयोग, विसर्जन और संविभाग की प्रेरणा भी तीर्थकर प्रभु से प्राप्त करते और अपने जीवन को त्याग और उदारता से सजाते-सँवारते।

दान गृहस्थ का एक प्रमुख कर्तव्य है। वर्षादान के द्वारा तीर्थकर संसार को त्याग, दान, उदारता, सहयोग आदि की प्रकर्ष प्रेरणा देते हैं। उनकी इस प्रेरणा का जितना आध्यात्मिक महत्त्व है, उससे कहीं अधिक उसका सामाजिक तथा आर्थिक मूल्य भी है।

निर्धन को वस्त्रदान

तीर्थकर महावीर द्वारा वर्षपर्यन्त दान-धर्म की आराधना करने के बाद महाभिनिष्क्रमण किया। दीक्षा के वक्त इन्द्र ने उनके वाम-स्कन्ध पर श्रद्धापूर्वक बहुमूल्य दिव्य वस्त्र डाल दिया था। प्रब्रज्या ग्रहण करके ज्ञातृखण्ड वन से प्रस्थान करके भगवान आगे बढ़ गये। मार्ग में उन्हें राजा सिद्धार्थ का परिचित सोम नामक वृद्ध व्यक्ति मिला। महावीर के वर्षादान के वक्त वह उन तक पहुँच नहीं पाया था। पत्नी के आग्रह पर कि महावीर तो स्वर्ण की वर्षा कर रहे हैं और हम दरिद्रतापूर्वक जीवन यापन कर रहे हैं। जाओ, अब भी जाओ, तीर्थकर महावीर के पास। उनकी शरण गया हुआ कभी दरिद्र नहीं रह सकता। वह निर्धन खोज करता हुआ वन में वहाँ

पहुँचा, जहाँ महावीर साधनारत थे। उसने महावीर को अपनी व्यथा-कथा बताई। भौतिक रूप से देने के लिए भगवान महावीर के पास देवदूष्य वस्त्र था। देवदूष्य वस्त्र उन्होंने उसे प्रदान कर दिया। इससे उसकी दरिद्रता समाप्त हो गई। तीर्थकर महावीर के जीवन की यह घटना प्रेरणा देती है कि व्यक्ति अपने निजी सुखों का त्याग करके भी करुणा-भाव और सहयोग-वृत्ति बनाये रखें। सामाजिकता, मानवीयता और विषमता-निवारण के लिए ये आधारभूत घटक हैं।

स्वावलम्बन की शिक्षा

साधना-काल में भगवान महावीर की क्रान्तधर्मिता नये-नये रूपों में प्रकट होने लगी। प्रथम उपसर्ग के बाद देवराज इन्द्र भगवान से कहता है कि साधना-काल में आने वाले कष्टों के निवारणार्थ वह उनकी सेवा में रहना चाहता है। भगवान समाधान करते हुए कहते हैं कि परावलम्बी होकर लक्ष्य प्राप्ति सम्भव नहीं है। आचाराङ्गसूत्र में भगवान महावीर के लिए कहा गया है कि वे कष्टों से बचने के लिए किसी की शरण में नहीं जाते थे। उनका मत था कि दूसरों की शरण में रहकर अपने आप को नहीं पाया जा सकता। जीवन के समरांगण में आगे बढ़ने वालों के लिए स्वावलम्बन मुख्य शर्त है। बेरोजगारी घटाने और उद्यमिता बढ़ाने के लिए स्वावलम्बन और आत्म-निर्भरता स्वर्ण-सूत्र है।

जीविका को चोट नहीं पहुँचाना

विहार करते हुए भगवान महावीर मोराक सन्निवेश पहुँचे। उनकी उत्कृष्ट साधना और अपूर्व तेजस्विता के समक्ष जनता श्रद्धाभिभूत थी। लोग आते और भगवान को वन्दना कर लौट जाते। इस सन्निवेश में अच्छन्दक जाति के ज्योतिषी रहते थे। ज्योतिष के आधार पर उनकी जीविका चलती थी। भगवान के सहज रूप से बढ़ते प्रभाव से अच्छन्दकों का प्रभाव क्षीण होने के साथ ही उनकी जीविका पर भी इसका विपरीत असर हुआ। इस पर अच्छन्दक ज्योतिषियों ने भगवान से निवेदन किया- 'भगवन्! आपका व्यक्तित्व अपूर्व है,

आप अन्यत्र पधारें, क्योंकि आपके यहाँ बिराजने से हमारी जीविका नहीं चलती है।' भगवान महावीर बिना विलम्ब किये वहाँ से विहार करके आगे बढ़ जाते हैं। भगवान की अहिंसा और करुणा इतनी गहरी थी कि किसी की आजीविका में तनिक व्यवधान भी उनके लिए असम्भव था। यह घटना व्यक्ति को कई प्रेरणाएँ देती हैं। आर्थिक जगत् में गला-काट अस्वस्थ स्पर्धा से बचना, किसी की आजीविका में बाधक नहीं बनना और किसी की आजीविका और रोजगार में सहयोग करना। बढ़ते आर्थिक उपनिवेशवाद को रोकने के लिए भी यह घटना अत्यन्त प्रेरक है।

नारी उद्धार

चन्दनबाला का उद्धार भगवान महावीर के साधना-काल की सुप्रसिद्ध घटना है। राजघराने और अनेक सम्पन्न श्रेष्ठी देखते रह गये और तीर्थंकर महावीर एक दुःखियारी के द्वार पर पहुँच जाते हैं। उन्होंने छःमासी उपवास के पारणे में अत्यन्त मामूली चीज उड़द के बाकुले ग्रहण करके सबको अचम्भित कर दिया। तत्कालीन साम्राज्यवादी लिप्सा के परिणामस्वरूप राजकुमारी चन्दनबाला का दासी की तरह विक्रय हुआ था। यह घटना 1. साम्राज्यवाद, 2. दास-दासी प्रथा, 3. स्त्री-पुरुष भेदभाव और 4. सामाजिक असमानता पर करारी चोट करती है। चारों ही बिन्दु समाजशास्त्र में सदैव विमर्शनीय रहे हैं।

समता का साम्राज्य

कैवल्य प्राप्ति के साथ ही भगवान महावीर का तीर्थंकरत्व प्रकट हो गया। समवसरण में उनकी देशनाएँ सुनने के लिए मानव ही नहीं, देवगण और पशु-पक्षी भी उपस्थित होते थे। समवसरण समता और समानता, प्रकृति और पर्यावरण, अभय और मैत्री के जीवन्त रूप होते थे। कैवल्य प्राप्ति के दूसरे ही दिन उन्होंने द्रव्य-यज्ञ और कर्मकाण्ड की विषमतामूलक व्यवस्था को अपने समता के विराट् साम्राज्य में बुलाकर उसे भी समवसरण के परम समतामय वातावरण में समाहित कर लिया।

उन्होंने समाज में उपेक्षित वर्गों के व्यक्तियों को भी अपने धर्म-संघ में दीक्षित किया और परमेष्ठी पद पर आरूढ़ किया। गृहस्थ-धर्म में भी सभी वर्गों, वर्गों, गोत्रों और जातियों के व्यक्तियों को समान स्थान मिला। उनके संघ में अभिवादन का आधार चारित्र (दीक्षा-पर्याय) है; उम्र, जाति या सांसारिक पद नहीं। तत्कालीन समाज में ये घटनाएँ क्रान्तिकारी थीं।

जनभाषा का प्रयोग

उस समय कुछ लोगों द्वारा किसी भाषा विशेष को महत्त्व देकर कुछ लोगों का अनावश्यक शोषण किया जा रहा था। इस कारण से समाज का एक भाग शास्त्र-ज्ञान और अध्ययन से वञ्चित था। महिलाओं को भी आगे बढ़ने की स्वतन्त्रता नहीं थी। तत्कालीन जन-बोली/जन-भाषा प्राकृत में भगवान महावीर ने उपदेश देकर जन-जन में ज्ञान-विज्ञान और सदाचार की नवचेतना जगाई। उन्होंने जनता के सांस्कृतिक उत्थान के लिए प्राकृत भाषा का उपयोग अपने उपदेशों में किया। पिछली सदी से देश में भाषा एक बहुत बड़ा मुद्दा रहा है। भाषा के साथ धर्म, संस्कृति, परम्परा, व्यवसाय, रोजगार जैसी अनेक बातें जुड़ी हैं। जनभाषा के प्रयोग के माध्यम से भगवान महावीर लोक-संस्कृति को प्रतिष्ठित करते हैं, साथ ही लोक में संस्कृति तथा संस्कारों की सरिता भी प्रवाहित करते हैं। जनभाषा के माध्यम से उन्होंने ऐसी जनता को शिक्षित, समझदार, योग्य और समर्थ बनाया; जिसे आमतौर पर नासमझ, अशिक्षित और मूढ़ समझा जाता था। मानवीय एकता, सामाजिक समता, आर्थिक विकास और सर्वांगीण उन्नति की दिशा में उनकी भाषा-क्रान्ति का ऐतिहासिक योगदान है।

वस्तुतः भगवान महावीर के जीवन की हर घटना अनगिनत शिक्षाएँ और प्रेरणाएँ देती हैं। उनका क्रान्तधर्मी साधनामय व्यक्तित्व; व्यक्ति और समाज को भीतर और बाहर से सम्पूर्ण और समृद्ध बनाता है।

-निदेशक, अन्तरराष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन व शोध केन्द्र, 1 अख्या मुदली स्ट्रीट, साहुकारपेट, चेन्नई

क्षमा की ताकत

श्री कस्तूरचन्द बाफना

प्राणिमात्र से मैत्री सम्बन्ध बनाने में क्षमा जैसा कोई मन्त्र विश्व में नहीं है। क्षमा शब्द में बहुत बड़ी शक्ति समाहित है। भगवान महावीर जिन्होंने स्वयं अपने जीवन में आचरण कर इसकी शक्ति उजागर की है। क्षमा में सब गुणों का समावेश हो जाता है। चाहे व्यवहार जगत् हो या अध्यात्म जगत्, क्षमा के महत्त्व को नकारा नहीं जा सकता। और तो और मोक्ष प्राप्त करने में भी क्षमा ही सबसे बड़ा माध्यम है।

व्यवहार जगत् में हम प्रत्यक्ष देखते हैं कि क्षमा के आचरण से बड़े से बड़े अनर्थों से बच सकते हैं। विषयों की ज्वाला जलती हो, किन्तु क्षमा के आचरण से शान्ति और आनन्द की सरिता बहने लगती है। क्रोध, मान, माया, लोभ से घिरा यह जीव संसार में भ्रमण कर रहा है। क्रोध को क्षमा से, मान को विनय से, माया को सरलता से और लोभ को सन्तोष से जीता जा सकता है। मतलब यह है कि एक विषय को एक सद्गुण के माध्यम से जीता जा सकता है, पर एक क्षमा के माध्यम से चारों विषयों को जीता जा सकता है। क्षमा में विशालता है। आदमी के पैरों में क्रोध और लोभ की बेड़ी पड़ी होती है और हाथ में मान और माया की हथकड़ी लगी रहती है। प्रभु या गुरु की आज्ञा से आदमी अपने दुश्मन से क्षमा करने की सोचे तब क्रोध और लोभ की पैरों में पड़ी बेड़ी आगे बढ़ने नहीं देती। क्रोध का ज्वार उठता है कहाँ चला क्षमाने को? कल तो सौ-सौ सौगन्ध खाई थी नहीं बोलने की। मान-माया की लगी हथकड़ी हाथ नहीं जोड़ने देती। मान का सर्प फनफनाने लगता है। तू श्रीमन्त आदमी कहाँ चला अदने आदमी से माफी माँगने? चारों कषायों की पगबेड़ी और हथकड़ी आदमी को बाँधकर रखती है क्षमा न माँगने को। इस समय यह विचार आता

है कि महावीर का सन्देश है-मुमुक्षु बनना है तो क्षमा का आचरण कर अन्यथा चारों गतियों में भटक। तब विचार आता है कि चारों कषायों पर विजय मिलाने का माध्यम है एकमात्र-क्षमा।

(1) अर्जुन माली-यश के वशीभूत 1,141 पुरुषों और महिलाओं की हत्या की। मात्र एक पञ्चेन्द्रिय की हत्या से नरकगति का बंध होता है इसके हिसाब से अर्जुनमाली को 1,141 बार नरक जाना तय होता है। नरक में कम से कम 10,000 वर्ष की आयु होती है। इसके हिसाब से अर्जुनमाली को कम से कम 1,41,10,000 वर्ष नारकी जीवन बिताना ज़रूरी हो गया था, पर इतना दीर्घ नारकी जीवन बिताने के बजाय नरक गति में गए ही नहीं। कारण-क्षमा। क्षमा के माध्यम से मात्र छह महीनों में कर्मों को क्षय करके मोक्षगामी बन गए। न कोई बड़ी तपस्या की, न शास्त्रों का बहुत बड़ा ज्ञान प्राप्त किया। मात्र क्षमा के अस्त्र से कर्म शत्रुओं का संहार किया।

(2) गजसुकमाल मुनि-सोमिल जैसे साधारण आदमी ने गजसुकमाल के सिर पर धधकते अंगारे रखने की हिम्मत कर ली। उसे मालूम नहीं था कि त्रिखण्डाधिपति श्री कृष्ण के लघुभ्राता के साथ क्या कर रहा हूँ? अपना जीवन खतरे में डाल रहा हूँ। पर पूर्व कृत कर्मों ने यह सब कराया। सुकुमाल और नाजुक गजसुकमाल के सिर पर धधकते अङ्गारे रखें। वे गिर न जाय, अतः सिर पर पाल बाँधी। पर गजसुकमाल निश्चल। गजसुकमाल उस समय सामने आँख भी खोल दें तो क्या वह उनके सामने खड़ा रह सकता था? कर्मों का कर्ज़ा लाखों भवों का। कर्मों का केस टाइम पर नहीं होता। न ही कोई हिस्सा बाँटा सकता। खुद किया हुआ

खुद ही भोगे, न कोई बड़ा तप, न कोई ज्ञान-ध्यान। मात्र एक दिन में सिद्ध गति प्राप्त। सौतन के पुत्र के साथ अत्याचार के कर्मों का भुगतान करना मात्र बाकी था। खोपड़ी खीचड़ी की तरह सीज रही है। क्षमा के बल से सारे कर्म खत्म और मोक्ष प्राप्ति।

दुनिया का प्रत्येक धर्म क्षमा के महत्त्व को स्वीकारता है। क्षमा बिना कोई महापुरुष बन ही नहीं सकता। ईसामसीह शूली पर चढ़े। शूली पर चढ़ाने वालों के लिए यही प्रार्थना-भगवान इन्हें माफ करें। क्षमा धारण करने वाले का कोई शत्रु नहीं होता। क्षमा प्राणिमात्र से मैत्री कराती है। मित्र होने से दुश्मन नहीं। दुश्मन नहीं तो बैर नहीं। बैरी नहीं तो बदला नहीं। क्षमा प्राणिमात्र को अभय बनाती है। व्यवहार जगत् में भी प्रत्यक्ष क्षमा का बहुत महत्त्व है।

क्षमा का महत्त्व मात्र पढ़ने और सुनने के लिए ही नहीं है। जीवन में उतारने के लिए है। सोचिए-एक आदमी से हमारी अनबन है। जब भी वह आदमी सामने आये या स्मृति में आए आर्त्तध्यान और रौद्रध्यान का ही तो बंधन होगा। विषयोदय के कारण दिल-दिमाग हमेशा भारी बना रहेगा। सच्चे दिल से क्षमायाचना हो गई तो न आर्त्तध्यान, न रौद्रध्यान, दिल-दिमाग एकदम हल्के हो जाते हैं। अब तक सामने वाले में दुर्गुण दिखते थे अब दृष्टि परिवर्तन। क्षमा के आचरण से आनन्द ही आनन्द।

सत्य घटना-सन् 2011 के जलगाँव चातुर्मास की बात, परम पूज्य आचार्यश्री ज्ञानमुनिजी म.सा. का चातुर्मास सानन्द सम्पन्न हुआ। चातुर्मास में एक बहन ने 42 उपवास की तपस्या की, जो चातुर्मास सम्पन्न होने के बाद भी गतिमान रही। इस दीर्घ तपस्या से पूरा संघ आनन्दित और गौरवान्वित था। सभी संघ के लोग बहन की तपस्या की सुख-साता पृच्छा करते थे। पर उनका देवर एवं उनका परिवार साता पूछने नहीं आया था, कारण था आपसी अनबन। उन्हीं दिनों परम पूज्य तपस्वी श्री कानमुनिजी म.सा. अमलनेर विराजते थे। मैं

दर्शन करने गया, चातुर्मास की सारी गतिविधि बतलाई साथ में यह भी कहा कि चातुर्मास के बाद भी एक बहन बड़ी तपस्या में संलग्न है। पर उनका देवर अनबन के कारण साता पूछने नहीं आया। अचानक महाराजजी के मुख से निकल पड़ा-“आप लोग क्या करते हो?” ये वचन मेरे दिल में लगे कि महाराजश्री बिल्कुल सही कह रहे हैं। समाज की तरफ से वैमनस्य मिटाने के लिए प्रयास करना चाहिए। दूसरे दिन सुबह जल्दी मैं बहन के घर गया, बहनजी की दीर्घ तपस्या की साता पूछी। अनुमोदना की, फिर मैंने निवेदन किया कि आप बहुत बड़ी तपस्या कर रही हैं। पुण्योदय है कि इतनी तपस्या कर पा रही है, जबकि एक उपवास करना भी कठिन होता है, पर मुझे एक बात का दुःख है कि आपके देवर, परिवार का कोई सदस्य नहीं दिखता। इतनी दीर्घ तपस्या, फिर दूरी क्यों? सोने में सुगन्ध हो जाय, अगर आप क्षमायाचना कर इस दूरी को दूर करें। मात्र इतने में बहन बोल उठी-मेरी तैयारी है। मुझे बहुत प्रसन्नता हुई। लेकिन लगा कि बहनजी तैयार, पर बहन का परिवार भी सहमत होना चाहिए। वरना काम नहीं होगा। पतिदेव बाहर गये हुए हैं। उन्हें फोन कर बुलाया। मेरी भावना रखी। उन्होंने सहर्ष स्वीकृति दे दी। मैंने छोटे भाईसा को फोन किया आप कहाँ पर हैं, मुझे मिलने आना है। घर पर ही हूँ आ जाइये। तपस्वी बहन, उनके पतिदेव और मैं गाड़ी में बैठकर उनके घर पर गए। मैं जल्दी उनके घर पहुँचा। तपस्या होने से बहनजी धीरे-धीरे आ रही थी। मैंने कहा-“आपके भैया और भाभीजी आपसे क्षमा-याचना करने आ रहे हैं।” सुनकर भौंचक्के से रह गए। सामने गए, हाथ पकड़कर कमरे में लाए। तपस्विनी बहनजी ने कहा-“आज तक जो हुआ सो हुआ, हार्दिक खमतखामना है।” मेरे पारणे पर सपरिवार घर पर आना है। भाभी एवं भाई के मुख से क्षमायाचना सुनकर छोटे भाई के ऊपर जो विषयों का ज़हर था, कपूर की तरह उड़ गया। बड़े भाई-भाभी को पूरे परिवार ने प्रणाम किया

और क्षमायाचना की। सारा वैमनस्य दूर। दुश्मनी मैत्री में बदल गई। दृश्य मनोरम बन गया। वर्षों से चली आई दुश्मनी खत्म। घर में आनन्द की लहर छा गई। एक क्षमा ने कितना परिवर्तन कर दिया। यह है क्षमा की ताकत।

शिरपुर पर्युषण पर्व में जाने का प्रसङ्ग। आठ दिन कार्यक्रम चला। संवत्सरी के दूसरे दिन सामूहिक क्षमापना का कार्यक्रम, मैंने कहा—“क्षमापना मात्र व्यवहार रूप में नहीं होकर सच्चे दिल से करें। जिन दो दिलों में दूरी है, वैमनस्य है हिम्मत करें आगे आएँ और सबके सामने क्षमा माँगे। उपस्थित सदस्यों में उन दो आदमियों की तरफ देखना शुरू किया, जिनमें वैमनस्य था, कोर्ट केस चालू था। क्या देखते हो? कब तक चलता रहेगा? मेरे आह्वान को स्वीकार कर वे दोनों आगे आए और क्षमायाचना की।” दो अक्षरों के

लघुकाय शब्द ‘क्षमा’ में कितनी बड़ी ताकत है।

अनुभवजन्य बात यह है कि क्षमा याचना करने वाले और क्षमा देने वाले दोनों में बहुत बड़ी हिम्मत लगती है। इसीलिए कहा—“क्षमा वीरस्य भूषणम्।” कमजोर दिल वाले न क्षमा माँग सकते हैं, न दे सकते हैं। निर्भय, आनन्दित जीवन जीने के लिए, तथा सद्गति प्राप्त करने का एकमात्र माध्यम है—क्षमा।

क्षमा करने से चित्त में प्रसन्नता आती है। चित्त प्रसन्न बनने से चित्त में से उद्वेग, खेद, विषाद चला जाता है और प्राणिमात्र से मैत्री भाव करके भावविशुद्धि करके जीव अभय बनता है।

—प्लॉट नं. 13-14, मेहरून गेट नं. 414/3,
अभिनन्दन, रमेशदादा कम्पाउण्ड, सिरसोली रोड,
जलगाँव-425001 (महाराष्ट्र)

मैत्री भावना

श्रीमती अभिलाषा हीरावत

वैर विसर्जन, क्षमापना से मैत्री भाव जगता है
सर्व जीव मैत्री से आह्लाद भाव प्रकटता है।
मैत्री का अध्यात्म समझें दृष्टि सही बनाएँ
मित्र बनाने से पहले, स्वयं मित्र बनते जाएँ
क्षण भंगुर जीवन में वैर बुद्धि से क्यों खेदित हों?
नहीं शत्रु कोई तेरा, यह चिन्तन अब भावित हो,
राग-द्वेष से बनते बैरी, करें समता मैत्री की तैयारी
ना उलझें हम जीव मात्र से आई सहज सरलता की बारी
परस्पर प्रेम हित साधना बढ़ते जाएँ मैत्री के भाव से
सप्त गुण मैत्री स्वरूप, अपनाएँ हम चाव से
पवित्रता, त्याग, शूरवीरता और सुख-दुःख में समता।
संग उदारता, अनुरक्ति, सत्यता से
बढ़ती मैत्री और सुहृदयता
मैत्री में साधे हित चिन्तन, बनी रहे हित प्रवृत्ति
सीमित रहे ना स्व-दृष्टि, बनी रहे अवैरवृत्ति
सजग रहें मैत्री में भी, रहे राग का अभाव

कल्याण मार्ग के पथिक बन, रखें सर्वहित भाव
शमन करें राग-द्वेष का,
प्रकटावें उदासीनता भाव
आन्तरिक विकारों के क्षय से बढ़ता है मैत्री का प्रभाव
राग के साये है द्वेष पनपता, द्वेष से होता वैर विस्तार
गाढ़े सम्बन्धों में भी आ जाती है वैर से दरार
मान को नम्रता में बदलने से होता है वैर विसर्जन सरल
मैत्री का प्रथम पक्ष है वैर विसर्जन,
बढ़ता इससे मनोबल
मैत्री से होता भयवृत्ति का अन्त,
होती भावों की विशुद्धि
भय संकोच कुण्ठा के जाने से होती आत्मिक शुद्धि
निरख कर सबको निज सम, करें मैत्री का प्रसार
क्षमित क्षमापित वीर ही पाता अनन्त शान्ति विस्तार
‘मैत्री भावना’ की अनुप्रेक्षा कर ले रे भवी प्राणी!
दिखला रही मुक्ति पथ हमको ‘मुदित’ जिनवाणी।

—1101, बुड साइड, जी साउथ गोखले रोड,
प्रभादेवी, मुम्बई-400025 (महाराष्ट्र)

आचार्यश्री हस्ती के श्रद्धालु भक्तों का प्रेरणादायी समर्पण एवं संघ की रीति-नीति का निर्धारण

श्री नौरत्नमल मेहता

जैन जगत् के यशस्वी-मनस्वी-तपस्वी, प्रतिपल स्मरणीय, अध्यात्मयोगी, युगद्रष्टा-युगमनीषी, सामायिक-स्वाध्याय के प्रबल प्रेरक, इतिहास मार्तण्ड, चारित्र चूड़ामणि आचार्यप्रवर पूज्य गुरुदेव श्री हस्तीमलजी म.सा. का व्यक्तित्व बहुआयामी था। उस दिव्य-दिवाकर ने 71 वर्ष तक श्रमण-धर्म का सम्यक् आराधन किया, वहीं 61 वर्ष तक के सुदीर्घ काल तक संघनायक के रूप में चतुर्विध संघ की सारणा-वारणा-धारणा करते हुए संघोन्नति और शासन-दीप्ति में एक-से-बढ़कर-एक-अनेक विशिष्ट कीर्तिमान कायम कर एक नया इतिहास रच दिया। आचार्य श्री हस्ती ने स्व-पर कल्याण-कामना से ज्ञान-ध्यान, त्याग-तप, साधना-आराधना और व्रत-प्रत्याख्यानों में आबाल-वृद्ध और जैन-जैनेतर जनसमुदाय को धर्म से जोड़ने का सतत प्रयास किया, इसीलिए उस महापुरुष का प्रेरक व्यक्तित्व, प्रभावी कृतित्व और परिपक्व नेतृत्व का व्यापक प्रभाव सर्वत्र दृष्टिगोचर हो रहा है। चरितनायक के प्रेरक उपदेशामृत का पान कर गाँव-गाँव, नगर-नगर और महानगरों में सामायिक, स्वाध्याय, साधना और सेवा के संस्कार जन-जन के मन में जगे, परिणामस्वरूप आबाल-वृद्ध सबमें कर्तव्य के प्रति जागरूकता बढ़ी तो दूसरी ओर संघहितैषी सुज्ञ श्रावकों द्वारा गठित संस्थाएँ शुरू तो हुई ही, व्यवस्थित चल भी रही हैं।

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल और अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक् परिषद् गाँव-गाँव, कस्बे-कस्बे, नगर-नगर और महानगरों तक संघ की शाखाओं से समृद्ध हैं। छोटे-छोटे गाँवों तक संघ की

शाखाएँ विधि-विधानानुसार पूरे उत्साह से चल रही हैं।

आचार्य श्री हस्ती सबको अपना मानने वाले युगपुरुष रहे हैं। प्रत्येक गाँव की छत्तीस ही कौमें गुरु के दर्शन-वन्दन में, प्रवचन-श्रवण में, व्रत-नियम लेकर उन्हें पालने में और सेवा-भक्ति का कोई भी काम क्यों न हो, उसे करने में तत्पर रहती थीं। आचार्य श्री हस्ती के संकेत को श्रेयस्कर मानकर आबाल-वृद्ध और जैन-जैनेतर सभी अन्तर्मन से जप-तप में ही नहीं, अपितु सामायिक-स्वाध्याय और त्याग-तप में भी समर्पित देखे जाते थे।

परम उपकारी, परम दयालु, परम कृपालु गुरु हस्ती ने राजस्थान से बाहर अन्य-अन्य प्रदेशों में तीन-तीन पीढ़ियों को सम्भालने और उन्हें देव-गुरु-धर्म के सन्मुख लाने की उदारता रखी, उसी का सुपरिणाम है कि विचरण-विहार हो या शेखेकाल विराजना अथवा चातुर्मास ही क्यों न हो, सभी स्थानों पर छोटे-बड़े सबमें अपूर्व उत्साह और अनूठी जागृति देखी गई। फिर, गुरु भ्राताओं के परिवारों का परस्पर स्नेह-सौहार्द भी सबको प्रेरित-प्रभावित करने वाला होने से शासन की स्वतः प्रभावना भी होती रही। वीरप्रसूता राजस्थान के हर क्षेत्र चाहे वह मारवाड़ हो या मेवाड़, गोडवाड़ हो या मेरवाड़ा, पल्लीवाल हो या पोरवाल, बीकाणा हो या हाड़ौती, सिवाञ्ची हो या मालानी हर गाँव-कस्बे-नगर और महानगर के गुरुभक्तों ने गुरु हस्ती की चरण-सन्निधि में व्रत-नियम लेकर अपने जीवन को पावन-प्रशस्त किया, उनसे हम कुछ प्रेरणा प्राप्त करें। गुरु हस्ती के प्रति राजस्थान के अलावा मध्यप्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र, कर्नाटक, आन्ध्रप्रदेश, तमिलनाडु, दिल्ली,

हरियाणा, उत्तरप्रदेश जैसे राज्यों के गुरुभक्तों ने भी गुरु-सेवा और संघ-सेवा में बढ़-चढ़कर भावना दर्शायी, उनके जीवन से भी हमें कुछ सीखना है। हम सभी गुरुभक्तों के नाम तो क्या, सभी गाँवों-कस्बों तक के नाम भी देना चाहें, तो नहीं दे सकते। हाँ, गुरु हस्ती की जननी-जन्मभूमि पुण्यधरा पीपाड़, दीक्षास्थली अजयशहर-अजमेर तथा मारवाड़ जहाँ गुरु हस्ती का विचरण-विहार विशेष रहा, वहाँ के कतिपय गुरुभक्तों के अलावा जोधपुर-जयपुर जहाँ संघ एवं संघ की सहयोगी संस्थाओं के अधिकांश कार्यालय हैं, उन आदर्श गुरुभक्तों से बहुत-कुछ सीखा जा सकता है, इसलिए कतिपय संघसेवियों के नाम यहाँ उद्धृत कर रहे हैं।

आचार्य श्री हस्ती की जन्मस्थली, दीक्षास्थली एवं वीरभूमि राजस्थान के गुरुभक्तों का दीक्षा-शिक्षा एवं गुरुसेवा-गुरुभक्ति में योगदान

दीक्षा-महोत्सव के पावन प्रसङ्ग पर संघ-समाज के लोगों का सब तरह से सहयोग सदा से रहा है, रहता है और आगे भी रहेगा। हाँ, लघुवय के विरक्त बन्धु की दीक्षा पर तो सभी लोग पलक-पाँवड़े बिछाए स्वागत-सत्कार में आगे रहते हैं। मुमुक्षु बालक श्री हस्ती के स्वागत-अभिनन्दन में पुण्यधरा-पीपाड़ के सभी वर्गों, सभी समुदायों और हर जात-न्यात के सुज्जनों का योगदान रहा। पीपाड़ की तरह अजयशहर-अजमेर जहाँ चार-चार मुमुक्षुओं की एक साथ दीक्षाएँ हुईं, वहाँ के जैन-जैनेतर और आबाल-वृद्ध सभी लोगों का सहयोग भुलाया नहीं जा सकता। स्वागत करने वाले स्वागत करते हैं तो विरोधी विरोध करने से बाज नहीं आते। पर, विरक्त बन्धु श्री हस्ती का पुण्यवानी के कारण जन्म स्थली-दीक्षा स्थली के अतिरिक्त रत्नसंघ और सकल जैन समाज में जय-जयकारों से स्वागत हुआ।

दीक्षा-महोत्सव की सफलता में जिनका विशेष सहयोग रहा, उनमें सुश्रावक श्री लक्ष्मीचन्दजी कवाड़, श्री सिरहमलजी दुगड़, श्री रूपचन्दजी गुन्देचा, सेठ श्री मगनमलजी मूथा, श्री सरदारमलजी साण्ड, श्री

रूपचन्दजी ढड्डा, श्री मोतीलालजी काँसवा, श्री वल्लभदासजी मुणोत जैसे संघहितैषियों का योगदान तो रहा ही, सकल जैन समाज का पूरा-पूरा सहयोग भी रहा। जीवन-निर्माण के शिल्पी, धीर-वीर-गंभीर, पूज्य आचार्यप्रवर श्री शोभाचन्द्र जी म.सा. ने चारों दीक्षार्थियों को दीक्षा-पाठ पढ़ाकर मुनि जीवन में प्रवेश करवाया। विक्रम सम्वत् 1977 माघ शुक्ला द्वितीया तदनुसार 10 फरवरी, 1921 को ढड्डा बाग-अजमेर के विशाल प्राङ्गण में वटवृक्ष के नीचे दीक्षा-महोत्सव सफल रहा। सप्ताह भर पश्चात् नव-दीक्षित सन्तों-सतियों को छेदोपस्थापनीय चारित्र में आरूढ़ करवाया गया।

दीक्षा-शिक्षा, ज्ञान-दर्शन-चारित्र की अभिवृद्धि के साथ गुरुसेवा-गुरुभक्ति में पुण्यधरा पीपाड़ के श्री पृथ्वीराजजी कवाड़, श्री पूनमचन्दजी गाँधी, श्री सोनराज जी कटारिया, श्री मुकनचन्दजी सिंघवी, श्री मोहनलालजी कटारिया, श्री ताराचन्दजी मेहता, श्री नेमीचन्दजी मूथा, श्री माणकचन्दजी मूथा, श्री कनकमलजी चौधरी, श्री भैरूलालजी चौधरी, श्री सज्जनराजजी चौधरी, श्री पुखराजजी मुणोत, श्री मोतीलालजी गांधी, श्री अमरचन्दजी बोहरा, श्री अमृतलालजी कटारिया, श्री जबरचन्दजी मूथा जैसे अनेकानेक संघ-सेवियों से बहुत-कुछ सीखा जा सकता है।

जन्मस्थली पीपाड़ की तरह दीक्षा-स्थली अजमेर के संघ-समर्पित सुश्रावकों में श्री उमरावमलजी ढड्डा, श्री वल्लभदासजी मुणोत, श्री गणेशमलजी बोहरा, श्री छोटमलजी कटारिया, श्री सरदारमलजी साण्ड, श्री अमरचन्दजी काँसवा, श्री अमरचन्दजी दुधेड़िया, श्री जीतमलजी ढाबरिया, श्री श्रीलालजी कावड़िया, श्री मनोहरसिंहजी चण्डालिया जैसे संघ-सेवी श्रावक याद किए जाते हैं।

क्रियोद्वारक भूमि भोपालगढ़ के श्री विजयमलजी कांकरिया, श्री जोगीदासजी बाफणा, श्री जालमचन्द जी बाफणा, श्री रतनलालजी बोथरा, श्री जबरचन्दजी

छाजेड़, श्री भँवरलालजी हुण्डीवाल, श्री सूरजराजजी ओस्तवाल, श्री राजमलजी ओस्तवाल, श्री मुकनचन्दजी कांकरिया, श्री रिखबचन्दजी कांकरिया, श्री जंवरिलालजी मुणोत, श्री पारसमलजी प्रसून जैसे गुरुभक्तों की सेवाएँ प्रेरणा प्रदान करने वाली हैं।

पाली के सुज्ञ श्रावकरत्न श्री हस्तीमलजी सुराणा, श्री भीकमचन्दजी भंसाली, श्री माणकमलजी डोसी, श्री चम्पालालजी धारीवाल, श्री नथमलजी पगारिया, श्री ताराचन्दजी सिंघवी, श्री हीरालालजी चौपड़ा जैसे कई नाम हैं जो हमें प्रेरणा देते हैं। नागौर के श्री हस्तीमलजी सुराणा और पारसमलजी सुराणा के नाम गुरुभक्तों में आएँगे ही। अहिंसापुरी- कोसाणा के श्री घीसूलालजी बाघमार, श्री तपसीराजजी नाहर, श्री झूमरलालजी बाघमार, श्री भँवरलालजी बोहरा जैसे कई नाम हैं तो जैनपुरी-बारनी के सभी वर्गों के लोग गुरु-भक्ति में सक्रिय रहे हैं। निमाज के श्री सुगनमलजी भण्डारी, श्री इन्दरमलजी भण्डारी, श्री अन्नराजजी धोका जैसे कई लोगों की सेवाएँ रहीं तो मेड़तासिटी के श्री जौहरीमलजी ओस्तवाल, ब्यावर के श्री चाँदमलजी सिंघवी, बीकानेर के श्री भैरौलालजी सुराणा, किशनगढ़ के श्री लाभचन्दजी लोढ़ा, बिलाड़ा के श्री मोहनलालजी कटारिया (अर्जीनवीश) जैसे संघ-सेवियों में उनके नाम अग्रिम पंक्ति में हैं।

राजस्थान मूल के निवासी किन्तु प्रवासियों में जिन प्रमुख गुरुभक्तों की भूमिका रही उनमें सतारा के रायबहादुर श्री मोतीलालजी मूथा परिवार, मद्रास के श्री माँगीचन्दजी भण्डारी परिवार, श्री मोहनलालजी दुग्ड़ परिवार, बरेली के श्री रतनलालजी नाहर परिवार, धुलिया के श्री भीकमचन्दजी चौधरी परिवार, जामनेर के श्री शंकरलालजी ललवाणी परिवार, बैंगलोर के श्री चम्पालालजी डूंगरवाल परिवार, श्री मोतीलालजी सांखला परिवार, सैलाना के श्री प्यारचन्दजी रांका परिवार, होलनांथा के श्री मोतीलालजी सेठिया परिवार जैसे संघ-सेवियों का आदर्श कभी भुलाया नहीं जा सकता। श्रीमती चाँदबाईजी कुम्भट-मद्रास, श्रीमती

शरदचन्द्रिकाजी मुणोत-मुम्बई जैसे नाम भी प्रेरणादायी हैं। मध्यप्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र, आन्ध्रप्रदेश, तमिलनाडु, कर्नाटक, दिल्ली, हरियाणा, उत्तरप्रदेश आदि-आदि प्रदेशों के निवासियों ने गुरुभक्ति का आदर्श बनाये रखा।

सूर्यनगरी-जोधपुर के संघ-समर्पित गुरुभक्तों का विशिष्ट योगदान

जोधपुर रत्नसंघ का पट्टनगर है। कहने वाले जोधपुर को रत्नसंघ की राजधानी भी कहते हैं। क्योंकि यहाँ अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल और अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् के केन्द्रीय कार्यालय तो हैं ही, संघ की अधिकांश सहयोगी संस्थाओं के कार्यालय भी जोधपुर में हैं, जिनमें श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक संस्कार केन्द्र, श्री बाल शोभागृह, आचार्य श्री शोभाचन्द ज्ञान भण्डार, श्री कुशल जैन छात्रावास के कार्यालय प्रमुख हैं। श्री वर्द्धमान जैन रिलीफ सोसायटी के अन्तर्गत श्री वर्द्धमान जैन हॉस्पिटल, घोड़ों का चौक में होने से शहर के मरीजों को सस्ती जाँच और हॉस्पिटल की सुविधाएँ सुलभ हैं। फिर, सिंहपोल, घोड़ों का चौक, पावटा, नेहरूपार्क, चौपासनी हाउसिंग बोर्ड जैसे स्थानों पर ग्रन्थालय तथा पुस्तकालय हैं। प्रायः सभी प्रमुख-प्रमुख जगहों पर हमारे सामायिक-स्वाध्याय भवन, अतिथिगृह और भोजनशालाएँ हैं। घोड़ों का चौक में पौषधशाला भी है।

स्थानकवासी, मन्दिरमार्गी, तेरापन्थी, दिगम्बर परम्पराओं के पारिवारिक-परिजन विशाल संख्या में जोधपुर रहते हैं। आसपास के गाँवों-कस्बों के परिवार जोधपुर आकर बसे हैं और यह क्रम बराबर बना हुआ भी है। स्थानकवासी परम्परा में रत्नसंघ, ज्ञानगच्छ, जयगच्छ, समता संघ और श्रमण संघ जैसी विविध संस्थाओं के कार्यालय यहाँ हैं। हर परम्परा अपनी

प्रवृत्तियों के पोषण में, गतिविधियों के सञ्चालन में और कार्यक्रमों के क्रियान्वयन में बढ़-चढ़कर अपनी भूमिका एवं भागीदारी प्रदर्शित करती है। महावीर जयन्ती पर विशाल शोभायात्रा और प्रेरक झाँकियों का आकर्षण अनूठा रहता है। पर्वाधिराज पर्युषण पर्व पर तो धर्म-साधना की दृष्टि से जोधपुर का नज़ारा अत्यन्त मनमोहक तथा प्रेरणादायी बना रहता है। जोधपुर की तरह जयपुर, अजमेर, पाली, नागौर, बीकानेर, अलवर, भरतपुर, बाड़मेर, सवाईमाधोपुर, भीलवाड़ा, टोंक जैसे सभी जिला मुख्यालयों के अलावा पुराने कस्बे-नगर-शहर जिनमें पीपाड़सिटी, मेड़तासिटी, ब्यावर, भोपालगढ़, गोटन, दूदू, मदनगंज-किशनगढ़, हिण्डौनसिटी, गंगापुरसिटी, खेरली, बारनी, नसियाँ, कोसाणा, पचाला जैसे अनेकों स्थानों पर हमारी स्थानीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ की शाखाएँ हैं, जहाँ संघ के कार्यक्रम चलते हैं। बड़े-बड़े शहरों में मुम्बई, अहमदाबाद, सूरत, कोलकाता, चेन्नई, बैंगलुरु, मैसूर जैसे स्थानों पर सन्त-सतीवृन्द की सेवा-सन्निधि में प्रार्थना, प्रवचन, प्रश्नचर्चा, प्रतिक्रमण जैसे दैनिक कार्यक्रम चलते हैं वहीं त्याग-तप के अनुष्ठान भी यथाविधान-यथाप्रधान गतिमान रहते हैं। हम एक-एक स्थान के संघ-समर्पित गुरुभक्तों के नाम तो नहीं दे सकते, क्योंकि वैसा करने पर हजारों नाम देने सम्भव नहीं होते अतः हम कतिपय संघ-सेवियों के नाम यहाँ उद्धृत कर रहे हैं। गुरु के प्रति भक्ति, संघ के प्रति निष्ठा और शासन-सेवा में हमारे समर्पित आदर्श भक्तों से हम निरन्तर प्रेरणा लें और भावी पीढ़ी निष्ठावान सुज्ञानों से शिक्षा प्राप्त कर अपने जीवन को समुन्नत करे।

जोधपुर के प्रमुख आदर्श संघ-सेवियों में जीवन पर्यन्त समर्पित रहने वाले दीवान श्री लक्ष्मीचन्दजी मूथा, पडिमाधारी श्रावक श्री कीरतमलजी मूथा, न्यायाधिपति श्री इन्दरनाथजी मोदी, न्यायमूर्ति श्री सोहननाथजी मोदी, चीफ कोर्ट के जज श्री नवरत्नमलजी भाण्डावत, युवा और उत्साही कार्यकर्ता श्री विजयमलजी कुम्भट,

सुश्रावक श्री ब्रह्माचन्दजी भण्डारी, श्री नृसिंहमलजी मेहता, श्री हुक्मीचन्दजी जैन, श्री सायरचन्दजी कांकरिया, श्री पारसमलजी रेड, श्री कुन्दनमलजी भंसाली, श्री सौभागमलजी डागा, श्री सम्पतराजजी डोसी, श्री सम्पतराजजी मेहता (वैद्यजी), श्री अन्नराजजी बोथरा, न्यायमूर्ति श्री चाँदमलजी लोढ़ा, न्यायमूर्ति श्री श्रीकृष्णमलजी लोढ़ा, डॉ. सम्पतसिंहजी भाण्डावत, डॉ. अचलचन्दजी सिंघवी, श्री माणकमलजी भण्डारी, श्री देवराजजी भण्डारी, श्री छोटमलजी डागा, श्री मगनरूपचन्दजी भण्डारी, श्री करोड़ीमलजी लोढ़ा, श्री रिखबचन्दजी मेहता, श्री मोहनराजजी चामड़, श्री सरदारचन्दजी भण्डारी, कवि श्री दौलतरूपचन्दजी भण्डारी, श्री कनकमलजी चोरड़िया, श्री रिखबराजजी कर्नावट, श्री रिखबचन्दजी सिंघवी, श्री कुन्दनमलजी गिड़िया, श्री मिश्रीलालजी चौपड़ा, श्री श्रीचन्दजी मेहता, श्री जगदीशचन्दजी भण्डारी, श्री मदनरूपचन्दजी भण्डारी, श्री सोनराजजी मोहनोत, श्री अचलचन्दजी सेठिया, श्री गुलराजजी अब्बानी, श्री पारसमल जी लोढ़ा, श्री पारसमलजी भण्डारी, श्री माणकमलजी सिंघवी, श्री शुभलालजी सिंघवी, श्री भैरोंसिंहजी मेहता, श्री भँवरलालजी सुराणा जैसे न जाने कितने नाम हैं, जिन्होंने संघ-सेवा में अपना महनीय योगदान दिया है। श्रीमती इन्दरकँवरजी बाईसा और श्रीमती सज्जनकँवरजी बाईसा जैसे नाम भुलाए नहीं जा सकते। आदर्श एवं समर्पित संघ-सेवियों को संघ गौरव स्तम्भ, वरिष्ठ स्वाध्यायी, वीर पिता, बहुविध संघ-सेवा में जिनका योगदान रहा और संघ द्वारा जिनका सार्वजनिक स्वागत-अभिनन्दन हुआ है वे सभी नाम प्रेरणा देने वाले हैं।

प्रदेश की राजधानी गुलाबी नगरी-जयपुर के संघ-समर्पित आदर्श गुरुभक्त

जयपुर राजस्थान की राजधानी है और जयपुर में रत्नसंघ की सबसे पुरानी संस्था 'सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल' का प्रधान कार्यालय है। इसके अतिरिक्त जयपुर में आचार्य श्री विनयचन्द ज्ञान भण्डार, जैन इतिहास

समिति, अखिल भारतीय श्री जैन विद्वत् परिषद, सुबोध शिक्षण संस्थान के अन्तर्गत स्कूल-कॉलेज वर्षों से सुव्यवस्थित सञ्चालित हो रहे हैं। जयपुर में आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान, श्री महावीर केंसर हॉस्पिटल, वीतराग ध्यान-साधना केन्द्र, श्री अमर जैन रिलीफ सोसायटी, भूधर कुशल-रत्न बन्धु कल्याण कोष जैसी संस्थाएँ हैं। जयपुर में हमारे सामायिक-स्वाध्याय भवन, अतिथिगृह एवं भोजनशालाएँ भी हैं।

जयपुर में संघ-समर्पित आदर्श श्रावकों में श्री कन्हैयालालजी डागा, श्री केसरीमलजी कोठारी, श्री सोहनमलजी कोठारी, श्री सिरहमलजी बम्ब, श्री गुलाबसिंह जी बोथरा, श्री श्रीचन्दजी गोलेच्छा, श्री इन्दरचन्दजी हीरावत, श्री पदमचन्दजी हीरावत, श्रीमती गलकीबाई जी ढड्डा, श्रीमती इचरजकँवरजी लुणावत, श्रीमती लाडकँवरजी बोथरा, श्री उमरावमलजी सेठ, श्री पूनमचन्दजी बडेर, श्री उगरसिंहजी बोथरा, डॉ. नरेन्द्रजी भानावत, श्री भँवरलालजी बोथरा, श्री गजसिंहजी राठौड़, श्री पारसमलजी डागा, श्री अजीतकुमारजी बिरानी, श्री कन्हैयालालजी लोढ़ा, श्री सुशीलजी वैद्य, श्री प्रकाशचन्दजी मेहता, श्री माँगीलालजी रांका, श्री टीकमचन्दजी हीरावत, श्री केवलमलजी लोढ़ा, श्री प्रेमचन्दजी मूसल, श्री मोतीचन्दजी कर्णावट, श्री कुशलचन्दजी हीरावत, जैसे संघ-सेवियों ने गुरुभक्ति और संघ-सेवा में आदर्श श्रावक के रूप में अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया, वस्तुतः वे सब नाम प्रेरणादायी हैं।

संघ-संरक्षक मण्डल की सकारात्मक सोच से निरन्तर संघ में गुणात्मक सुधार

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ की स्थापना विक्रम सम्वत् 2032 में ब्यावर में हुई। संघ की वार्षिक साधारण-सभा में न्यायमूर्ति श्री सोहननाथ जी मोदी को संस्थापक-अध्यक्ष का दायित्व दिया गया। संघ स्थापना से विधानानुसार संघ का सञ्चालन हो रहा है। समय-समय पर नियमों-उपनियमों में सुधार भी होते रहते हैं।

आचार्य श्री हस्ती का विक्रम सम्वत् 2047 का चातुर्मास पाली में हुआ। पाली में संघ की वार्षिक साधारण-सभा में संघाध्यक्ष-पद हेतु किसी संघ-सेवी को मनोनीत करने पर विचार-चर्चा में एक नाम पुण्यधरा पीपाड़ के सुश्रावक श्री पुखराजजी मुणोत के सुपुत्र श्री मोफतराजजी मुणोत का आया, लेकिन मुणोत साहब अध्यक्षीय-दायित्व लेने के लिए तैयार नहीं थे। मीटिंग समाप्ति पश्चात् जब संघ-सेवी पूज्य गुरुदेव के दर्शन-वन्दन हेतु आए तो पूज्य गुरुदेव ने सहज पृच्छा की कि अध्यक्ष-पद किसको दिया गया ?

श्रावकों ने निवेदन किया कि इस बार एक नया नाम मुणोत साहब का आया, पर वे पद नहीं लेना चाहते। गुरुदेव हित-मित वचन फरमाते हैं अतः उनके मुखारविन्द से सहज में निकला- 'जे कम्मे सूरु ते धम्मे सूरु।' श्रावकों से यह भी कहा कि संघ-सेवा कर्म-निर्जरा का कारण है। आचार्य श्री हस्ती के थोड़े, किन्तु प्रभावी शब्दों में जबरदस्त ताकत थी। अब, मुणोत साहब को कहने के लिए कुछ नहीं था, अतः उन्होंने संघ के प्रस्ताव को मान्य कर लिया।

नव-मनोनीत संघाध्यक्ष श्री मोफतराजजी मुणोत अध्यक्ष बन तो गए, लेकिन सीखने-जानने-समझने की धुन के कारण उन्होंने संघ-संरक्षक एवं संघ के वरिष्ठ सदस्य श्री उमरावमलजी ढड्डा, संघ-संरक्षक एवं जानकार श्रावकरत्न श्री नथमलजी हीरावत, संघ के प्रबुद्ध संघ-सेवी श्री श्रीकृष्णमलजी लोढ़ा, डॉ. सम्पतसिंहजी भाण्डावत, श्री देवेन्द्रराजजी मेहता जैसे सहयोगियों से पूछ-पूछकर संघ की रीति-नीति, कार्य पद्धति और विभिन्न प्रवृत्तियों-कार्यक्रमों की क्रियान्विति कैसे होती है, जाना-समझा। अपने सहयोगी श्री सायरचन्दजी कांकरिया को कार्याध्यक्ष बनाकर उनसे आवश्यक परामर्श करते-करते मुणोत साहब ने संघ एवं संघ की रीति-नीति भली-भाँति समझ ली।

रत्नसंघ में उस समय संघ की स्थिति-परिस्थिति में एकाएक कुछ परिवर्तन आया, लेकिन भाई साहब ने

पूरे आत्मविश्वास से, समय का भोग देकर, सबके सहयोग से समस्या का समाधान तो निकाला ही, संघ की एकता-एकरूपता और परस्पर का स्नेह-सौहार्द भी बनाए रखा।

संघाध्यक्ष श्री मुणोत साहब ने दो कार्यकाल पूरी निष्ठा और गरिमा के साथ निभाये। संघ चाहता था कि मुणोत साहब का कार्यकाल बढ़े, लेकिन उन्होंने स्पष्ट किया कि-“दो कार्यकाल अर्थात् 6 वर्ष में जिसकी-जितनी क्षमता है तदनु रूप वह कार्ययोजना की क्रियान्विति करेगा ही। दो कार्यकाल पश्चात् परिवर्तन से संघ की अन्य-अन्य प्रतिभाओं को प्रोत्साहन तो मिलेगा ही, नया पदाधिकारी अधिक उत्साह एवं जिम्मेदारी से काम भी करेगा।”

मुणोत साहब की बात संघ-संरक्षक मण्डल ने अक्षरशः मानी और संघ आज तक उसी रीति-नीति पर गति-प्रगति कर रहा है। संघ में मनोनयन का प्रचलन है तो एक विशेषता यह भी है कि जिसे-जो भी पद दिया जाता है, हर संघ-सेवी उसका यथाविधान-यथाप्रधान पालन भी करता है।

संघ की गतिविधियाँ बढ़ें, संघ स्वावलम्बी बने और संघ की एकता-एकरूपता के साथ परस्पर का प्रेम-सम्बन्ध प्रगाढ़ होता रहे इसके लिए सभी संघ-सेवियों को प्रयास करते रहना है।

संघ-संरक्षक मण्डल ने विचार-चिन्तन के अनन्तर गजेन्द्र निधि-गजेन्द्र फाउण्डेशन ट्रस्टों से संघ को स्वावलम्बी बनाने का प्रयास किया तो जरूरतमन्द परिवारों को श्रीमती शरदचन्द्रिका मुणोत जैन रत्न वात्सल्य निधि के माध्यम से सहयोग-राशि में इजाफ़ा किया। युवकों में जागृति और सेवा-भावना बढ़े एतदर्थ अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् की स्थापना और प्रथम अधिवेशन जोधपुर में किया गया। युवक परिषद् की भांति श्राविका मण्डल का भी पुनर्गठन किया गया। संघ के होनहार छात्र-छात्राओं को प्रेरित-प्रोत्साहित किया जा सके, एतदर्थ आचार्य हस्ती मेधावी

छात्रवृत्ति योजना का शुभारम्भ किया गया। संघ में बहुविध संघ-सेवियों का अभिनन्दन बहुत वर्षों से हो रहा है उसके साथ 'आचार्य श्री हस्ती स्मृति सम्मान, युवा प्रतिभा-शोध-साधना-सेवा सम्मान एवं विशिष्ट स्वाध्यायी सम्मान' के शुभारम्भ से संघ में गुणात्मक सुधार होने से एक स्वस्थ वातावरण बनता जा रहा है।

आचार्य श्री हस्ती के पट्टधर आचार्य श्री हीरा ने संघ में ज्ञानाराधन की वृद्धि के लक्ष्य से परीक्षा के आयोजन का माहात्म्य बताया तो संघ ने अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड एवं अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक संस्कार केन्द्र का कार्यालय जोधपुर में स्थापित कर देश भर में अध्ययन के इच्छुक छात्र-छात्राओं के साथ अभिभावकों तक को ज्ञान-वृद्धि का अवसर प्रदान किया है।

संघ-संरक्षक मण्डल के चिन्तन को संयोजक होने के नाते माननीय मुणोत साहब प्रचारित करते हैं, अतः उनकी सकारात्मक सोच के लिए संघ स्तर पर उनका सार्वजनिक सम्मान हो, एतदर्थ संघ ने 'संघ-सेवा शिरोमणि' पद से अलङ्कृत कर उनका स्वागत-सत्कार और बहुमान पाली शहर में किया।

वर्तमान में संघ संरक्षक मण्डल के सदस्य हैं-

1. श्री मोफतराजजी मुणोत-मुम्बई, संयोजक एवं संघ संरक्षक मण्डल।
2. श्री नथमलजी हीरावत-जयपुर, संघ संरक्षक एवं सदस्य, शासन सेवा समिति।
3. श्री देवेन्द्रराजजी मेहता-जयपुर, संघ संरक्षक।
4. श्री सुरेशदादाजी जैन-जलगाँव, संघ संरक्षक।
5. श्री रिखबराजजी बाफना-जलगाँव, संघ संरक्षक।
6. श्री ईश्वरलालजी ललवाणी-जलगाँव, संघ संरक्षक।
7. श्री रतनलालजी बाफना-जलगाँव, संघ संरक्षक एवं संयोजक, शासन सेवा समिति। (अब दिवंगत)
8. श्री कैलाशचन्द्रजी हीरावत-जयपुर, संघ संरक्षक एवं सह-संयोजक, शासन सेवा समिति।

9. न्यायाधिपति श्री जसराजजी चौपड़ा-जयपुर, संघ संरक्षक।
10. श्री रावलचन्दजी चौपड़ा-जोधपुर, संघ संरक्षक।
11. श्री नवरत्नमलजी कोठारी-जयपुर, संघ संरक्षक।
12. श्री सरदारसिंहजी कर्नावट-मुम्बई, संघ संरक्षक।
13. श्री सुमेरसिंहजी बोथरा-जयपुर, संघ संरक्षक।
14. न्यायमूर्ति श्री राजेन्द्रमलजी लोढ़ा-दिल्ली, संघ संरक्षक।
15. न्यायमूर्ति श्री दलवीरचन्दजी भण्डारी-दिल्ली, संघ संरक्षक।
16. श्री विमलचन्दजी डागा-जयपुर, संघ संरक्षक।
17. श्री प्रसन्नचन्दजी बाफना-जोधपुर, संघ संरक्षक।
18. डॉ. मंजुलाजी बम्ब-जयपुर, सदस्य शासन सेवा समिति।
19. श्री गौतमचन्दजी हुण्डीवाल-चैन्नई, सदस्य शासन सेवा समिति।
20. श्री कान्तिलालजी चौधरी-धुलिया, सदस्य शासन सेवा समिति।
21. श्री गौतमराजजी सुराणा-चैन्नई, सदस्य शासन सेवा समिति।
22. श्री नौरतनमलजी मेहता-जोधपुर, सदस्य शासन सेवा समिति।

शासन सेवा समिति की स्थापना आचार्य श्री हस्ती के शासनकाल में हुई। युगद्रष्टा-युगमनीषी जानते थे कि साधु स्वयं होकर न तो कहीं आ-जा सकता है और न ही कहाँ-क्या हुआ, इसका पता ही कर सकता है। संघनायक शासन सेवा समिति के सदस्य महानुभावों में से जिसे-जो भी काम करने को कहे, समिति का सदस्य सारे काम छोड़कर बताए काम की तह तक जाकर यथा योग्य रिपोर्ट संघनायक की सेवा में रखता है। दीर्घद्रष्टा संघनायक की सोच से संघ में एक स्वस्थ वातावरण तो बना ही, साथ-ही-साथ सन्त-सतीवृन्द में आज्ञा-अनुशासन के भाव में भी दृढ़ता आ रही है। रत्नसंघ के वर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष का सामयिक-

चिन्तन

झारखण्ड उच्च न्यायालय के पूर्व मुख्य न्यायाधीश एवं राजस्थान उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधिपति, भारत सरकार के सशस्त्र बल अधिकरण के पूर्व अध्यक्ष एवं राजस्थान राज्य मानवाधिकार आयोग के पूर्व अध्यक्ष जस्टिस श्री प्रकाशजी टाटिया का जब संघाध्यक्ष के रूप में नाम प्रस्तावित किया गया तो संघ सदस्यों को एकाएक लगा-टाटिया साहब का नाम कैसे आया और क्या उन्होंने स्वीकृति दे दी, मन-ही-मन चिन्तन चलने लगा।

संघ के आग्रह-अनुरोध पर जब नव-मनोनीत अध्यक्ष महोदय ने अपने अन्तर्हृदय के उद्गार व्यक्त करते कहा-“मुझे अनेक सन्त-सतियों ने किसी-न-किसी प्रसङ्ग से आमन्त्रित किया और मैं वहाँ गया भी। लेकिन रत्नसंघ के आचार्य-उपाध्याय प्रभृति सन्त-सतीवृन्द ने मुझे कभी नहीं बुलाया। मैं रत्नसंघ के साधु-साध्वियों की निःस्पृहता से प्रभावित हूँ। फिर, रत्नसंघ में चुनाव के बजाय मनोनयन की संघ की रीति-नीति मुझे बहुत अच्छी लगती है। टाटिया साहब ने कहा-जैन संघों एवं संस्थाओं में जहाँ भी चुनाव होते हैं वहाँ राग-द्वेष की स्थिति बनती ही है। एक दूसरा-एक दूसरे के प्रति अपना मनमुटाव रोक नहीं पाता, इसलिए संघ-समाज में नहीं चाहते हुए भी टकराव और वैमनस्य पैदा होता है। चुनाव में हम चाहे भाई-भाई हों या रिश्तेदार अथवा स्वधर्मी बन्धु ही क्यों न हों, चुनाव में हम खोते-ही-खोते हैं। मनोनयन में परस्पर का प्रेम बना रहता है। रत्नसंघ में मनोनयन की प्रवृत्ति से मैं बहुत प्रभावित हूँ, इसीलिए जब मुझे पद लेने का आग्रह किया गया तो मैं मना नहीं कर सका। गौरवशाली संघ की महिमा और गरिमा तो रहे ही, हम-सब मिलकर संघ-दीप्ति में अपनी भूमिका एवं भागीदारी बढ़ाएँ। क्यों ?” तो संघ मेरा है, मैं संघ का हूँ।” यह सूत्र हमारे-सबके जीवन-व्यवहार में आए, यही शुभकामना है।”

नव-मनोनीत संघाध्यक्ष महोदय के सामयिक उद्गार श्रवण कर संघ सदस्यों ने हर्ष-हर्ष जय-जय के जयनाद करके अपनी प्रसन्नता प्रकट की।

संघ की स्थापना के पश्चात् अर्थात् वर्ष 1975 से रत्नसंघ में संघाध्यक्ष का मनोनयन होता आया है। संघ ही नहीं, संघ की सभी सहयोगी संस्थाओं में चुनाव के बजाय मनोनयन की प्रक्रिया अपनाई जाती है। इससे संघ और संघ की सहयोगी संस्थाओं में एकता-एकरूपता के साथ परस्पर का प्रेम-मैत्री-सहयोग की भावना उत्तरोत्तर पुष्ट होती रहती है। संघ की उन्नति-प्रगति का मुख्य

कारण संघ की रीति-नीति और कार्यपद्धति ही है।

संघ सदस्यों में गुरु-निष्ठा तो है ही, संघ-सेवी को जिस-किसी काम को करने की बात कही जाती है तो हर सदस्य उसे तुरन्त प्रभाव से करने का लक्ष्य रखता है। संघ स्वामित्व में दर्जनों संस्थाएँ काम करती हैं लेकिन सर्वत्र शान्ति, आनन्द और संघहित को प्राथमिकता दी जाती है। रत्नसंघ की विशेषताओं पर हम-सबको नाज़ है।

-9, पारस, शिवशक्ति नगर, रोड़ नं. 1,
महामन्दिर, जोधपुर-342010 (राज.)

पतन का कारण है भाव

(तर्ज :: ए मेरे वतन के लोगों.....)

श्रीमती अंशु संजय सुराणा

कारण है भाव पतन का, भावों से ही उत्थान उत्कृष्ट भाव से होता, आत्मा का सदा कल्याण आरिसा भवन में भरत की, पुण्यवानी जगमगाई मुद्रिका गिरी अँगुली से और मोह की कर दी विदाई अनित्य भावना भाकर, पाया था केवलज्ञान॥1॥
नयनों में अनाथीमुनि के, थी घोर वेदना छाई छुटकारा मिले पीड़ा से, तो संयम लूँ सुखदायी अशरण भावना भाकर, त्यागा था सारा जहान॥2॥
शालिभद्र की ऋद्धि को, देखने श्रेणिक आया अन्तर में जागा वैराग्य, अन्तःपुर था विसराया संसार भावना से तिर गये, शालिभद्र धन्ना महान्॥3॥
जहाँ एक है वहाँ सुख है, मिलता दुःख जहाँ अनेक पाकर निमित्त कंगन का, जागा नमिराज विवेक एकत्व भावना जागी, दिया शक्रेन्द्र को समाधान॥4॥
पाकर दर्शन साधु के, वो पूर्व जन्म याद आया नरकादिक गतियों का दुःख, माता-पिता को समझाया अन्यत्व भावना भाकर, पाया मृगापुत्र निर्वाण॥5॥
मद चढ़ा शीश सनत्कुमार, अहो! रूप क्या है मेरा

सोलह रोगों ने तत्क्षण, उनको था आकर घेरा भाई भावना अशुचि, रखा रोग में आत्म भान॥6॥

बैठे झरोखे समुद्रपाल, बन्धन था चोर का देखा समझे स्व कर्म से होता, ये पुण्य-पाप का लेखा आस्रव भावना भायी, संयम का किया आह्वान॥7॥

दुमुँही सर्प निमित्त से, जागा अन्तर में भाव व्यवहार जगत् का वैसा जैसा हो खुद का स्वभाव संवर भावना से हरिकेशी, बन गए गुणों की खान॥8॥

यक्ष के वश हो बहुत जीवों को, अर्जुनमाली ने मारा शरणा पा वीर चरण का, संयम और समता को धारा निर्जरा भाव से छह मास में, पाया मुक्ति वरदान॥9॥

विभङ्ग ज्ञान से द्वीप समुन्दर, देखा ऋषि शिविराज नहीं सत्य ज्ञान ये कह गौतम से, महावीर ने खोला राज लोक भावना से ले संयम, गाया मुक्ति का गान॥10॥

पुत्र 98 भरत के भय से, शरणा आदिनाथ के आए दिलवाऊँ शाश्वत राज्य तुम्हें जिसे कोई छीन न पाए बोधिदुर्लभ भावना भाके, बन गए जिनशासनकी शान॥11॥

नागश्री ने माखमण के पारणे, कड़वा तुम्बा बहराया धर्म भावना का ध्वज, धर्मरुचि के अन्तर में लहराया रक्षा हेतु उन चींटियों की, त्याग दिये थे प्राण॥12॥

-एस 149, महावीर नगर, टॉक रोड़, जयपुर

Why Brahmacharya ?

Prof. Dharm Chand Jain

An intelligent and rational human being wishes welfare of the self and the society. Chastity is also a means of such welfare. It strengthens the physical, mental and spiritual energy. It immunizes a person from various illnesses and saves the society.

Chastity is an utmost need of today when cases of rape, unlawful relations, distrust between spouses are increasing. Humans are losing rationality, patience and piousness in behaviour. Opportunities are more to corrupt the character, hence more awareness and restraint is needed.

In Indian literature a vow of brahmacharya is mentioned. It inspires to live in the self consciousness with celibacy or chastity. Saints and Sadhvis accept a vow of complete abstinence from sexual activity through mind, speech and body. This is a great vow of celibacy.

The laity householders also bear a small vow to control and limit their lust or libido. They limit their sexual activities with their married spouse only. This is a control with legal and social permissions, but in married life also the sexual desire is restrained for a few days in a month and year. Brahmacharya makes a person energetic and attentive if it is observed piously. A lustrous person can't be pious as Chanakya says - *na strainasya pavitratā*. (Chanakya nīti, 11.5)

There are many persons who feel obsessed in fulfilling their lust because of the non-restraint attitude of them. They always remain in the enjoyable mood leaving discipline and wisdom aside. Also so many motivational objects on television, mobile, internet etc. are playing a role for increasing

sexual desires. Several youngsters are captured by such desires. Some bachelors and dissatisfied persons with their own spouse are not satisfied, hence the graph of rapes and unlawful relationships is increasing.

There are four instinct desires or *sañjñās* available in every living being - 1. Eagerness for intake of food (*āhāra sañjñā*) 2. Feeling of fear (*bhaya sañjñā*) from unwanted objects and incidences 3. Sexual desire or desire for living together with sexual relation (*maithuna sañjñā*) 4. Desire to have possession and accumulation of material things (*parigraha sañjñā*). Every living being wants to live, hence it bears an instinct desire to have food. Feeling of fear escapes him from harmful acts. Sexual desire gives birth to the next generation of that species. It also promotes the tendency of living together. To live life securely desire to have possession and accumulation is also an instinct. A human being also bears all these desires by birth, but he can control and manage these very efficiently and wisely in a civilised way.

It is a question that is it possible to control or conquer the instinctual sexual desire? Answer goes in yes. This is the spiritual development that this desire is controlled and sublimated in creativity. Indian literature is full of such examples and statements of ṛṣis.

Why chastity is needed in a human being? There are mainly two reasons. The first is personal and the second is social. Personal benefits are - 1. Self purification through restraint on lustful desire.

2. Increasing will power

3. It can help in spiritual progress. Social benefits are - 1. Reputation in the society.

2. Reliable personality including in the members of opposite sex.

3. Trust in the spouses 4. Evasion of some conflicts and disputes. 5. Conservation of mental and physical energy. 6 Better family life. 7. Absence of mutual futile doubts. 9. Saving of money from court cases related to divorce due to unchastity. 10. Children are safe in a harmonious atmosphere. Problems of a country, Government and courts are also reduced in some respect.

The desire of lust alone can demolish oneself and the whole society. Many wars occurred due to this lust in the history of humanity. War with Ram by Ravan is also its example. The whole Lanka was ruined in that war. Indian culture educates-

mātrvat pardāreṣu, paradravyeṣu loṣṭhavat. ātmavatsarvabhuteṣu, yaḥpaśyatīsapandītaḥ.

A wiseman understands others wives as mother, others valuable things as a clod and all living beings as the self. This is a key to behave with others wives. Unmarried females are to be treated as sisters or mothers as the case may be. This thought can work a lot. In Jaina Āgama literature many norms are found for monks and *Sādhvīs* for maintaining brahmacharya. A monk neither touches a *Sādhvī* and a female nor meets them alone.

In the new era, due to the effect of western culture a new concept of relationship is reached in India. In India we maintain relationships with all our family members, relatives, friends and acquainted persons, but in new terminology it has a narrowed meaning denoting the body relations of two individuals without any marriage. Surprisingly it has gained legal permission in India. This relationship may convert into marriage or may not, hence it is damaging the marriage system of India and creating new problems to its social structure.

Jain philosophy doesn't suggest to suppress any desire, because it comes again with a complexity, hence it should be conquered or controlled with understanding and knowing its future result.

Brahmacharya trains us with the principle that the source of happiness is not outside. It is experienced inside. It depends on our thoughts and mindset. Generally we experience pleasure through our sense organs and mind and also feel pain through them. The feeling of that pleasure makes a human being dependent and craving for that. Spiritually he is more powerful, he has a power to experience happiness and bliss in every situation, but he is ignorant of it. If a person pays attention towards inner truth, then he can easily control and conquer the desires of lust and more consumption of the material things. Finding pleasure and happiness in material things and sensual organs doesn't satisfy a person even in old age.

Hence for satisfaction spiritual understanding, values and practice are needed. That can be acquired or developed within the self. A few points may be helpful- 1. Change in viewpoint- direction of life is decided according to the viewpoint. Changing the view desire of lust is diminished. 2. Life is important- it should not be wasted in vain. Imitating others' lives is not a wise path. Viewing the truth it should be lived well. Truth shows the perishability of the body and enjoyable things. 3. Non- violence- it promotes a person to understand other humans equally and pay respect to them. This principle of Jain philosophy doesn't allow a person for sexual abuse and exploitation. 4. Study of spiritual literature- it gives a vision of right thinking and purifies the ideology. 5. Meditation - regular meditation expresses peace within the self, downs the tension and

also controls the sexual desire. 6. Contemplations- contemplations show the truth of life and material things. Everything is impermanent, non-shelter and changeable, hence attachment with that is not reasonable. 7. Food control- heavy, oily and rich food and also eating more than hunger provokes the sexual desire, hence restraint on it is required for chastity. Mahatma Gandhi was of the view that who isn't able to control eating can not control the sexual desire. Jain canonical literature also propounded it. Upadhyaya Shri Amaramuni Ji says in his book- "When all the powers of a soul are concentrated, the power of brahmacharya increases. The stronger this concentration becomes, the greater is one's celibacy." This shows that brahmacharya requires all types of restraint and austerity.

Brahmacharya has been considered as the best austerity- *tavesu va uttamam bambhaceram* .(*sūyagado, 1.6*) Who is able to conquer the lust, can conquer all the evil desires and perverted emotions.

Presently education is spreading fast, but the training of spiritual values is missing. Students of schools and colleges are deprived

of the right mentor, path guiding *gurus* and books like this. They don't know the method of controlling the mind and emotions which can save energy and channelise it into the right direction.

There is a principle of sublimation in psychology which suggests to transform our desire into another creative field. This transformation can make a person a good poet, good artist, good novelist and also a good saint. A saint transforms his desire into spiritual progress. Through *āsan*, *prāṇāyāma* and meditation a person can channelise his mental and physical energy into spiritual uplifting.

Some of us don't know the difference between love and lust. Love doesn't require a lust. It can be experienced towards all the beings of the universe. Through love we experience happiness whereas lust is limited to a body partner and creates momentary pleasure. This momentary pleasure can deprive a person from the want of eternal happiness and truth.

*Retired Professor, Department of Sanskrit
Jainarain Vyas university, Jodhpur
Chief editor , Jinvani monthly, Jaipur*

सामायिक की महिमा

सौ. कमला सिंघवी

सामायिक एक उच्चकोटि की साधना है। सामायिक समभाव प्राप्ति का अनुष्ठान है। शुद्ध आत्मस्वरूप की प्राप्ति के लिए चिन्तन, मनन, स्वाध्याय, कायोत्सर्ग आदि वास्तविक सामायिक है। आत्मा रूपी निर्मल गगन में जब समभाव का सूर्य अपनी समस्त प्रखरता के साथ उदित होता है तो राग-द्वेष, मोह आदि उलूक विलीन हो जाते हैं। सामायिक में प्रतिक्षण कर्मों की महती निर्जरा होती है। सामायिक से विशुद्ध हुआ आत्मा ज्ञानावरणीय आदि घातिकर्मों का सर्वथा पूर्णरूप से नाश कर लोकालोक प्रकाशक

केवलज्ञान प्राप्त कर लेता है। करोड़ों जन्मों तक निरन्तर उग्र तपश्चरण करने वाला साधक जिन कर्मों को नष्ट नहीं कर सकता उसको समभाव पूर्वक सामायिक करने वाला साधक मात्र आधे ही क्षण में नष्ट कर डालता है। आचार्यश्री हस्ती गुरु के भजनों में लिखा है- 'जीवन उन्नत करना चाहो तो सामायिक साधन कर लो।' जीवन में जो भी विषाद, दुःख, दारिद्र्य है उस सबकी अमोघ औषधि सामायिक है। समभाव वह लोकोत्तर रसायन है, जिसके सेवन से समस्त आन्तरिक व्याधियाँ नष्ट हो जाती हैं। सामायिक की साधना से साधक मोक्ष साध्य को प्राप्त करता है। -पूर्व जैन अध्यापिका, भडगाँव (महाराष्ट्र)

अमूल्य बोध

डॉ. रमेश 'मयंक'

दुःख उत्पादक

प्राणी
मन-वचन कर्म से
आसक्तियाँ बढ़ाता है,
दुःख उत्पादक कहलाता है
मुक्ति मार्ग से बहुत दूर
भटकता ही चला जाता है।

सुख

मानव जीवन में सुख
ओस की बिन्दुओं की तरह
वह क्षणिक-आभावान होता है,
क्षण-भंगुर आभा को पाने के लिए
लालायित रहता है,
वहीं
विशाल जलधि के समान
चिर स्थायी सुख की अनुभूति से
वंचित होकर रोता है,
अपना बहुमूल्य जीवन
व्यर्थ ही खोता है।

सुरक्षा

मानव जीवन को
कर्म बन्धन रूपी शत्रुओं से
आत्मा को सुरक्षित रखने हेतु
श्रद्धा-नगर में
तप-संवर अर्गला
क्षमा-नगर कोट
मन-वचन-काया की
गुप्त खाइयाँ रचकर

संयम-साधना शस्त्रों से
सुरक्षित-सुदृढ़ संकल्पों का
महल बनाना चाहिए,
ताकि गुरु कृपा आशीर्वाद पा सके,
जीव को
मुक्ति पथ पर बढ़ाकर
परम शान्ति का प्रसाद
पा सके।

पछतावा

मनुष्य-
सोना-चाँदी के
असंख्य सुमेरु पर्वत बनाए,
तारों के समान रत्न जड़ित
मणि-मुक्ता पाए
फिर भी तृप्त नहीं हो पाता है
पूरी धरती और आकाश को
अथाह सम्पत्ति से ढककर
स्वामित्व की इच्छाएँ जगाता है,
इच्छाओं का आकाश
अनन्त विस्तार की चाहत बढ़ाता है
सन्तोष धन नहीं पाकर
अन्त में लोभी-महादुःखी
बनकर पछताता है
सिर्फ
हाथ मलता रह जाता है
अमूल्य जीवन
व्यर्थ ही गँवाता है।

-बी-8, मीरा नगर, चित्तौड़गढ़-312001
(राज.) 9461189254

सर्वज्ञसिद्धि

प्रो. वीरसागर जैन

सर्वज्ञसिद्धि दर्शनशास्त्र का एक अत्यन्त प्रमुख विषय है। प्रायः सभी दर्शनों में इस विषय पर थोड़ा-बहुत प्रकाश अवश्य डाला गया है। किन्तु इस विषय को जैसा महत्त्व और विस्तार जैन दर्शन में प्राप्त हुआ है, वैसा अन्यत्र नहीं हो सका। 'सर्वज्ञसिद्धि' जैनदर्शन का एक बहुत ही प्रधान विषय बन गया है। वहाँ इसे न्यायशास्त्र के द्वारा भी बारम्बार अनेकानेक हेतुओं द्वारा विस्तारपूर्वक सिद्ध किया गया है। जैनदर्शन के प्रायः सभी दार्शनिक, आध्यात्मिक और नैयायिक आचार्यों ने इस विषय को विशेष महत्त्व प्रदान किया है और उस पर विस्तारपूर्वक लेखनी चलाई है, क्योंकि उनके अनुसार यह विषय एक बहुत ही प्रयोजनभूत विषय है, मूलभूत विषय है, सभी को सर्वप्रथम अनिवार्यरूप से ज्ञातव्य है, इसके बिना अन्य विषय भी भलीभाँति समझ में नहीं आ सकते।

दरअसल इसमें एक बात यह भी है कि सर्वज्ञता आत्मा का अपना ही स्वभाव है, अतः इस विषय को समझने का अर्थ किसी अन्य व्यक्ति या वस्तु को समझना नहीं है, अपितु अपने ही आत्मस्वभाव को भलीभाँति समझना है। यह आत्मज्ञान का ही एक रूप है। जो सर्वज्ञ को नहीं जानता वह वास्तव में अपने आत्मा को भी नहीं जानता।

यही कारण है कि जैनाचार्यों ने इस विषय (सर्वज्ञसिद्धि) को एक मूलभूत या प्रयोजनभूत विषय कहकर इसे सावधानी से समझने पर बहुत अधिक बल प्रदान किया है।

सर्वज्ञसिद्धि का यह विषय वैसे तो सभी जैन ग्रन्थों में, चारों ही अनुयोगों में, यत्र-तत्र-सर्वत्र मिल जाता है, किन्तु जितने व्यवस्थित रूप से यह विषय जैन-न्याय-ग्रन्थों में मिलता है, उतना अन्यत्र नहीं मिलता; अतः

यहाँ इस विषय को जैन-न्याय-ग्रन्थों के आधार पर ही भलीभाँति स्पष्ट करने का प्रयास करते हैं।

जैन-न्याय-ग्रन्थों में सर्वज्ञसिद्धि का यह विषय लगभग सभी न्याय-ग्रन्थों में अनिवार्य रूप से मिलता है। यह बात अलग है कि कहीं इसे बहुत संक्षेप में कह दिया है और कहीं इसे बहुत विस्तार से कहा है। तथा कहीं-कहीं तो स्वतन्त्र रूप से ही इस विषय पर प्रकरण-ग्रन्थ का भी निर्माण कर दिया है। जैसे कि आचार्य अनन्तवीर्य ने इस विषय पर दो स्वतन्त्र ग्रन्थ लिख दिए हैं-लघु सर्वज्ञसिद्धि और बृहत् सर्वज्ञसिद्धि।

सर्वज्ञसिद्धि के इस विषय को स्पष्ट करने के लिए समन्तभद्र, अकलंक, विद्यानन्द आदि आचार्यों ने आप्तमीमांसा, अष्टशती, अष्टसहस्री जैसे महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ भी लिखे हैं। ये ग्रन्थ सर्वज्ञसिद्धि जैसे विषय को प्रस्तुत करने के कारण ही न्याय-ग्रन्थों की सूची में परिगणित होते हैं और इस विषय को भलीभाँति समझने के लिए अत्यन्त उपादेय हैं।

यहाँ हम इन्हीं सबके आधार से सर्वज्ञसिद्धि के विषय को सरल-सुबोध शैली में प्रस्तुत करने का एक लघु प्रयास करते हैं। आशा है, सर्वज्ञसिद्धि जैसा गूढ़-गम्भीर विषय कुछ सरलता के साथ स्पष्ट होगा।

सर्वज्ञसिद्धि के इस विषय को जैन-न्याय-ग्रन्थों में दो भागों में विभाजित करके समझाया गया है-सामान्य सर्वज्ञसिद्धि और विशेष सर्वज्ञसिद्धि, अतः यहाँ भी उसे उसी प्रकार दो भागों में विभाजित करके प्रस्तुत करते हैं। सामान्य सर्वज्ञसिद्धि में यह सिद्ध किया जाता है कि कोई सर्वज्ञ हो सकता है, उसमें कोई बाधा नहीं है और विशेष सर्वज्ञसिद्धि में यह सिद्ध किया जाता है कि वह सर्वज्ञ अरिहंत ही है, कपिल-सुगत आदि अन्य कोई नहीं।

दरअसल, सामान्य सर्वज्ञसिद्धि और विशेष सर्वज्ञसिद्धि-ये वास्तव में सर्वज्ञसिद्धि के दो भाग नहीं हैं, अपितु दो सोपान हैं, दो स्तर हैं। पहले सामान्य सर्वज्ञसिद्धि की जाती है और उसके बाद में विशेष सर्वज्ञसिद्धि की जाती है। सामान्य सर्वज्ञसिद्धि में मात्र इतना सिद्ध किया जाता है कि कोई सर्वज्ञ हो सकता है, उसमें किसी प्रकार की कोई तकनीकी बाधा नहीं है; क्योंकि बहुत-से लोग यही नहीं मानते हैं कि कोई सर्वज्ञ हो भी सकता है। उनका मानना है कि सर्वज्ञ अर्थात् सब कुछ/अनन्त द्रव्यों और उनकी अनंतानन्त पर्यायों को जानने वाला वास्तव में कोई हो ही नहीं सकता है, सम्भव ही नहीं है, यदि कहीं किसी ने ऐसा कहा भी है तो वह केवल कथनमात्र है, अतिशयोक्ति मात्र है, वस्तुस्थिति नहीं है। अतः पहले इस मान्यता का निवारण करने के लिए सामान्य सर्वज्ञसिद्धि की जाती है कि सर्वज्ञ हो तो सकता है, उसमें किसी तरह की कोई बाधा नहीं है। विशेष सर्वज्ञसिद्धि में यह सिद्ध किया जाता है कि सर्वज्ञ हो ही नहीं सकता है, है भी। तथा वह अन्य कोई नहीं, अरिहंत ही है। क्योंकि बहुत-से लोग सर्वज्ञ हो सकता है-इस बात को सिद्धान्ततः स्वीकार करके भी यह नहीं स्वीकार कर पाते हैं कि सर्वज्ञ वास्तव में है भी। वे यही कहते रहते हैं कि ठीक है, हो तो सकता है, उसमें सिद्धान्तगत कोई बाधा नहीं है, लेकिन प्रायोगिक रूप से ऐसा कोई पुरुष नहीं है। अथवा हम निर्णयपूर्वक नहीं कह सकते हैं कि अरिहंत ही सर्वज्ञ हैं। अतः इस तरह की मान्यता का निराकरण करने के लिए विशेष सर्वज्ञसिद्धि की जाती है। दोनों प्रकार से सर्वज्ञसिद्धि करना अनिवार्य है, मात्र एक पर्याप्त नहीं है।

सामान्य सर्वज्ञसिद्धि

सामान्य सर्वज्ञसिद्धि हेतु जैनाचार्यों ने मुख्य रूप से निम्नलिखित तीन तर्क दिये हैं, जिन पर हमें बहुत ही गम्भीरता से चिन्तन करना चाहिए-

1. आत्मा सर्वज्ञ हो सकता है, क्योंकि उसका स्वभाव ज्ञान (जानना) है। स्वभाव में सीमा नहीं होती। जैसे

अग्नि सबको जलाती है, पानी सबको भिगोता है, उसी प्रकार ज्ञान सबको जानता है तथा जिस प्रकार आत्मा में ज्ञातृत्व है, उसी प्रकार जगत् के सर्व पदार्थों में ज्ञेयत्व(प्रमेयत्व) है। ऐसी स्थिति में ज्ञान यदि शुद्ध हो तो सकल ज्ञेयों को अवश्य ही जानेगा। दाहक किस दाह्य को नहीं जलाएगा? वह तो अनिवार्यतः सबको जलाएगा ही। उसी प्रकार ज्ञायक/ज्ञाता किस ज्ञेय को नहीं जानेगा? वह तो सबको अनिवार्यतः जानेगा ही।

सभी पदार्थों का ज्ञेयत्व हमें स्वयं भी अनुभव में आता है। उसे प्रत्यक्ष होने की ही आवश्यकता नहीं है, उसे अनुमान से भी जाना जा सकता है, क्योंकि सभी पदार्थ अनुमेय हैं तथा जो अनुमेय होता है, वह प्रत्यक्ष भी होता है।

जगत् में दो प्रकार के पदार्थ हैं-प्रत्यक्ष और परोक्ष। प्रत्यक्ष तो प्रत्यक्ष हैं ही, परोक्ष भी किसी न किसी के प्रत्यक्ष सिद्ध होते हैं, क्योंकि वे सभी अनुमेय हैं-सूक्ष्मान्तरितदूरार्था प्रत्यक्षाः कस्यचिद्यथा। अनुमेयत्वतोऽग्न्यादिरिति सर्वज्ञसंस्थितिः॥

- आप्तमीमांसा, 5

2. सर्वज्ञता के बाधक तत्त्व दो हैं- अज्ञान (आवरण) और रागादि (दोष)। इनका उचित साधना द्वारा शनैः शनैः क्षय होता देखा जाता है। इससे सिद्ध होता है कि किसी के इनका पूर्ण क्षय भी हो सकता है। जिसके हो जाए वही सर्वज्ञ है। जिसप्रकार स्वर्ण की अशुद्धि ताप देते-देते अन्ततोगत्वा पूर्ण क्षय हो जाती है और स्वर्ण पूर्ण शुद्ध हो जाता है, उसी प्रकार आत्मा की अशुद्धि भी उचित साधना द्वारा अन्ततोगत्वा पूर्ण क्षय हो जाती है और आत्मा पूर्ण शुद्ध हो जाता है। पूर्ण शुद्ध आत्मा अज्ञान (आवरण) और रागादि से रहित होता है। वही सर्वज्ञ है-दोषावरणयोर्हानिर्निःशेषास्त्यति-शायनात्। क्वचिद्यथा स्वहेतुभ्यो बहिरन्तर्म-लक्षयः॥

-आप्तमीमांसा, 4

3. सर्वज्ञ होने में किसी प्रकार का कोई बाधक प्रमाण नहीं मिलता। प्रत्यक्ष या अनुमान-किसी से भी सर्वज्ञ होने में किसी प्रकार की कोई बाधा सिद्ध नहीं होती।

कोई कहता है कि प्रत्यक्ष से सर्वज्ञ नहीं दिखाई देता-यह बाधा है न? तो जैनाचार्य उससे पूछते हैं कि सर्वज्ञ इस देश इस काल में नहीं दिखाई देते या सर्व देश सर्व काल में नहीं दिखाई देते? यदि इस देश इस काल में नहीं दिखाई देते तो यह कोई बात नहीं हुई, यह तो हम भी मानते हैं; किन्तु यदि तू यह कहता है कि सर्वज्ञ सर्व देश सर्व काल में ही नहीं दिखाई देते तो हमें बता कि तू सर्व देश सर्व काल को देखकर कहता है या बिना देखे? यदि बिना देखे कहता है तो तेरी बात अप्रामाणिक रही और यदि देखकर कहता है तो तू ही सर्वज्ञ सिद्ध हुआ।

पुनश्च, वह कहता है कि अनुमान से सर्वज्ञ की सिद्धि में बाधा आती है और वह इस प्रकार है- कोई भी पुरुष सर्वज्ञ नहीं हो सकता, क्योंकि वह पुरुष है। उससे पूछते हैं कि पुरुषत्व तीन प्रकार का होता है-रागादि से अदूषित पुरुषत्व, रागादि से दूषित पुरुषत्व और पुरुषत्व सामान्य। तुम किसकी बात कर रहे हो? यदि प्रथम की बात कर रहे हो तो तुम्हारा हेतु विरुद्ध है, क्योंकि रागादि से अदूषित पुरुषत्व सर्वज्ञता के बिना सम्भव नहीं है। यदि द्वितीय की बात कर रहे हो तो तुम्हारा हेतु सिद्धसाध्य है, क्योंकि रागादि से दूषित पुरुष को हम ही सर्वज्ञ नहीं मानते। और यदि तृतीय की बात कर रहे हो तो तुम्हारा हेतु संदिग्धविपक्षव्यावृत्ति है, क्योंकि सर्वज्ञत्व के साथ पुरुषत्व का कोई विरोध नहीं है।

इस प्रकार उक्त तर्कों से यह भलीभाँति सिद्ध हो जाता है कि सर्वज्ञ होना सम्भव है, सर्वज्ञ की सत्ता अवश्य ही है, उसमें सिद्धान्ततः किसी प्रकार की कोई बाधा नहीं है।

विशेष सर्वज्ञसिद्धि

सामान्य सर्वज्ञसिद्धि के उपरान्त विशेष सर्वज्ञसिद्धि हेतु जैनाचार्यों ने मुख्य रूप से एक ही खास बात बहुत जोर देकर कही है कि-

स त्वमेवासि निर्दोषो युक्तिशास्त्राविरोधिवाक्।
अविरोधो यदिष्टं ते प्रसिद्धेन न बाध्यते॥

-आप्तमीमांसा, 6

इसका आशय है कि-अरिहंत ही सर्वज्ञ हैं, क्योंकि वे निर्दोष हैं। कपिलादि सर्वज्ञ नहीं हैं, क्योंकि वे निर्दोष नहीं हैं, सदोष हैं।

अरिहंत निर्दोष हैं, क्योंकि उनके वचन युक्ति-शास्त्र से अबाधित हैं। कपिलादि निर्दोष नहीं हैं, क्योंकि उनके वचन युक्ति-शास्त्र से बाधित हैं।

मैं समझता हूँ कि यह बात बहुत ही ठोस है, अकाट्य है, हमें इस पर बहुत गम्भीरता से बारम्बार चिन्तन करना चाहिए। यह जैनाचार्यों की एक बहुत ही बड़ी देन है। इससे सर्वज्ञसिद्धि जैसा गूढ़-गम्भीर विषय हस्तामलकवत् स्पष्ट हो गया है। सर्वज्ञता को वचनों से समझने की यह एक अद्भुत, किन्तु सफल कोशिश है। यथा-

जिसके वचन युक्ति-शास्त्र-विरोधी हैं, वह निर्दोष नहीं हो सकता, वह तो नियम से सदोष (दोषावरण-सहित) ही होगा। और जो सदोष होगा, वह सर्वज्ञ नहीं हो सकता। कपिलादि इसीलिए सर्वज्ञ नहीं हो सकते, क्योंकि उनके वचन युक्ति-शास्त्र-विरोधी हैं। तथा अरिहंत इसीलिए सर्वज्ञ हैं, क्योंकि उनके वचन युक्ति-शास्त्र-अविरोधी हैं।

अन्त में, सर्वज्ञसिद्धि के इस महत्त्वपूर्ण विषय को समझकर हम स्वयं भी समस्त दोषावरणों से रहित होकर सर्वज्ञ हो जाएँ-इसी पवित्र भावना के साथ अपनी वाणी को विराम देता हूँ।

-Professor, Shri Lal Bahadur Rashtriya Sanskrit
Vidyapeetha New Delhi-110016



श्वासोच्छ्वास पर्याप्ति और जीव

डॉ. अरो. पी. चपलोट (सी.ए.)

जैनदर्शन के अनुसार जीव में परिणमन करने की विशेष शक्ति को पर्याप्ति कहा गया है। पर्याप्ति छह हैं—आहार, शरीर, इन्द्रिय, श्वासोच्छ्वास, भाषा और मन पर्याप्ति। जीव की यह विशेष शक्ति है जिससे वह लोक में फैले हुए पुद्गल ग्रहण करके उन्हें उक्त पर्याप्तियों में परिणत करता है। इन पर्याप्तियों में श्वासोच्छ्वास पर्याप्ति से जीव श्वासोच्छ्वास योग्य सूक्ष्म पुद्गलों को ग्रहण कर उन्हें श्वास और उच्छ्वास रूप में परिणमन करता है। यदि जीव इस पर्याप्ति को पूर्ण कर लेता है तो वह पर्याप्त कहलाता है एवं जो इस पर्याप्ति को पूर्ण नहीं कर पाता है वह अपर्याप्त कहलाता है।

संसार के समस्त प्राणी श्वासोच्छ्वास लेते हैं और छोड़ते हैं। सभी जीवों में श्वासोच्छ्वास की प्रक्रिया शरीर धारण के साथ होती है। देवगति में यह प्रक्रिया लम्बी अवधि में सम्पन्न होती है।

श्वास लेने और छोड़ने के तीन उपकरण हैं—

1. नाक से श्वास लेना
2. मुँह से श्वास लेना और
3. रोम छिद्र से श्वास लेना

त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय और पञ्चेन्द्रिय जीव उक्त तीनों से श्वास लेते हैं। द्वीन्द्रिय मुँह तथा रोम से श्वास लेते हैं। एकेन्द्रिय जीव मात्र रोम से श्वास लेते हैं।

त्रस और अन्य जीवों का श्वासोच्छ्वास

श्वास लेना और छोड़ना दोनों मिलकर श्वासोच्छ्वास बनता है, जिसकी तीन प्रक्रियाएँ हैं। पूरक (लेना) कुम्भक (रोककर रखना) और रेचक (छोड़ना) प्रक्रिया कहलाती है। सांस छोड़ने के बाद पुनः न लेने तक का काल रिक्तक कहलाता है।

देवताओं में अनुतर विमानवासी देवों के श्वास लेने और छोड़ने का काल अन्तर्मुहूर्त है, किन्तु कुम्भक

और रिक्तक का काल 33-33 पक्ष है। मनुष्य और तिर्यञ्चों का काल विभिन्न है। उनमें जहाँ पूरक तथा रेचक अधिक है वहाँ वेदना भी अधिक होती है तथा जहाँ कुम्भक और रिक्तक का काल अधिक है वहाँ साता अधिक होती है।

काल द्रव्य को श्वासोच्छ्वास द्वारा नापा गया है। सात प्राण का एक स्तोक, सात स्तोक का एक लव, 77 लव का एक मुहूर्त होता है। एक मुहूर्त में 3,773 श्वासोच्छ्वास होते हैं। एक बार श्वास लेने तथा छोड़ने को ही एक प्राण श्वासोच्छ्वास कहा गया है।

स्थावर तथा अन्य जीवों का श्वासोच्छ्वास

जीवों के श्वासोच्छ्वास के विषय में भगवतीसूत्र शतक 2, उद्देशक 1 में विस्तृत वर्णन है जो मननीय है। गौतम स्वामी ने प्रश्न किया है—हे भगवन्! पृथ्वी कायादि स्थावर जीवों का चैतन्य, आगम प्रमाण से सिद्ध है, किन्तु उनमें श्वासोच्छ्वास होता है या नहीं, क्योंकि जैसे मनुष्य, पशु आदि में श्वासोच्छ्वास का प्रत्यक्ष ज्ञान होता है उस तरह से पृथ्वीकायादि स्थावर जीवों का श्वासोच्छ्वास प्रत्यक्ष ज्ञात नहीं होता। प्रश्न स्वाभाविक है चूँकि पृथ्वीकायिक आदि स्थावर जीवों के दो भेद हैं सूक्ष्म और बादर। सूक्ष्म जीव तो छद्मस्थ के द्वारा देखा जाना भी सम्भव नहीं है, किन्तु उनका चैतन्य गुण तो आगम प्रमाण से सिद्ध है एवं यदि वे जीव हैं तो वे श्वासोच्छ्वास भी अवश्य लेते ही होंगे। इस प्रकार की शंका का एक अन्य मुख्य कारण है कि मेढक आदि कुछ जीव ऐसे हैं जिनका श्वास बहुत समय तक रुका हुआ दिखाई देता है एवं बहुत अन्तराल से उनके द्वारा श्वास लिया जाता है। अतः स्थावर जीवों के श्वास लेने के विषय में शंका होना स्वाभाविक और सुसंगत है।

इस प्रश्न के उत्तर में प्रभु महावीर ने फरमाया कि

गौतम! पृथ्वीकायादि स्थावर जीव भी बाह्य और आभ्यन्तर श्वासोच्छ्वास लेते हैं और छोड़ते हैं। फिर शंका होती है कि वे जीव श्वासोच्छ्वास रूप में किन पुद्गलों को ग्रहण करते हैं तथा वे किस प्रकार के होते हैं। इस प्रश्न के उत्तर में पन्नवणासूत्र के अट्टाईसवें आहार पद में यह बतलाया गया है कि वे पुद्गल दो वर्ण वाले, तीन वर्ण वाले यावत् पाँच वर्ण वाले होते हैं। वे एक गुण वाले यावत् अनन्त गुण वाले होते हैं। इसके साथ ही प्रभु ने यह भी फरमाया कि यदि व्यवधान नहीं हो तो वे छहों दिशाओं से श्वासोच्छ्वास के पुद्गलों को ग्रहण करते हैं और यदि व्यवधान हो तो, कदाचित् तीन दिशाओं से कदाचित् चार दिशाओं से और कदाचित् पाँच दिशाओं से श्वासोच्छ्वास लेते हैं।

वायुकाय का श्वासोच्छ्वास

इस विषय में गौतम स्वामी द्वारा व्यक्त शंका का समाधान करते हुए प्रभु महावीर ने फरमाया कि जो वायुकायिक जीव हैं वे रोम मात्र से श्वास के ही पुद्गल ग्रहण करते हैं, वायुकाय के पुद्गल नहीं लेते, क्योंकि वायु वायु को रोम से नहीं खींच सकती है। वायुकाय से जिनकी अवगाहना छोटी है वे भी रोम से मात्र श्वास पुद्गल लेते हैं। वायुकाय जीव है इसलिए उसे भी श्वासोच्छ्वास की आवश्यकता रहती है। किन्तु जो वायु श्वासोच्छ्वास के रूप में ग्रहण होती है, वह निर्जीव

है। ये निर्जीव पुद्गल औदारिक और वैक्रिय शरीर के पुद्गलों की अपेक्षा अनन्त गुणा प्रदेश वाले होने से सूक्ष्म हैं। इसलिए श्वासोच्छ्वास रूप वायु जड़ है, जो जीव के काम आने वाली मुख्य आठ कर्मण वर्गणाओं में से एक महत्त्वपूर्ण वर्गणा है, जिसे विज्ञान प्राण वायु (प्राण ऑक्सीजन) कहता है।

इसी प्रकार अन्य स्थावर जीव भी श्वासोच्छ्वास के पुद्गल को ही श्वास के रूप में ग्रहण करते हैं।

क्या श्वासोच्छ्वास के पुद्गल जीव हैं ?

श्वासोच्छ्वास के रूप में जीवों द्वारा जो वायुकाय के पुद्गल ग्रहण किये जाते हैं वे निर्जीव हैं अतः उन पुद्गलों को श्वासोच्छ्वास की आवश्यकता नहीं रहती है। ये पुद्गल अनन्त सूक्ष्म होते हैं।

कबूतर एक मिनट में 34 बार, चिड़िया 30 बार, बत्तख 22 बार, कुत्ता 28 बार, घोड़ा 26 बार, बकरी 24 बार, बिल्ली तथा कछुआ 5 बार, सर्प 19 बार, हाथी 22 बार, मनुष्य 15 बार श्वासोच्छ्वास लेता है, इसलिए कछुए चार-चार सौ वर्ष के पाये जाते हैं।

जो जीव अत्यन्त दुःखी हैं वे निरन्तर श्वास लेते हैं और छोड़ते हैं। नारकीय जीव निरन्तर श्वासोच्छ्वास लेते हैं।

-377, के वन रोड, भूपालपुर, उदयपुर (राज.)

बीत रहा मानुष जन्म

श्रीमती अमिता बाबेल

बीत रहा यह मानुष्य जन्म
आयुष्य का हर क्षण
कटघरे में खड़ा करके
आत्म को पूछ रहा मुझसे कई प्रश्न
क्यूँ मिली ये आर्य भूमि
धर्ममय ऊँचा कुल
दुर्लभ जिनवाणी और निर्ग्रन्थ गुरु-दर्शन
विषय-भोगों में खोने को ?

या अपने दुःख रोने को ?
प्रमाद में सोने या राग-द्वेष के बीज बोने को ?
नहीं था कोई प्रत्युत्तर
आत्मा मेरी हार गयी
मुट्टी भर तुच्छ सुख के खातिर
खोया मोल सुलभ मिले
उन दुर्लभ बोलों का
खोया खज़ाना अनन्त सुखों का
अब समझा ये पागल मन।।

-सहायक लेखाधिकारी-द्वितीय, राजसमन्द

उत्तराध्ययनसूत्र में पर्यावरणीय चेतना एवं संरक्षण

डॉ. एन. के. खींचा

उत्तराध्ययनसूत्र जैन आगमों में प्रथम मूल आगम है। इसे जैन संस्कृति की गीता भी कहा जा सकता है। उत्तराध्ययन में चेतना के आयामों की सबल अभिव्यक्ति हुई है। इसका उद्देश्य एक ऐसे समाज की रचना करना है जिसमें इन्द्रिय भोगों की इच्छाओं¹, तृष्णाओं² पर रोक लगे। इच्छा से मानसिक तनाव होता है जो कि प्रदूषणकारक है। जिसके लिए भोगेच्छाओं का शमन करना आवश्यक है। इसके लिए संयममय जीवन जरूरी है। जैन संस्कृति के अनुसार इन्द्रिय भोग क्षणिक एवं नश्वर होते हैं। उत्तराध्ययनसूत्र में कहा गया है—**मनुष्य जीवन अत्यन्त दुर्लभ है।**

उत्तराध्ययन का शिक्षण है—**स्व को जीतो⁵ यही परम विजय है।⁶** बाहरी युद्धों के बजाय अन्तरङ्ग के राग-द्वेष रूपी कषायों को जीतो⁷ राग-द्वेष से मानसिक तनावात्मक दुःख होता है।, वस्तुओं से आसक्ति को छोड़कर संयम रूपी आश्रय लें, यही रक्षा-स्थल है, यही उत्तम शरण है, यही पर्यावरण संरक्षण का अनुपम मार्ग है। संयम⁸ से व्यक्ति लाभ-हानि, मान-अपमान, निंदा-स्तुति आदि द्वन्द्वों में तटस्थ/निरपेक्ष हो जाता है। अतः दुर्लभ अवसर को समझें, प्रमाद⁹, आलस्य, लापरवाही न करें। जो-जो रात्रियाँ बीत रही हैं, वे वापस नहीं आ सकेंगी,¹⁰ अतः अविवेकी न बनें¹¹ लापरवाही एवं प्रमाद की रातें व्यर्थ ही चली जाती हैं। अतः अनासक्त बनें¹² निर्लिप्तता धारण करें। आर्जव (निष्कपटता) से सरलता, मृदुता तथा नैतिकता के साधक बन सकते हैं। आचरण के सुयोग्य पथगामी बनें। **ताकि पर्यावरण चेतना एवं संरक्षण स्वतः ही हो सकेगा।**

जैन संस्कृति में मनुष्य जीवन की नश्वरता का उद्बोधन उत्तराध्ययनसूत्र के दशम अध्ययन में किया गया है। जहाँ यह भी समझाया गया है कि समय (क्षण) मात्र का भी प्रमाद (आलस्य) न करें। जिसे कई उदाहरणों से स्पष्ट किया गया है।

दुम पत्तए.....पमायए ।।1।।

कुसग्गे पमायए ।।2।।

जीवन की नश्वरता, क्षण भंगुरता, अस्थिरता की पके हुए द्रुम-पत्र से तथा कुश के अग्र भाग पर लटकी हुई ओस (Dew) की बूँद से तुलना की गई है।¹³ प्रतिक्षण सब प्रकार से आयु क्षीण हो रही है। यह असंस्कृत जीवन है।¹⁴ अतः क्षण भर का भी प्रमाद न करें। मनुष्य जन्म को जैन संस्कृति में दुर्लभ बताया गया है। दुर्लभ जीवन में आर्यत्व (उत्तम आचार-विचार वाले) का पालन करें। अनार्य-असंस्कारी, दस्यु, चोर, लुटेरे, म्लेच्छ न बनें। कुतीर्थिक न बनें। विवेकवान बनें। चित्त शुद्ध रखकर भक्ष्य-अभक्ष्य, गम्य-अगम्य, जीव-अजीव एवं संस्कारहीनता का विचार कर पर्यावरण का संरक्षण करें।

इसी प्रकार अहंकार क्रोध, प्रमाद, रोग एवं आलस्य के कारण रस-लोलुप¹⁵ एवं अजितेन्द्रिय न बनें। (उत्तराध्ययनसूत्र, अध्ययन 11, गाथा 1-6) परिग्रह एवं कामभोगों तथा कषाय दोषों से मुक्त बनें। (41) तथा अभय दाया भवाहि य (उत्तराध्ययनसूत्र, अध्ययन 11, गाथा 17) प्राणियों के आप अभय दाता¹⁶ बनें। मन, वचन और क्रिया से हिंसा निवृत्ति कारक, (माहणे) बनें। (21) त्रस तथा स्थावर सभी जीवों पर समदृष्टि रखें। समस्त प्राणियों के प्रति दया से अनुकम्पाशील बनें।¹⁷ (उत्तराध्ययनसूत्र, अध्ययन 21, गाथा 13)

उत्तराध्ययनसूत्र के बाईसवें अध्ययन 'रथनेमीय' में विवाह के उपलक्ष्य में पशु-पक्षियों को बाँधकर (Grand Dinner) भोज के उपक्रम की भनक पाकर बाड़े में बाँधे पशुओं का आर्तनाद सुनकर, अरिष्टनेमि करुणार्द्र होकर बिना विवाह किये लौट गये, सभी पशु-पक्षियों को बन्धन मुक्त करा दिया और स्वयं ने साधुवेश धारण कर संयम लेकर सिद्ध-बुद्ध होने के लिए तपस्यारत हो गये।

उत्तराध्ययनसूत्र, अध्ययन 22, गाथा 14-26 में मूक पशु-पक्षियों को हत्या से बचाकर, जीवात्मा के प्रति अनुग्रह, स्नेह, करुणा, वासत्य एवं अहिंसा का पाठ अरिष्टनेमि ने स्वयं के विवाह स्थल पर पढ़ाया। जीवों की हिंसा, महारम्भ को रोक कर पर्यावरण चेतना एवं संरक्षण का जैन संस्कृति में अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया।

वस्तुतः तीर्थङ्कर महावीर के समय दो संस्कृतियाँ भारत देश में विद्यमान थीं। (1) बाह्य हिंसा प्रधान एवं लौकिक कामना मूलक तथा स्वर्गादि कामनाओं से प्रेरित यज्ञ (याज्ञिक) ब्राह्मण संस्कृति एवं (2) श्रमण संस्कृति (जैन-जिन बनने की) जिसमें तप, संयम, समत्व में यत्नाचार के माध्यम से त्याग प्रधान, भावयज्ञ संस्कृति रही। ब्राह्मण संस्कृति जहाँ कर्मकाण्ड पर जोर देती थी, वहाँ श्रमण संस्कृति में सम्यग्ज्ञान, दर्शन, तप, त्याग, संयम शीलता पर बल दिया गया है, जो पर्यावरण संस्कृति की अनुपम मिसाल है। जो त्रस और स्थावर जीवों की मन, वचन और काय से हिंसा नहीं करते, जो क्रोध, लोभ, भय से असत्य वचन नहीं

बोलते, जो सचित्त अथवा अचित्त¹⁸ को अविवेकी होकर ग्रहण नहीं करते, शील का पालन करते हैं। वे श्रमण संस्कृति (जैन संस्कृति) के प्रतीक एवं पालनकर्ता हैं। (उत्तराध्ययनसूत्र, अध्ययन 26, गाथा 1-44) किसी भी प्राणी को त्रास¹⁹ नहीं पहुँचाना चाहिए। समस्त प्राणियों पर मित्रता²⁰ का भाव रखना चाहिए। (मेत्ति भूएसु कप्पए (उत्तराध्ययनसूत्र 6.2) अतः असंयम से निवृत्ति और संयम में प्रवृत्ति करनी चाहिए। असंजमे नियतिं च संजमे य पवत्तणं (उत्तराध्ययनसूत्र 31.2), क्योंकि विवेक²¹ ही जीवन है।

सन्दर्भ ग्रन्थ-सूची

- 1 उत्तराध्ययनसूत्र 29/14, 9/48
- 2 वही, 6/12, 8/16, 9/49
- 3 वही, 14/39
- 4 वही, 24/26
- 5 वही, 34/20
- 6 वही, 1/15, उत्तराध्ययनसूत्र, 9/34
- 7 वही, 32/7, 9/36
- 8 वही, 25/32
- 9 वही, 4/1, 19/115
- 10 वही, 9/48, 14/25
- 11 वही, 10/26, 34/21
- 12 वही, 31/2, 29/45
- 13 वही, 4/1, आयरो 813/34
- 14 वही, 4/1
- 15 वही, 2/3
- 17 वही, 21/13
- 18 वही, 21/13
- 19 वही, 3/6, 2/27, 4/3
- 20 वही, 6/2
- 21 वही, 23/25

-सीनियर फैलो (आईसीएसएसआर) नई दिल्ली

जिनवाणी पर अभिमत

श्री धनराज छाजेड़

जैन जीवनशैली विशेषाङ्क प्रथम पृष्ठ से लगाकर अन्तिम पृष्ठ तक पढ़ने योग्य है। इसमें जीवन जीने की कला का खज़ाना भरा पड़ा है। इस अंक को मैंने अमूल्य निधि समझकर सम्भाल कर रखा है। पूरे परिवार को पढ़ने को प्रेरणा करता हूँ। मैंने बहुत विशेषाङ्क देखे हैं और पढ़े हैं, किन्तु इसकी बात ही अलग है। इस अङ्क को बनाने में जिन्होंने भी सहयोग किया, उन्हें बहुत-बहुत धन्यवाद।

-मालेगाँव (महाराष्ट्र)

आओ मिलकर कर्मों को समझें (11) (श्रुतज्ञान एवं अवधिज्ञान के भेद)

श्री धर्मचन्द जैन

जिज्ञासा— मिथ्या श्रुतज्ञान किसे कहते हैं?

समाधान—मिथ्यादृष्टि जीवों के श्रुतज्ञान को मिथ्या श्रुतज्ञान कहते हैं। मिथ्या श्रुतज्ञान भी दो प्रकार का है—

1. द्रव्य मिथ्या श्रुतज्ञान, 2. भाव मिथ्या श्रुतज्ञान।

1. द्रव्य मिथ्या श्रुतज्ञान अर्थात् मिथ्यादृष्टि जीवों द्वारा रचित शास्त्र, ग्रन्थ आदि का ज्ञान द्रव्य मिथ्या श्रुतज्ञान कहलाता है। जैसे—कुरान, बाइबिल, गीता, रामायण, त्रिपिटक आदि।

2. भाव मिथ्या श्रुतज्ञान अर्थात् मिथ्यादृष्टि जीवों के द्वारा ग्रहण किया गया ज्ञान भावमिथ्या श्रुतज्ञान कहलाता है।

सम्यक् श्रुतज्ञान तथा मिथ्याश्रुतज्ञान के उपर्युक्त चारों भेदों में मुख्यता तो भाव की ही है। सम्यक् श्रुत, मिथ्याश्रुत का यह विवेचन स्थूल दृष्टि से किया हुआ समझना चाहिए। यदि सम्यग्दृष्टि है तो मिथ्यात्वी के द्वारा बनाये गये शास्त्रों को पढ़कर-सुनकर भी सम्यक्त्वी तो सम्यक्त्व का पोषण ही करता है, अर्थात् उसके लिए तो मिथ्या श्रुत ज्ञान भी सम्यक् श्रुतज्ञान में परिवर्तित हो जाता है।

दूसरी ओर सम्यक्त्वी द्वारा रचे गये शास्त्रों के वाचन-पठन से भी मिथ्यादृष्टि जीव तो मिथ्यात्व का ही पोषण कर लेता है। मिथ्यादृष्टि के पास तो वह सम्यक् श्रुत भी मिथ्याश्रुत में बदल जाता है। आचाराङ्गसूत्र में कहा भी है—‘जे आसवा ते परिसवा, जे परिसवा ते आसवा।’ अर्थात् जो आस्रव के, कर्मबन्ध के स्थान हैं, उन्हें सम्यग्दृष्टि अपने सम्यग्दृष्टिकोण से संवर-निर्जरा का स्थान बना लेता है तथा मिथ्यादृष्टि जीव संवर-निर्जरा के स्थानों को भी अपनी दृष्टि की विपरीतता के

कारण आस्रव के स्थान बना लेता है, इसलिए कहा जाता है कि व्यक्ति का स्वयं का दृष्टिकोण, स्वयं की सोच, स्वयं का नज़रिया अत्यन्त महत्त्वपूर्ण होता है।

जिज्ञासा— सादि श्रुतज्ञान, अनादि श्रुतज्ञान किसे कहते हैं?

समाधान—जिस श्रुतज्ञान की आदि है, प्रारम्भ है, शुरुआत है, उसे सादि श्रुतज्ञान कहते हैं तथा जिस श्रुतज्ञान की आदि नहीं है, अनादि काल से चला आ रहा है, उसे अनादि श्रुतज्ञान कहते हैं।

जिज्ञासा— सपर्यवसित तथा अपर्यवसित श्रुतज्ञान किसे कहते हैं?

समाधान—जिस श्रुतज्ञान का अन्त होता है, उसे सपर्यवसित श्रुतज्ञान कहते हैं तथा जिस श्रुतज्ञान का कभी अन्त नहीं होता है, उसे अपर्यवसित श्रुतज्ञान कहते हैं।

जिज्ञासा— सादि-अनादि तथा सपर्यवसित-अपर्यवसित श्रुतज्ञान को द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव की अपेक्षा किस प्रकार समझ सकते हैं?

समाधान—1. द्रव्य की अपेक्षा—मिथ्यात्व को छोड़कर समकित को प्राप्त करना श्रुतज्ञान की आदि है तथा समकित से वापस गिरकर मिथ्यात्व में आ जाने पर श्रुतज्ञान का अन्त होने से वह सपर्यवसित श्रुत ज्ञान कहलाता है। अनेक जीवों की अपेक्षा श्रुतज्ञान अनादि काल से चला आ रहा है तथा अनन्तकाल तक प्रवाह रूप में चलता रहेगा, अतः अपर्यवसित भी है।

2. क्षेत्र की अपेक्षा—भरत-ऐरावत क्षेत्र में सम्यक् श्रुत का प्रारम्भ होने से वह सादि श्रुतज्ञान है। भरत क्षेत्र में ऋषभदेव भगवान से श्रुतज्ञान की उत्पत्ति होने से वह सादि है। महाविदेह क्षेत्र में सदाकाल श्रुतज्ञान चलते रहने से वहाँ अनादि सम्यक् श्रुतज्ञान कहलाता है।

3. काल की अपेक्षा-भरत-ऐरावत में उत्सर्पिणी-अवसर्पिणी काल होने से तीसरे आरे में सम्यक् श्रुत का प्रारम्भ होने से वह सादि श्रुत कहलाता है तथा महाविदेह क्षेत्र में नो उत्सर्पिणी नो अवसर्पिणी काल होने से सदैव सम्यक् श्रुत विद्यमान होता है, इसलिए वह अनादि श्रुतज्ञान कहलाता है। उत्सर्पिणी के चौथे आरे में तथा अवसर्पिणी के पाँचवें आरे के अन्त में सम्यक् श्रुत का विनाश होने से वह सपर्यवसित सम्यक् श्रुत कहलाता है तथा महाविदेह क्षेत्र में सदाकाल रहने से वह अपर्यवसित सम्यक् श्रुतज्ञान कहलाता है।

4. भाव की अपेक्षा-श्रुतज्ञान का उपयोग करते समय वह सादि श्रुतज्ञान कहलाता है तथा अन्य प्रवृत्ति में उपयोग होने से वह श्रुतज्ञान सपर्यवसित कहलाता है।

श्रुतज्ञानावरणीय कर्म की क्षयोपशम रूप लब्धि जीव को अनादि काल से प्राप्त होने से अनादि तथा अभव्य जीवों को मिथ्याश्रुत अनन्तकाल तक प्राप्त रहने से अपर्यवसित श्रुतज्ञान कहलाता है।

जिज्ञासा- गमिक श्रुतज्ञान तथा अगमिक श्रुतज्ञान किसे कहते हैं?

समाधान-जिन शास्त्रों में बार-बार समान पाठ, अलावे आते हैं, वे गमिक श्रुतज्ञान कहलाते हैं। जैसे-दृष्टिवाद, पक्खीसूत्र आदि।

जिन शास्त्रों में बार-बार समान पाठ, अलावे नहीं आते हैं, उन्हें अगमिक श्रुतज्ञान कहते हैं। जैसे-आचाराङ्गसूत्र, उत्तराध्ययनसूत्र आदि।

जिज्ञासा- अङ्गप्रविष्ट श्रुतज्ञान तथा अङ्गबाह्य श्रुतज्ञान किसे कहते हैं?

समाधान-तीर्थंकर भगवन्तों की वाणी सुनकर गणधर भगवन्त अपनी गणलब्धि से, उत्कृष्ट क्षयोपशम से जिन अङ्गशास्त्रों की रचना करते हैं, उन्हें अङ्गप्रविष्ट श्रुतज्ञान कहते हैं। जैसे-आचाराङ्गसूत्र, सूत्रकृताङ्गसूत्र आदि बारह अङ्गशास्त्र।

स्थविर आचार्यों, पूर्वधर-आचार्यों द्वारा अङ्गशास्त्रों के आधार पर जिन शास्त्रों की रचना की

जाती है, उन्हें अङ्गबाह्य श्रुतज्ञान कहते हैं। जैसे-उत्तराध्ययन, जीवाभिगम, दशवैकालिक, प्रज्ञापना आदि।

श्रुतज्ञान में उपर्युक्त चौदह भेद कार्य में कारण का आरोप करके बतलाये गये हैं। वास्तव में देखा जाये तो श्रुतज्ञान जीव को उसके स्वयं के क्षयोपशम से, स्वयं के प्रयत्न से होता है, किन्तु उस ज्ञान की प्राप्ति में उपर्युक्त चौदह प्रकार का श्रुतज्ञान सहायक बनता है, कारण बनता है, निमित्त बनता है। इन चौदह प्रकार के श्रुतज्ञान से जीव की अन्तर दृष्टि विकसित होती है, नवतत्त्वों का एवं षट् द्रव्यों का वास्तविक बोध होता है, जीवन जीने का सही दृष्टिकोण, सही समझ इनसे प्राप्त होती है, इसलिए इन भेदों को श्रुतज्ञान रूप बतलाया है।

(अवधि ज्ञान)

जिज्ञासा- अवधि ज्ञानावरणीय कर्म किसे कहते हैं?

समाधान-जो कर्म अवधिज्ञान उत्पन्न होने में बाधक बने, अवधिज्ञान पर जो आवरण लाये, उसे अवधिज्ञानावरणीय कर्म कहते हैं। जिन जीवों को जब तक अवधिज्ञान उत्पन्न नहीं होता है तब तक उन जीवों के लिए यह प्रकृति सर्वघाती कहलाती है, किन्तु जब किन्हीं सन्नी जीवों को यह ज्ञान प्राप्त हो जाता है, तब उनके लिए यह प्रकृति देशघाती कहलाती है।

जिज्ञासा- अवधिज्ञान किसे कहते हैं?

समाधान-1. मन और इन्द्रियों की सहायता के बिना सीधे आत्मा से रूपी पदार्थों को जानना अवधि ज्ञान कहलाता है।

2. द्रव्य, क्षेत्र, काल तथा भाव की मर्यादा के साथ रूपी पदार्थों को सीधे आत्मा से जानना अवधिज्ञान कहलाता है।

3. अवधिज्ञानावरणीय कर्म के क्षयोपशम से रूपी पदार्थों अर्थात् पुद्गलों को सीधे आत्मा से मर्यादित रूप से जानना अवधि ज्ञान कहलाता है।

जिज्ञासा- अवधिज्ञान किन-किन जीवों को प्राप्त हो सकता है?

समाधान- अवधिज्ञान चारों गति के सन्नी एवं पर्याप्तक जीवों को प्राप्त हो सकता है। नारकी तथा देवताओं में तो भव प्रत्यय होने के कारण बाटा बहती अवस्था में तथा उत्पत्ति के प्रथम समय में ही अवधिज्ञान हो जाता है। जो पिछले भव-मनुष्य-तिर्यञ्च से लाते हैं, उनके तो साथ ही रहता है। जो पिछले भव से नहीं भी लाते हैं तो वे भी उन्हें नारकी देवता का भव प्रारम्भ होने के प्रथम समय में ही हो जाता है। मनुष्यों में जो कर्मभूमिज होते हैं, उन्हें पर्याप्त होने के बाद कभी भी हो सकता है। युगलिक मनुष्य तथा युगलिक तिर्यञ्चों को अवधिज्ञान नहीं होता है। एकेन्द्रिय, बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चौरैन्द्रिय तथा असंज्ञी पञ्चेन्द्रिय जीवों को भी अवधिज्ञान नहीं होता है।

जिज्ञासा- अवधिज्ञान से कम से कम कितने क्षेत्र के रूपी पदार्थों को जाना जा सकता है?

समाधान- अवधिज्ञान से कम से कम जितने क्षेत्र के रूपी पदार्थों को जान सकते हैं, उसे शास्त्रकारों ने नन्दी सूत्र में बतलाया है कि तीन समय के आहारक, सूक्ष्मपनक जीव (सूक्ष्म वनस्पतिकायिक) के शरीर की जितनी अवगाहना होती है, उतने क्षेत्र में रहे हुए रूपी पदार्थों को जान सकते हैं। इसे एक उदाहरण के द्वारा स्पष्ट किया गया है-

मानो एक हजार योजन की अवगाहना वाला महाशरीर वाला मत्स्य है, उसने अपने जीवन में सूक्ष्मपनक शरीर के योग्य गति, जाति, आयु आदि कर्मों का बँध कर लिया। जब मृत्यु होने में दो समय शेष रह गये तब वह मत्स्य पहले समय में अपने शरीर से सम्बन्धित आत्म-प्रदेशों को संकुचित करके अंगुल के असंख्यातवें भाग मात्र आत्मप्रदेशों का प्रतर बनाता है। दूसरे समय में उन आत्म-प्रदेशों को और भी संकुचित कर सूची रूप बना लेता है। मत्स्य भव की आयु पूर्ण होने पर वह आत्म-प्रदेशों को विशेष प्रयत्न से संकोच कर अंगुल के असंख्यातवें भाग मात्र सूक्ष्मपनक के रूप में मत्स्य के भव के छोड़े हुए शरीर के किसी एक भाग में जाकर उत्पन्न हो जाता है।

सूक्ष्मपनक के भव के पहले समय में वह सर्वबन्ध करता है। दूसरे समय में देशबन्ध प्रारम्भ करता है। तीसरे समय में उस सूक्ष्मपनक जीव की जितनी अवगाहना होती है, उतना अवधिज्ञान का जघन्य क्षेत्र होता है। अर्थात् उतने क्षेत्र में रहे हुए पुद्गल स्कन्धों को अवधिज्ञानी जान सकता है।

जिज्ञासा- अवधिज्ञान के जघन्य विषय में सूक्ष्मपनक जीव के तीसरे समय का आहारक जितना क्षेत्र ही क्यों बतलाया है?

समाधान- सूक्ष्मपनक अर्थात् निगोद के जीव के पहले तथा दूसरे समय का बना हुआ शरीर अति सूक्ष्म होने के कारण अवधिज्ञान का जघन्य विषय का क्षेत्र नहीं बन पाता है तथा चौथे समय में वह शरीर अपेक्षाकृत अधिक बड़ा हो जाता है, इसलिए सूत्रकार ने तीसरे समय के आहारक सूक्ष्म निगोदिया जीव के शरीर प्रमाण क्षेत्र को ही अवधिज्ञान का जघन्य क्षेत्र बतलाया है।

जिज्ञासा- अवधिज्ञान का उत्कृष्ट क्षेत्र कितना होता है?

समाधान- अग्निकाय के सूक्ष्म, बादर तथा इनके अपर्याप्त और पर्याप्त इन चारों प्रकार के जीवों की उत्कृष्ट संख्या को अवधिज्ञानी के शरीर से प्रारम्भ कर एक दिशा में, एक श्रेणि में स्थापित कर दिया जाये। ऐसा करने पर वह श्रेणि इतनी लम्बी होगी कि लोकाकाश से भी आगे अलोकाकाश में पहुँच जायेगी। उस श्रेणि को सब दिशाओं में घुमाया जाये तो लोक प्रमाण असंख्य क्षेत्र खण्ड अलोक मिलाकर एक घनवृत्त बनता है। इतने क्षेत्र में यदि रूपी पदार्थ होते तो उन सब को जानने की क्षमता उत्कृष्ट अवधिज्ञान में होती है, इसलिए सम्पूर्ण लोक तथा लोक प्रमाण असंख्य खण्डों के बराबर अवधिज्ञान का उत्कृष्ट क्षेत्र माना जाता है। यद्यपि समस्त अग्निकायिक जीवों की श्रेणि सूची कभी किसी ने बनाई नहीं है और न ही उसका बनना सम्भव है।

जिज्ञासा- जब अलोक में रूपी पदार्थ है ही नहीं, तो फिर लोक प्रमाण असंख्य खण्डों को उत्कृष्ट अवधिज्ञान से जानने की बात कहने का क्या तात्पर्य है?

समाधान- यद्यपि यह बात सही है कि अलोक में मात्र

आकाश-प्रदेश हैं, रूपी पदार्थ बिल्कुल भी नहीं हैं, फिर भी उत्कृष्ट अवधिज्ञान का सामर्थ्य बतलाने के लिए यह बात कही है कि वह सम्पूर्ण लोक में रहे हुए रूपी पदार्थों को तथा अलोक में लोक प्रमाण असंख्य खण्डों में यदि रूपी पदार्थ होते तो उनको भी जानने की सामर्थ्य रखता है।

इस सामर्थ्य से उस जीव को यह लाभ होता है कि वह लोक प्रमाण क्षेत्र में रहे हुए रूपी पदार्थों को अधिक विशुद्धता से, अधिक गहराई से, अधिक स्पष्टता से जानता है। जिन जीवों को ऐसा उत्कृष्ट अवधिज्ञान, परम अवधिज्ञान प्राप्त हो जाता है, उन्हें अन्तर्मुहूर्त्त में ही केवल ज्ञान प्राप्त हो जाता

है। अतः यह स्पष्ट है कि ऐसा उत्कृष्ट अवधिज्ञान प्रायः- प्रायः चारित्रवान् अप्रमत्त संयत को होता है।

जिज्ञासा- मध्यम अवधिज्ञान किसे कहते हैं ?

समाधान- जघन्य तथा उत्कृष्ट अवधिज्ञान के बीच का क्षेत्र मध्यम अवधिज्ञान कहलाता है। जैसे-जैसे अवधिज्ञान का क्षेत्र बढ़ता जाता है, वैसे-वैसे काल की अपेक्षा से भी अवधिज्ञान का विषय बढ़ता जाता है। इसे निम्नांकित तालिका से आसानी से समझा जा सकता है-

जिज्ञासा- किन-किन गति के जीवों को कितने-कितने क्षेत्र विषयक अवधिज्ञान हो सकता है ?

क्षेत्र	काल
1. अंगुल का असंख्यातवाँ भाग	1. आवलिका का असंख्यातवाँ भाग
2. अंगुल का संख्यात भाग	2. आवलिका का संख्यात भाग
3. एक अंगुल प्रमाण	3. आवलिका से कुछ कम
4. अंगुल पृथक्त्व	4. एक आवलिका
5. एक हाथ	5. अन्तर्मुहूर्त्त
6. एक कोस	6. कुछ कम एक दिन
7. एक योजन	7. दिवस पृथक्त्व
8. 25 योजन	8. कुछ कम एक पक्ष
9. भरत क्षेत्र	9. अर्धमास
10. जम्बूद्वीप	10. एक मास से कुछ अधिक
11. मनुष्य लोक	11. एक वर्ष
12. रुचकवर द्वीप तक	12. वर्ष पृथक्त्व
13. संख्यात द्वीप तक	13. संख्यात काल
14. सम्पूर्ण लोक	14. देशोन पत्योपम
15. सम्पूर्ण लोक के साथ असंख्यात लोक प्रमाण अलोक क्षेत्र (इतने क्षेत्र प्रमाण में रहे हुए रूपी पदार्थों को जान सकते हैं।)	15. सम्पूर्ण लोक के साथ असंख्यात लोक प्रमाण अलोक क्षेत्र (इतने क्षेत्र प्रमाण में रहे हुए रूपी पदार्थों को जान सकते हैं।)

समाधान- 1. नारकी जीव जघन्य आधा कोस तथा उत्कृष्ट चार कोस क्षेत्र के रूपी पदार्थों को अवधिज्ञान से जान सकते हैं। 2. देवता-जघन्य अंगुल के असंख्यातवें भाग क्षेत्र से लेकर उत्कृष्ट सम्पूर्ण त्रसनाड़ी में रहे हुए रूपी पदार्थों को अवधिज्ञान से जान सकते हैं। जघन्य अवधिज्ञान देवों में उत्पत्ति के समय होता है तथा उत्कृष्ट अवधिज्ञान पाँच अनुत्तर विमान के देवों को होता है। 3-4. मनुष्य-तिर्यञ्च में जघन्य अवधिज्ञान का क्षेत्र सूक्ष्म निगोद के उत्पत्ति के तीसरे समय के आहारक जीव की अवगाहना के बराबर होता है। उत्कृष्ट क्षेत्र-तिर्यञ्चों में असंख्यात द्वीप समुद्र तक के रूपी पदार्थों को जानना होता है जबकि मनुष्य में सम्पूर्ण लोक तथा अलोक में भी लोक प्रमाण असंख्यात खण्ड क्षेत्र उत्कृष्ट अवधिज्ञान का क्षेत्र होता है।

जिज्ञासा- किन-किन गति के जीवों को कितने-कितने काल विषयक अवधिज्ञान हो सकता है?

समाधान- 1. नारकी जीवों को जघन्य अवधिज्ञान एक दिवस से कुछ कम काल का तथा उत्कृष्ट अनेक दिवस काल तक के भूत-भविष्य का अवधिज्ञान हो सकता है। 2. तिर्यञ्चों में जघन्य-आवलिका का असंख्यातवाँ भाग काल विषयक तथा उत्कृष्ट पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग काल तक के भूत-भविष्य का अवधिज्ञान हो सकता है। 3. देवताओं में जघन्य-आवलिका का असंख्यातवाँ भाग काल विषयक तथा उत्कृष्ट किञ्चित् न्यून पल्योपम काल तक के भूत-भविष्य का अवधिज्ञान हो सकता है। 4. मनुष्य में जघन्य-आवलिका का असंख्यातवाँ भाग काल का तथा उत्कृष्ट असंख्यात उत्सर्पिणी-अवसर्पिणी प्रमाण काल तक के भूत-भविष्य का अवधिज्ञान हो सकता है।

चारों गति के जीवों में अपने-अपने काल विषयक अवधिज्ञान का जो जघन्य उत्कृष्ट प्रमाण बतलाया है, उसका तात्पर्य यह है कि इतने-इतने काल के भूत-भविष्य की रूपी पदार्थों की पर्यायों को वे जीव अवधिज्ञान से प्रत्यक्ष जान सकते हैं।

जिज्ञासा- क्या तीर्थङ्कर बनने वाले के अलावा अन्य जीव भी मनुष्य के भव में उत्पन्न होते समय पिछले भव से अवधिज्ञान साथ में ला सकते हैं?

समाधान- तीर्थङ्कर बनने वाले तो नियम से अवधिज्ञान पिछले (नारकी या देवता) के भव से लाते ही हैं, किन्तु तीर्थङ्करों के अलावा अन्य मनुष्य भी अवधिज्ञान साथ में ला सकते हैं। क्योंकि प्रज्ञापना सूत्र के 18वें कायस्थिति पद में अवधिज्ञान की उत्कृष्ट कायस्थिति 66 सागरोपम झाड़री बतलाई है, वह तभी सम्भव है जब पिछले भव से भी लाये तथा अगले भव में भी साथ में ले जाये। एक भव की अपेक्षा तो 33 सागर की ही कायस्थिति हो पाती है। तीर्थङ्कर बनने वाले तो उसी भव में नियमा मोक्ष प्राप्त करते हैं। वापस अवधिज्ञान लाने-ले जाने के लिए सामान्य मनुष्य होना आवश्यक है। इतना अवश्य ध्यान रखना चाहिए कि पिछले भव से जो अवधिज्ञान मनुष्य भव में साथ लाते हैं वह जघन्य भी नहीं होता, उत्कृष्ट भी नहीं होता, किन्तु मध्यम ही होता है।

जिज्ञासा- क्या वर्तमान में अवधिज्ञान भरत-ऐरावत क्षेत्र में मनुष्यों को हो सकता है?

समाधान- परम अवधिज्ञान उत्कृष्ट अवधिज्ञान प्राप्ति का तो शास्त्रों में निषेध है, किन्तु सामान्य अवधिज्ञान प्राप्ति का निषेध नहीं मिलता है। अतः भरत-ऐरवत क्षेत्र में भी कोई मनुष्य विशिष्ट साधना, तपस्या आदि करके अवधिज्ञानावरणीय कर्म का क्षयोपशम कर ले तो उसे अवधिज्ञान प्राप्त हो सकता है।

जिज्ञासा- सम्बद्ध-असम्बद्ध अवधिज्ञान किसे कहते हैं?

समाधान- जिस अवधिज्ञान के द्वारा जीव जितने क्षेत्र के रूपी पदार्थों को बिना अन्तर के लगातार जानता है, उसे सम्बद्ध अवधिज्ञान कहते हैं। जिस अवधिज्ञान के द्वारा जीव बीच-बीच के क्षेत्रों के रूपी पदार्थों को छोड़कर अन्तर से शेष क्षेत्रों के रूपी पदार्थों को जानता है, उसे असम्बद्ध अवधिज्ञान कहते हैं। यह बीच का

अन्तर संख्यात-असंख्यात योजन तक का भी हो सकता है।

सम्पूर्ण लोक तक के क्षेत्र के रूपी पदार्थों को जानने वाला अवधिज्ञान सम्बद्ध तथा असम्बद्ध दोनों

प्रकार का हो सकता है, किन्तु जिस अवधिज्ञान से अलोक में भी देखने की सामर्थ्य रही हुई है, वह सम्बद्ध अवधिज्ञान ही होता है।

-रजिस्ट्रार, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न
आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

जिनवाणी पर अभिमत

(1) डॉ. रमेश 'मर्यंक'

जिनवाणी का माह फरवरी 2021 का अङ्क प्रेरणास्पद है। विद्वान् मनीषी सम्पादक डॉ. धर्मचन्द्रजी जैन ने कलह निवारण का विशद चिन्तन प्रस्तुत किया। कलह के कारणों में शोषण, अन्याय की प्रवृत्ति, ठगना, भेदभाव, अपमान, उपेक्षा, स्वामित्व-अपेक्षाएँ प्रमुख हैं तो निवारण में क्षमा, समझौता, सकारात्मक दृष्टिकोण, भूल की स्वीकारोक्ति और बड़े हित का चिन्तन प्रमुख है। इनके लेख मेरी सम्मति में हीरों की खदान के उत्पादन समत्व अनमोल हैं। श्रुतज्ञान की विशेषताएँ-सुरेखा जैन ने सूत्रात्मक स्वरूप में प्रस्तुत की है। आचार्यप्रवर के ज्ञानपुञ्ज की किरणों का आलोक जीवन-निर्माण के सूत्र, दान के पात्र, कर्मफल, सुख-दुःख, सिद्धावस्था सभी प्रेरणास्पद हैं। डॉ. दयानन्दजी भार्गव ने जिनवाणी को विचार प्रधान लेखों की पत्रिका कहा है। इसमें प्रकाशित विचार जीवन के बाहरी और आन्तरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं।

स्व. डॉ. नरेन्द्रजी भानावत की स्मृति आदर सहित करते हुए आचार्य हस्ती की काव्य साधना का आलेख शोध परक गवेषणात्मक है। वे बहुमुखी साहित्य साधना के धनी थे। पूर्व न्यायाधिपति श्री जसराजजी चौपड़ा ने स्वाध्याय की भूमिका को निष्कर्ष नवनीत के रूप में प्रस्तुत किया है। सुशीला बोहरा, डॉ. दिलीप धींग, पदमचन्द्र गाँधी, तरुण बोहरा आदि सभी ज्ञानमाला के देदीप्यमान मणियों जैसे हैं। मेरी विनम्र सम्मति में जिनवाणी का लक्ष्य

अत्यन्त उदात्त है-

आचार्य कृपा ज्ञान से, कल्याण हर प्राणी का।
धर्माराधन मय हो जीवन, यह लक्ष्य जिनवाणी का।।

-बी-8, मीरा नगर, चित्तौड़गढ़-312001 (राज.)

(2) श्रीमती लीला-ताराचन्द्र जैन

श्री हस्ती गुरु के चरणों में,
हम नित उठ शीष नमाते हैं।
हमारे मन की कली खिल जाती है,
जब फरवरी की जिनवाणी देखते हैं।।1।।
दाणाण सेट्टुं अभयपयाणं,
आचार्यप्रवर समझाते हैं।
कर्मों के फल हैं सुख-दुःख,
महेन्द्रमुनिजी ऐसा फरमाते हैं।।2।।
प्राप्त का सदुपयोग : सिद्धावस्था प्रापक,
प्रमोद मुनि जी बताते हैं।
व्यक्तित्व-विकास और स्वाध्याय,
का मान जसराज चौपड़ा बढ़ाते हैं।।3।।
आओ मिलकर कर्मों को समझें,
धर्मचन्द्र जैन ज्ञान कराते हैं।
निधन समाचार : एक निवेदन में,
डॉ. धींग सरल गाथाएँ बताते हैं।।4।।
धर्म-ध्यान-स्वाध्याय करके,
हस्ती दीक्षा शती वर्ष मनाते हैं।
जिनवाणी के नित्य लेखादि,
मन में चिन्तन बढ़ाते हैं।।5।।

-तरुण, 38, मरुधर केसरी नगर, मानपुर
भास्करी रोड़, पाली-मारवाड़-306401 (राज.)

मेरे पास कुछ अच्छा नहीं है

श्रीमती निधि दिनेश लोढ़ा

अक्सर महिलाएँ अपनी वार्डरॉब के आगे खड़ी हो जाती हैं और उन्हें लगता है कि आज क्या पहनूँ, मेरे पास कुछ अच्छा नहीं है। अलमारियाँ ठसा-ठसा भरी होती हैं एक कपड़ा निकालो तो दस नीचे गिर जायें, फिर भी यही समस्या कि क्या पहनूँ? यह साड़ी तो उस समारोह में पहन ली थी वापस रिपिट कैसे करूँ? पर सच्चाई तो यह है कि आपने पिछले समारोह में क्या पहना था, किसी को याद नहीं रहता।

सोशल मीडिया के जमाने में सबको लेटेस्ट फैशन फॉलो करने का मन होता है, लेकिन फिर भी हमें सतर्क रहना चाहिए कि हमारे पास पहले से कितना है? ऑनलाइन शॉपिंग, सस्ते कपड़े, भारी डिस्काउण्ट देखकर लोग जरूरत हो या न हो शॉपिंग करते जाते हैं। एक सर्वे के अनुसार हम अपनी पिछली पीढ़ी से 90 प्रतिशत कपड़े अधिक खरीदते हैं। हर तीन में से एक औरत को लगता है जो कपड़ा दो-तीन शादियों में पहन लिया वह पुराना हो गया।

यह एक चिन्ताजनक स्थिति है बस केवल अलमारियाँ भरते जाते हैं। कई कपड़े तो सालों तक नहीं पहनते, फिर भी पड़े रहते हैं। पहले जमाना था कोई कपड़ा बड़ा भाई पहनेगा, फिर छोटा भाई, फिर होली खेलने में, फिर वही पोंचा बना देते थे। लेकिन आजकल नित नया खरीदने की होड़ रहती है।

कुछ तथ्य कपड़ा उद्योग से

1. एक टी-शर्ट को बनाने में लगभग 2700 लीटर पानी लगता है।
2. बड़े ब्राण्ड्स के सिर्फ 2 प्रतिशत कपड़े यूरोप में तैयार होते हैं। बाकी 98 प्रतिशत पाकिस्तान और बांग्लादेश में तैयार होते हैं जहाँ कारीगरों को बहुत ही कम वेतन दिया जाता है।

3. स्थानीय कपड़ा मिल अपना सारा गन्दा पानी किसी न किसी नदी में बहा देती है। इससे नदी के पानी के ऑक्सीजन का स्तर बहुत गिर जाता है।
4. महासागरों में 85 प्रतिशत प्लास्टिक प्रदूषण सिंथेटिक कपड़ों से निकले माइक्रोफाइबर की वजह से है। पॉलिस्टर कपड़े को समाप्त होने में 200 साल लगते हैं। तब तक वह पर्यावरण में रहता है।
5. लगभग 70 मिलियन बैरल तेल प्रतिवर्ष पॉलिस्टर बनाने में काम आता है।

विकल्प

1. कम खरीदें।
2. पर्यावरण के उपयुक्त सस्टेनेबल कपड़े अर्थात् ऑर्गेनिक कॉटन और खादी ज्यादा लें।
3. फेंकने से पहले दुबारा सोचें। एक सर्वे के अनुसार चेरिटी में दिये गये कपड़े केवल 10 प्रतिशत ही काम में आते हैं और बाकी सब लैण्डफिल में ही जाते हैं।
4. कुछ मरम्मत हो सके मतलब कट-फट गया हो तो सिल कर काम लेने जैसा हो तो ले लें।
5. आपस में बहनें, सहेलियाँ कपड़े एक्सचेज कर लें। सारांश यह है कि ऐसा नहीं है कि हम कपड़े खरीदने बन्द कर दें, अवश्य लें पर अच्छी क्वालिटी का लें और अपनी क्रियेटिविटी लगाकर कपड़ों को मिक्स एण्ड मैच करके पहनें तो कम कपड़ों में भी भिन्न-भिन्न लुक मिलेगा। “खुशियों का राज ज्यादा ढूँढ़ने में नहीं, बल्कि कम में भी इज्जत करने की आदत खुश रखती है।”

-बी 2402, इण्डियाबुल्स ब्लू, डॉ. ई मोस रोड, वर्ल्ड नाका, मुम्बई-400018 (महाराष्ट्र)

व्यावहारिक जीवन के नीति वाक्य (4)

श्री पी. शिखरमल सुराणा

13. जीवन में घटित होने वाली सामान्य घटनाओं के साथ-साथ होने वाली दुर्घटनाओं एवं हादसों में भी अक्सर बड़े महत्त्व के नैतिक पहलू छिपे हुए होते हैं। हमें उन दुर्घटनाओं से सबक लेते हुए ही अपने भविष्य की नीतियों एवं लक्ष्यों को पुनर्निर्धारित करना चाहिए। ये सभी तथाकथित हादसे एवं दुर्घटनायें हमारे जीवन की दिशा को पुनः निर्धारित करने हेतु ही होती हैं और उनका उद्देश्य हमारी क्षमताओं को और अधिक विकसित करते हुए जीवन को गतिशील एवं कर्मठ बनाना एवं सही दिशा प्रदान करना होता है।
14. अत्यधिक महत्त्वाकांक्षा यानी बड़ी विपत्ति... और लालच यानी बड़ा अमंगल। व्यक्ति को महत्त्वाकांक्षी होना चाहिए, प्रगति के पथ की यह पहली सीढ़ी है। बिना किसी भी सपने या महत्त्वाकांक्षा के ...न तो लक्ष्य निर्धारित होते हैं, और न ही उनको प्राप्त करने की प्रेरणा मिल पाती है...किन्तु अपनी क्षमता एवं सामर्थ्य से अधिक की महत्त्वाकांक्षा रखकर.. आवश्यकता से अधिक के लिए ...एक सीमा से अधिक जाकर प्रयास करना घातक हो सकता है। यह लालच की श्रेणी में आता है, जो नकारात्मक ऊर्जा का स्रोत है ... और मनुष्य को निश्चित पतन की ओर ले जाता है।
15. मानव जीवन विविधताओं और विचित्रताओं का संगम होता है ...इसमें जो होता है वह सब सुन्दर, सुखद, सरस और शुभ ही नहीं होता...कुछ इनसे विपरीत भी होता है। मानव विपरीतताओं को नहीं चाहता ...फिर भी विपरीतताएँ आती ही हैं। मानव जैसा सोचता है वैसा सब कुछ हो जाए तो मानव के पैर धरती पर रहेंगे ही नहीं ... वह आसमानी मानव बन जायेगा। मगर ऐसा नहीं होता तथा हर मानव के

साथ अच्छा-बुरा, अनकूल-प्रतिकूल, प्रिय-अप्रिय प्रसङ्ग, परिस्थिति और संयोग जुड़े रहते हैं। अगर मानव का सोचा हुआ सब कुछ हो भी जाता है तो वह टिकता नहीं, उसे टिकाये रखने के जुगाड़ में मानव बेचैन हो जाता है। उस बेचैनी के समाधान के लिये मानव को यह सोचना चाहिए 'जो हुआ सो ठीक।' इस 'ठीक' शब्द में महान् जादू है। सौ सवालों का एक समाधान ठीक शब्द का प्रयोग है। यह ठीक शब्द ...ठीक से बोलना, सोचना और समझना आ जाए तो जीवन शान्त, सन्तुलित और आनन्द से भर जाता है। मानव रोते-रोते जन्म लेता है और शिकायतें करते-करते जीता है ...उसकी शिकायतें इस 'ठीक है' शब्द से छँटकर मन को सन्तुलित कर देती हैं। अगर इस शब्द के प्रयोग का अभ्यास हर व्यक्ति के दैनिक जीवन की साधना बन जाए तो निरर्थक बहस से बचना आसान हो जाता है ...वरना बहस ही बहस में समय, शक्ति और श्रम का अपव्यय होता है। बहस से वैर, विरोध और द्वेष के साथ आपसी मनमुटाव बढ़ता ही चला जाता है। कभी-कभी इस बहसबाजी से इतनी उग्रता-उत्तेजना पैदा हो जाती है कि व्यक्ति एक-दूसरे को मारने-मरवाने में लग जाता है। उग्रता किसी समस्या का समाधान नहीं होती। मन को अहिंसक और जीवन को निश्चिन्त बनाना हो तो 'ठीक है' शब्द का प्रयोग करते रहना चाहिए...इससे घटित हुई घटना को स्वीकार करने की सहजता का विकास होता है। इतनी क्षमता बढ़ जाती है कि बड़ी से बड़ी घटना का असर मन पर नहीं होता। जो भी व्यक्ति 'ठीक है' इस सूत्र को अपना लेते हैं वे कभी कायर, कमजोर नहीं होते... उनका आत्मविश्वास सुदृढ़ रहता है।



शास्त्र-श्रवण से आत्मा को बल मिलता है

डॉ. मंजुला बम्ब

शास्त्र को माता के समान माना गया है। माता का दूध जिस प्रकार संसार के समस्त खाद्य पदार्थों की अपेक्षा शरीर की पुष्टि के लिए उत्तम माना गया है उसी प्रकार शास्त्र वचन आत्मिक गुणों के विकास और पुष्टि के लिए अन्य समस्त साधनों की अपेक्षा उत्तम होते हैं। अतः शास्त्र-श्रवण करना आत्मोन्नति के इच्छुक प्रत्येक प्राणी के लिए आवश्यक है।

शास्त्र-श्रवण मानव जीवन को उत्तम बनाने का सर्वोत्तम साधन है। जब तक मनुष्य शास्त्र-श्रवण नहीं करता तब तक उसे यह मालूम नहीं पड़ता कि उसके लिए हेय क्या है? और उपादेय क्या है? अर्थात् उसके छोड़ने योग्य क्या है? और ग्रहण करने योग्य क्या है?

मनुष्य अपने चर्म चक्षुओं से जगत के समस्त दृश्यमान पदार्थों को देखता है, किन्तु शास्त्र श्रवण ज्ञान से जो उसके नेत्र खुलते हैं, उनके द्वारा वह अपनी आत्मा को देखता है तथा आत्मिक गुणों की पहचान करता है। इसलिए आवश्यक ही नहीं अनिवार्य है कि व्यक्ति जहाँ तक बन सके, शास्त्र श्रवण करे।

शास्त्र-श्रवण किसलिए आवश्यक है?

अगर व्यक्ति धर्मशास्त्र सुनता है तो उसका चित्त एक अनिर्वचनीय सन्तुष्टि और प्रसन्नता से भर जाता है। हृदय में रहे हुए पापपूर्ण एवं कलुषित विचार नष्ट हो जाते हैं तथा उनके स्थान पर पवित्र एवं शान्तिदायक विचार जन्म ले लेते हैं।

शास्त्र-श्रवण का मन पर गहरा असर पड़ता है। भले ही कभी-कभी उनकी भाषा समझ में नहीं आती, किन्तु एक अवर्णनीय सन्तुष्टि मन पर इस प्रकार छा जाती है कि मानस शुद्ध और पवित्र बनने लगता है। जिस प्रकार सर्प के काटने पर मन्त्रवादी सर्प के विष को उतारने के लिए मन्त्र पढ़ता है तब जिस व्यक्ति को सर्प ने

काटा है उसकी समझ में मन्त्र की भाषा और उसका अर्थ नहीं आता, परन्तु फिर भी उसका मन भयरहित तथा आशापूर्ण हो जाता है फलस्वरूप वह विष रहित होने लगता है।

इसी प्रकार शास्त्रों की भाषा कभी समझ में नहीं भी आती है, तब भी मनुष्य का मन एक नैसर्गिक पवित्रता के प्रकाश से भर उठता है और उसके फलस्वरूप पाप की कालिमा धीरे-धीरे मिटने लगती है। इसलिए शास्त्र-श्रवण आत्मोन्नति के इच्छुक प्रत्येक व्यक्ति के लिए आवश्यक है। जिस प्रकार पौष्टिक भोजन से शरीर को शक्ति प्राप्त होती है, उसी प्रकार शास्त्र-श्रवण से आत्मा को बल मिलता है।

चाहे जिनवाणी श्रवण का अवसर न भी मिले या सुनने के बाद बात समझ में न भी आये तथापि यह वाणी कल्याणकारी है, तारक है ऐसा श्रद्धा भाव बना रहे तो समझना चाहिये कि धर्म के प्रति हमारी आन्तरिक रुचि है। जैसे बीमारी है तो डॉक्टर के पास जाना आवश्यक है ऐसे ही आत्मकल्याण करना है तो जिनवाणी की शरण ग्रहण करना अनिवार्य है। शरण से समर्पण जागता है और मार्गदर्शन मिलता है जो मञ्जिल तक पहुँचा देता है।

पानी की शरण में रहने वाला यदि आग से बचा रहता है तो जिनवाणी की शरण में जाने वाला पाप से बचा रहता है। जैसे एक बीज पृथ्वी को हरियाली से व्याप्त कर देता है वैसे ही जिनवचन के प्रति समर्पण हो तो केवलज्ञान प्रकट हो जाता है। इतिहास में मासतुष मुनि के ज्ञानावरण का शयोपशम नहीं था, किन्तु जिनवाणी के प्रति ऐसा समर्पण भाव था कि केवल ज्ञान प्रकट हो गया।

-567, गली नं.-6, वाल्मिकी मार्ग, तिलक नगर, जयपुर-302004 (राज.)

बिन्दु की तपस्या एवं गुरुदेव की कृपा

श्रीमती बीना मेहता

26 फरवरी, 2021 माघ शुक्ला चतुर्दशी विक्रम सम्वत् 2077 को तपस्विनी श्राविकारत्न बिन्दुजी मेहता (सुपुत्री श्रीमती बीनाजी-कार्याध्यक्ष, अ.भा. श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल एवं श्रावकरत्न श्री भागचन्दजी मेहता, जोधपुर) की 150 दिवसीय सुदीर्घ तपस्या पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. की पावन सन्निधि में पूर्ण हुई। उनकी तपस्या की अनुमोदना में इस दिन देश-विदेश में आठ से दस हजार उपवास हुए। तपःकाल में भक्तिभाव एवं श्रद्धा की सरिता प्रवाहित हुई। तपस्विनी बहिन की भाग्यशालिनी माता के शब्दों में प्रस्तुत है इस तपस्या की यात्रा का अनुभव।

-सम्पादक

मेरी श्रद्धा के केन्द्र गुरु हीरा के कोसाणा चातुर्मास में सेवाभावी महान् अध्यवसायी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. ने 29 सितम्बर, 2020 त्रयोदशी को तपस्या हेतु विशेष प्रेरणा की। इसे सुनकर मैंने अपनी सुपुत्री को उपवास की सहज प्रेरणा की। बिन्दु का जवाब नकारात्मक था। लेकिन पुण्यवानी का उदय हुआ, रात में चिन्तन चला और 30 सितम्बर को बिन्दु ने मुझे चतुर्दशी का उपवास करने की भावना रखी। मैं बहुत खुश हुई, उपवास करने की स्वीकृति प्रदान की। पहले उपवास के प्रत्याख्यान श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. ने करवाये। उपवास में उत्कृष्ट भावना बनी और पहली अठाई के प्रत्याख्यान गुरुदेव के असाता होने से उन्हीं की आज्ञा से श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. ने 1 अक्टूबर को कराये। गुरुदेव की कृपा से तीन अठाई लगातार गुप्त रही एवं सुखसाता पूर्वक सम्पन्न हुई। तीन अठाई के बाद गुरुदेव ने स्वेच्छा से (24 + 3) साधु के गुण 27 के प्रत्याख्यान अपने श्रीमुख से करवाये। मेहता परिवार की भावना थी कि माता-पिता ने 36 उपवास किए तो बिन्दु को भी आचार्य के 36 गुणों को 36 उपवास की भेंट गुरु चरणों में देनी ही है। 4 नवम्बर को बिन्दु का जन्म-दिवस था, उस दिन गुरु-चरणों में 36 उपवास की भेंट दी। गुरुदेव की कृपा एवं अतिशय पुण्यवानी ने जोर मारा और उत्कृष्ट भाव बनते चले गये। 20 नवम्बर को गुरुदेव के 58वें दीक्षा दिवस पर 58 उपवास की भेंट। 20 दिसम्बर को 82 उपवास की भेंट

गुरुदेव की 82 वर्ष की आयु पर। दीक्षा शताब्दी वर्ष में शतक पूरा होने पर पञ्चपरमेष्ठी के 108 गुणों की दृष्टि से 108 उपवास, 20 जनवरी को उपाध्यायप्रवर की पुण्य तिथि पर 113 उपवास की भेंट, 27 जनवरी को गुरु हस्ती की 111वीं जन्म जयन्ती पर 120 उपवास की श्रद्धा रूपी भेंट, 13 फरवरी को दीक्षा-शताब्दी वर्ष की पूर्णाहुति पर 137 उपवास की भेंट। उसके बाद 150 उपवास की भेंट गुरु हीरा के चरणों में, जिन्होंने अतिशय, कृपा और दूरदर्शिता से पाँच-पाँच प्रत्याख्यान करवाकर इस तपस्या को निर्विघ्न सम्पन्न कराया। 14 फरवरी को गुरुदेव ने फरमाया तपस्या श्रद्धा का विषय रहे तब तक तपस्या करते रहना चाहिये। गुरुदेव के संकेत मात्र से हमने फरवरी 2021 चतुर्दशी पकखी के दिन पूर की घोषणा कर दी।

यह तपस्या प्रारम्भ से ही अनिश्चितता में रही। कितनी होगी, कब होगी सभी की गणना चलती रही, लेकिन निश्चित संख्या का कोई भी लक्ष्य नहीं था। यह मात्र संयोग ही था कि तपस्या चतुर्दशी को प्रारम्भ हुई और चतुर्दशी पकखी को पूर्ण हुई।

यह तपस्या पूर्ण सादगी, साता पूर्वक सकारात्मक सोच के साथ सम्पन्न हुई। गुरुदेव की दूरदर्शिता के कारण ही 150 उपवास की दीर्घ तपस्या निर्विघ्न सम्पन्न हुई और रत्नसंघ में एक नया इतिहास बना।

इस तपस्या में एक बार एक उपवास (35 + 1) 36, दो उपवास (148 + 2 = 150) तीन उपवास (24

+ 3 = 27), चार उपवास (36 + 4 = 40) और 6 उपवास (52 + 6 = 58) बाकी हर बार इस दीर्घ तपस्या में पाँच उपवास के एक साथ प्रत्याख्यान करवाने का स्व-निर्णय गुरुदेव का ही था। हर बार गुरुदेव द्वारा अग्रिम प्रत्याख्यान करवाने के कारण कभी असाता वेदनीय का उदय भी हुआ तो स्वतः दो दिन बाद ही साता हो जाती। गुरुदेव ने 41 उपवास के दिन संकेत भी किया कि ऐसा लगता है ये कुछ बड़ा करेगी, तब सोचा भी नहीं था कि इतनी बड़ी तपस्या सम्पन्न हो जायेगी। पर यह सच है महापुरुषों के वचन खाली नहीं जाते, बस समझने की जरूरत है। हम अपना दिमाग लगा लेते हैं वहीं हम फेल हो जाते हैं। इस तपस्या को हमने गुरुभक्ति का रूप दिया अनुमोदना के रूप में।

गुरु हीरा का अतिशय ही एवं कृपा का ही सुपरिणाम था कि हर बार जब-जब सेवा में रहे कुछ नयी तपस्या हुई। निमाज चातुर्मास 2016 में मैंने गुरु हस्ती की पावन धरा पर 36 उपवास किये। तपस्विनी बिन्दु के पिताश्री ने 2019 में 36 उपवास किये गुरु हस्ती के अन्तिम चातुर्मास स्थल पाली में और तपस्विनी बेटी बिन्दु तो बहुत भाग्यशाली, पुण्यशाली रही कि पुण्यधरा पीपाड़ हस्ती-हीरा की जन्मस्थली पर उसकी 150 उपवास की दीर्घ तपस्या बिना किसी आडम्बर के सादगीपूर्ण सम्पन्न हुई।

इस तपस्या में सेवाभावी महान् अध्यवसायी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. की निरन्तर मांगलिक और तप की विशेष प्रेरणा तथा प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से सभी चारित्र आत्माओं के आशीर्वाद भी इस तपस्या को सफल बनाने में सहयोगी रहे। पीपाड़ श्रीसंघ एवं चारों संघों की गुरुभक्ति, अनुमोदना और प्रशंसनीय सेवाएँ भी इस तपस्या में पूर्ण सहयोगी बने।

देश में ही नहीं विदेश में भी न्यू जर्सी, अमेरिका, हाँगाकॉंग, बैंकाक, दुबई अन्य सभी स्थानों से रत्नसंघीय भाई-बहन एवं अन्य संघों के श्रावक-श्राविकाओं ने भी ऑडियो और वीडियो के माध्यम से अनुमोदना, आशीर्वाद के साथ ही वीरु राना अब्बानी जो कि एक

गुरु भक्त हैं, हिन्दी फिल्मों में गायक कलाकार है, उन्होंने भी समय-समय पर गुरुभक्ति, भजन प्रस्तुत किए। ऐसे अनेक गायक कलाकारों ने भी अनुमोदना कर गुरुभक्ति भजन गाकर इस तपस्या में हमारा उत्साहवर्धन किया। व्यक्ति कोरोना को भूलकर मात्र तपस्या की अनुमोदना में रम गये।

बिन्दु का पुरुषार्थ और पूरे मेहता परिवार (माता-पिता, भाई ब्रजेश, बहन भावना एवं मास्टर डुगु का विशेष सहयोग) एवं बिराणी परिवार का सहयोग रहा। बिन्दु में समता, सरलता, सादगी, सौम्यता है। बचपन से ही अपने माता-पिता की गुरुभक्ति को देखते-देखते बड़ी हुई तो संस्कार पूर्ण रम गये और आज गुरुचरणों में रहकर रत्नसंघ में हीरा गुरु-कृपा से नया इतिहास रचा जो हम सबके लिए अनुमोदनीय है। तपस्विनी बिन्दु ने मोक्ष मार्ग के चार पाए सम्यग्ज्ञान, सम्यग्दर्शन, सम्यक् चारित्र और उत्कृष्ट तप के मार्ग को धारण कर जीवन को सफल बनाया।

सन्देश-एकनिष्ठ गुरुभक्ति हो तो जीवन में असम्भव भी सम्भव हो जाता है।

दर-दर पे क्यूँ माथा टेके, एक पे क्यूँ एतबार नहीं।

ऐसा कोई सपना नहीं जो, होता यहाँ साकार नहीं।

क्यूँ सोचे बेकार, गुरु हीरा बैठे हैं।

तू हिम्मत न हार, गुरु हीरा बैठे हैं।

छोड़ दे चिन्ता आज गुरु हीरा बैठे हैं।

बस इसी से यह मिशन पूरा हुआ और पारणा भी उतना ही साता पूर्वक हुआ यह कोई चमत्कार से कम नहीं।

26 फरवरी, 2021 चतुर्दशी को पूरे भारतवर्ष में आठ से दस हजार उपवास, हजारों की संख्या में एकाशन, सैकड़ों आयम्बिल, बेले, तेले जैसी तपस्याएँ हुईं। जहाँ सन्त-सती नहीं थे वहाँ भी सभी श्रावक-श्राविकाओं ने तीन-तीन सामायिक अथवा पाँच सामायिक के साथ में साधना-आराधना की।

इस 150 की तपस्या के उपलक्ष्य में 150 उपवास

वर्ष भर 150 एकाशन, आयम्बिल, 150 संवर, 150 पौषध, 150 सामायिक, 150 दिन रात्रि-भोजन त्याग, 150 दिन लोगस्स की साधना ऐसे अनेकों प्रत्याख्यान स्वतः ही ग्रहण किये गये।

सभी स्थानीय संघ, अखिल भारतीय श्रावक संघ, युवक परिषद् एवं श्राविका मण्डल, सभी गुरु भाई-बहनों का धन्यवाद और आभार आप सभी के

उपकारों के प्रति विशेष गुरुदेव के प्रति मेहता परिवार की तरफ से कृतज्ञता, आभार ज्ञापित करते हैं।

पुनः सभी का आभार धन्यवाद करती हूँ आप सभी का ऐसा ही प्यार सदैव मिलता रहे। रत्नसंघ दिन-दूनी, रात-चौगुनी प्रगति करता रहे। इसी मंगल शुभ भावना के साथ।

-कार्याध्यक्ष-अ. भ. श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल

क्या सच में मैं हूँ आत्मार्थी साधक?

सी.ए. श्री निपुण डागर

कितने लोगों को समझाता, पर खुद समझ न पाया
बिना कुछ जीवन में उतरे,
क्या मिथ्या अभिमान करता आया
शायद यह ही रहा है जीवन में सबसे बड़ी बाधक
क्या सच में मैं हूँ आत्मार्थी साधक?

लोगों की मुश्किलों को
दूर करने में निपुण हो गया
पर गज़ब की हैरानी की बात है ज़नाब
अपनी मुश्किलों में तो
एक पल भी समता न रख पाया,
क्या सच में मैं हूँ महावीर का प्रतिपालक
क्या सच में मैं हूँ आत्मार्थी साधक?

अनन्तकाल से राग-बुद्धि से
भ्रमित क्रियाएँ करता रहा
पता ही नहीं चला कि कब हित
की आड़ में स्वार्थ का ही पोषण करता रहा
हे क्षत्रिय! क्यों अब भी है शूद्रों जैसी तेरी आदत
क्या सच में मैं हूँ आत्मार्थी साधक?

कषायों की ज्वालामुखी में
यह आत्मा काँप रही है

कर्मों के महा बन्ध से
पाप भीरुता अब भी नहीं है
अपनी नियति का तू खुद ही है कारक
क्या सच में मैं हूँ आत्मार्थी साधक?

जो दूर है उनकी प्रशंसा
कर खुश होता रहा
और जो समीप हैं उनसे
ईर्ष्या कर भरपूर निंदा करता रहा
क्या निंदा करते-करते भी
मैं बन पाऊँगा सच्चा आराधक
क्या सच में मैं हूँ आत्मार्थी साधक?

निराशा रूपी पिशाच को अब चीर डालना है
नया सवेरा है अब ज़ोरदार आक्रमण करना है
चल रहा हूँ अब निडर,
नहीं लगता अब कोई मार्ग घातक,
हाँ अब बनके दिखाऊँगा मैं सच्चा साधक!

जागो-जागो कवच पहन
विशुद्ध करो इन भावों को
वार कर, नेस्तानाबूत कर दो
इन शूद्र कषायों को बनूँगा आत्मिक राजा,
लगेगा अब विजय तिलक
हाँ अब बनके दिखाऊँगा मैं सच्चा साधक!
-B -13, Shivalay Marg, Sethi Colony, Jaipur

आचार्य हस्ती-स्मृति व्याख्यान माला का वेबिनार के माध्यम से आयोजन

डॉ. धर्मचन्द्र जैन

(1) अध्यात्मयोगी युगमनीषी पूज्य आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा. की दीक्षाशताब्दी के उपलक्ष्य में चल रही आचार्यश्री हस्ती वेबिनार व्याख्यान माला-9 में 7 फरवरी, 2021 को 'आचार्यश्री हस्ती की युवाओं को प्रेरणा' विषय पर हाँगाकाँग निवासी श्री राजेन्द्रजी डागा (सुपुत्र शासनसेवी श्री विमलचन्द्रजी डागा, जयपुर) ने अत्यन्त प्रभावशाली रीति से सम्बोधित करते हुए कहा कि आचार्यश्री हस्ती युवाओं की मानसिकता को भलीभाँति समझते थे तथा तदनु रूप उन्हें प्रेरणा सूत्र देते थे। युवाओं ने भी उनमें शान्ति, समता, तेजस्विता एवं समझाइश की शैली देखकर उनको अपना आराध्य समझा। प्रमुखवक्ता श्री डागा ने विषय का प्रतिपादन करते हुए 6 सूत्र प्रस्तुत किए-

1. लक्ष्य के प्रति उन्मुखता (Goal Orientation)-गुरुभगवन्त अपने साध्य के प्रति स्पष्ट थे तथा उसे पूर्ण करने के लिए सदैव सजग एवं प्रयत्नशील रहते थे। उनके जीवन से हम यह प्रेरणा ले सकते हैं कि हमें हमारे जीवन में लक्ष्य के प्रति स्पष्ट होकर उसे पूर्ण करने के लिए तत्पर होना चाहिए।
2. सामायिक-साधना-गुरुदेव की प्रेरणा रही कि जीवन की गाड़ी को नियन्त्रित ढंग से नई चेतना के साथ चलाने के लिए सामायिक-साधना आवश्यक है।
3. स्वाध्याय-आचार्यप्रवर स्वयं स्वाध्यायशील थे तथा उन्होंने हजारों लोगों को स्वाध्याय की प्रेरणा की और युवकों को भी स्वाध्याय से जोड़ा।
4. सम्प्रदायातीतता-आचार्यश्री सदैव गुणियों के

प्रति प्रमोद भाव व्यक्त करते थे। ज्ञान-क्रिया से सम्पन्न साधु-साध्वियों की सेवा के लिए प्रेरित करते थे। इस कारण रत्नसंघ छोटा होते हुए भी जिनशासन में अपना विशेष स्थान रखता है।

5. योग्यतानुरूप कार्य-पूज्य आचार्यप्रवर भक्तों की योग्यता को अच्छी तरह पहचानते थे एवं उसी के अनुरूप कार्य सौंपते थे। उन्होंने विहार-सेवा, संघ-सेवा, किसी को पर्युषण-सेवा की प्रेरणा की। कार्यकर्ता भी उसी प्रेरणा से तैयार होते थे। वर्तमान आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. भी उनकी इसी विशेषता की देन हैं।

6. निवृत्ति-योजना (Retirement plan)-उन्होंने स्वयं 71 वर्ष की दीक्षा पर्याय एवं 81 वर्ष की आयु में संलेखना संथारा ग्रहण करने की योजना बनाई एवं निमाज में उनका अविस्मरणीय संथारा हुआ। इसी तरह युवकों को पहले ही व्यापार से निवृत्ति की योजना बना लेनी चाहिए।

द्वितीय वक्ता के रूप में अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् के प्रथम अध्यक्ष श्री अमिताभजी हीरावत (सुपुत्र संघ संरक्षक श्री नथमलजी हीरावत) ने युवाओं को सम्बोधित करते हुए कहा-आचार्य श्री हस्ती के सम्पर्क में तर्कशील विद्वान् लोग भी आए, उनको भी उन्होंने तर्क से सन्तुष्ट किया। वे एक महान् साधक थे। उनको किसी से कोई मोह या अपेक्षा नहीं थी। वे मितभाषी थे। वे युवाओं को स्वयं जोड़ने में सिद्धहस्त थे। युवाओं की रुचि पूछकर उनके अनुसार धर्म-ध्यान में आगे बढ़ने हेतु प्रोत्साहित करते थे। कोई भी युवक उनके पास जाने में संकोच नहीं करता था। वे एक क्रान्तिकारी महान् सन्त थे। संघ एवं श्रावकों का

उन्होंने प्रभावी नेतृत्व किया। हम जैसे युवाओं को अपने श्रीमुख से सामायिक-प्रतिक्रमण आदि के पाठ सिखाए।”

रत्नसंघ के कार्याध्यक्ष एवं युवक परिषद् के पूर्व अध्यक्ष श्री आनन्दजी चौपड़ा ने विशिष्ट अतिथि के रूप में सम्बोधित किया। उन्होंने कहा कि आचार्यश्री हस्ती युवाओं के प्रेरणा-स्रोत रहे, क्योंकि 20 वर्ष की आयु में वे आचार्य बने। आगमों की टीकाओं का सम्पादन, काव्य-रचना, भजन आदि की रचना युवावय में की। संस्कार-निर्माण पर उन्होंने बल दिया। युवावय में सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल की स्थापना की प्रेरणा की, स्वाध्यायी तैयार किए, युवावय में हिन्दुस्तान में भ्रमण किया। मण्डल, स्वाध्याय संघ एवं संघ से युवा जुड़े। युवाओं को आगे बढ़ाया। आज भी युवक संघ सक्षम और दृढ़ है।

प्रारम्भ में वक्ताओं का स्वागत सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के अध्यक्ष श्री चंचलमलजी बच्छावत ने किया। सञ्चालन कोषाध्यक्ष श्री ऋतुलजी पटवा ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन मण्डल के मन्त्री श्री अशोक कुमारजी सेठ ने किया।

(2) आचार्यश्री हस्ती-स्मृति व्याख्यान-माला माघ शुक्ला द्वितीया 13 फरवरी, 2021 को आचार्यश्री हस्ती दीक्षाशती वर्ष सम्पन्न हो गया था, फिर भी सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल द्वारा वेबिनार व्याख्यानमाला का कार्यक्रम निरन्तर आगे बढ़ाते हुए रविवार 7 मार्च, 2021 को आचार्य हस्ती-स्मृति व्याख्यानमाला का आयोजन किया गया। प्रमुखवक्ता श्री शान्तिलालजी डूंगरवाल बेंगलुरु ने वेबिनार-10 में 'आचार्य श्री हस्ती की स्वाध्यायियों को प्रेरणा' विषय पर भक्ति भावपूर्वक उद्बोधन दिया। गुरु हस्ती की स्तुति करने के पश्चात् उन्होंने 3 बिन्दुओं पर विशेष रूप से प्रकाश डाला-1. गुणानुवाद, 2. स्वाध्याय और

3. ध्यान। इन तीनों गुणों को अपना कर जीवन को उन्नत बनाया जा सकता है।

आचार्य हस्ती उच्च कोटि के महान् साधक थे। मैंने उनको किशनगढ़ में रात में ध्यानस्थ देखा। उन्होंने पाठशाला की प्रेरणा दी, उनकी प्रेरणा से विद्वत् परिषद् का गठन हुआ। उन्होंने सामायिक और स्वाध्याय का अभियान चलाया। स्वाध्याय के महत्त्व एवं स्वाध्याय करने की प्रेरणा पर भाव भंगिमा के साथ प्रकाश डाला।

जिनवाणी सम्पादक डॉ. धर्मचन्द्र जैन ने कहा कि यह स्वाध्याय संघ का 75वाँ वर्ष चल रहा है, इसलिए अभी स्वाध्यायियों को आचार्य श्री हस्ती की प्रेरणा के सम्बन्ध में चर्चा की जा रही है। स्वाध्याय का अन्तरङ्ग फल है बुद्धि की निर्मलता तथा पाप का विनाश। स्वाध्याय का बहिरंग फल है समाज-निर्माण एवं राष्ट्र-निर्माण। स्वाध्याय का तीसरा फल है-स्वाध्यायियों का निर्माण। स्वाध्याय में मन, वचन एवं काया तीनों का योग होना आवश्यक है। सन् 1970 में जयपुर में स्वाध्यायियों का प्रथम शिविर लगा। उसके पश्चात् अनेक शिविर लगे। चातुर्मास में भी स्वाध्याय शिविर आयोजित हुए। आचार्य श्री हस्ती ने स्वाध्यायियों को जीवन-निर्माण हेतु प्रेरित किया एवं अनेक प्रकार के नियम दिलवाए-1. कोई स्वाध्यायी बन्धु अपने साधर्मि भाई के विरुद्ध कोर्ट कचहरी में नहीं जायेगा। 2. दहेज का ठहराव नहीं करेगा। 3. तम्बाकू, बीड़ी आदि का सेवन नहीं करेगा। 4. नियमित रूप से स्वाध्याय करेगा। स्वाध्याय की उत्कृष्टता तभी आ सकती है जब स्वाध्याय निरन्तर किया जाय।

प्रारम्भ में वक्ताओं का स्वागत सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के अध्यक्ष श्री चंचलमलजी बच्छावत ने किया। सञ्चालन श्री ऋतुलजी पटवा ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन मण्डल के मन्त्री श्री अशोक कुमारजी सेठ ने किया।

तीर्थङ्कर महावीर का जन्मकल्याणक चैत्र शुक्ला त्रयोदशी 25 अप्रैल, 2021 को उपस्थित हो रहा है। समस्त जैनों की एकता के प्रतीक इस पर्व पर हार्दिक मंगल कामनाएँ!!

Vasudhaiva Kutumbakam : Jain Philosophy from Covid-19

(Organised By : Ratna Sangh Forum of Professionals)

Dr. Mahaveer Golecha

WEBINAR 10 - 31 January 2021

Shekhar Bhandari (Convenor, JRFOP)

- ◆ To think of one as a friend and one as a foe is reflection of someone with a weak personality. Large-hearted people look at the entire world as their friend. This is an important learning from Covid-19.
- ◆ Last few months have shown how the nuclear powers of the world have become powerless against a miniscule virus.
- ◆ Mother nature has been subjected to multiple atrocities the way it was being treated and hence mother nature fought back with a virus that brought the world to a stand still.
- ◆ The world learned that the only way to fight against a pandemic of such scale is to be united and look out for each other.
- ◆ **Vasudhaiva Kutumbakam** has always been the philosophy followed by India starting with Lord Mahavira vision of holistic development and respect for all forms of life.
- ◆ Acceptance of non-violence as a creed and as a strategy is what flows directly from the concept of Vasudhaiva Kutumbakam.
- ◆ *Corporate India needs to be far more socially responsible* than just focusing on profits and we shall see this become a world order in the future as we take our learnings from Covid-19.

Dr. Mahaveer Golecha (Keynote Speaker)– “*Vasudhaiva Kutumbakam–Jain Philosophy from Covid-19*”

- ◆ Coronavirus stronger than any nuclear warhead due to the speed at which it

spread. The world had seen Spanish Flu too in the past but the scale of Coronavirus has been unprecedented.

- ◆ **Ahimsa or non-violence** has been one of the basic tenets of Jainism – Harmony for all living beings including human beings, animals, plants, microorganisms, etc.
- ◆ Jainism has always endorsed for wearing a face mask to avoid inhaling/ingestion of microbes since ages which is something as a practice being followed across the world on the guidance of WHO or other health organizations.
- ◆ **All living beings to follow their own spiritual paths** and hence one being should not cross paths with spirituality of others.
- ◆ Jains follow the habit of eating vegetarian food which should not include vegetables which are grown below ground to avoid disturbing the lives of insects that stay underground.
- ◆ The world can function only if the ecosystem is in harmony and we should strive to maintain this harmony in future.
- ◆ **Climate change will be the biggest pandemic of future** as we see global warming affect respiratory and cardiac problems which increases mortality rate.
- ◆ **Animal infection will be the next pandemic** in the world as humans have devastated the harmony in animal kingdoms.
- ◆ For short term gains things like deforestation and animal slaughter are not being stopped as meat industry becomes a

multi-billion dollar industry but if one looks at the economic loss from Covid then the industry size looks small.

- ◆ **Aparigraha is a founding principle of Jainism** – no amount of material wealth could help people when the virus was spreading and all people – rich or poor were locked down in their homes.
- ◆ **Mental satisfaction is of prime importance** and the ultimate aim should be to help others and that provides a person inner peace and the satisfaction.
- ◆ A society is like a tree where every person is a leaf and the tree cannot be happy if even one leaf is not happy.
- ◆ **Communities should be united** and learn from countries like Israel where the values of unity have helped them take their societies to be educated and relevant across the globe.
- ◆ **Mental Wellbeing and Emotional Health is third tenet of Jainism** and Covid saw people with good mental wellbeing and strong emotional wealth fight through their Covid recovery.
- ◆ Emotional Intelligence is much more important than intelligence as a person needs to control their own emotions.
- ◆ The biggest problem of today's youth is

the lack of patience and lack of emotional health which has led to increased cases of drug addictions, suicide, etc.

- ◆ **Anekantavada** – There is no absolute truth and hence truth has multiple faces as people have different opinions/views. There should be tolerance in people towards other's views which helps keep the society in harmony.
- ◆ The youth of the future should follow Jainism not to propagate Jainism as a religion but to live life with emotional wellbeing which is important as the world becomes more competitive and mental health needs to be focused on.

Mr. Manish Mehta – “Vote of Thanks”

- ◆ Provided his thanks to Mahaveerji for sharing his views on Jainism with the context of Covid-19 and providing a modern perspective which is extremely relevant for the youth of the country.
- ◆ Urged all Sangh members to share their information in the RatnaSangh app so that more people can contribute towards activities of the Sangh in whatever capacity they can.

YOUTUBE LINK OF THE WEBINAR –

<https://youtu.be/XnF5ZAYExMo>

जिनवाणी पर अभिमत

श्री विनोद सेठ

जिनवाणी पत्रिका को पढ़कर तीन अभिव्यक्तियाँ कर रहा हूँ-

(1) पूज्य आचार्यप्रवर के प्रवचन पर-

आर्य दान देना दाता का कार्य है,
प्रतिदिन अनिवार्य, मान-सम्मान के साथ।

पाप को पुण्य में ढालना है।।

(2) श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. के

‘आलोचना पाठ’ पर-

गौतममुनि का ये सन्देश,

पाप भीरू हो देश-विदेश।।

(3) श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. के ‘पुण्य प्रकाश’ पर-

पुण्य प्रकाश को नित पढ़ो, दुःख मिट सुख मिल जाए।
परम सुगन्धित पुण्य से, जीवन खुल-खिल जाए।

-रामललाजी का रास्ता, जौहरी बाजार,

जयपुर-302003 (राज.)

कृति की 2 प्रतियाँ अपेक्षित हैं



नूतन साहित्य



श्री गौतमचन्द्र जैन

अन्तर जानें (द्वितीय भाग)-लेखक-कन्हैया लाल लोढ़ा। सम्पादक-रणजीत सिंह कूमट। प्रकाशक एवं प्राप्ति-स्थल-प्राकृत भारती अकादमी, 13 ए, मेन मालवीय नगर, जयपुर-302017 (राज.), फोन 0141-2524828, ISBN No. 978-81-946417-7-3, Email : prabharati@gmail.com, Website : www.prakritbharati.net, सितम्बर 2020, पृष्ठ-225+29 = 254, मूल्य-375 रुपये।

प्रस्तुत पुस्तक से पूर्व लेखक की 'अन्तर जानें-भाग प्रथम' पुस्तक में मुख्य रूप से तत्त्वज्ञान एवं साधना सम्बन्धी विषयों का विवेचन हुआ है। लेखक ने प्रस्तुत 'अन्तर जानें-द्वितीय भाग' में मुख्य रूप से कर्मसिद्धान्त से सम्बन्धित विषयों का प्रतिपादन किया है। साथ ही अन्य अनेक प्रचलित मान्यताओं से सम्बन्धित विषयों का स्पष्टीकरण किया है। लेखक ने अपने विस्तृत ज्ञान, चिन्तन तथा स्वानुभूति से प्राप्त नवनीत को प्रमाण सहित प्रस्तुत किया है, जो तर्क संगत एवं समीचीन प्रतीत होता है। लेखक ने आठ कर्मों और उनकी प्रकृतियों के पारम्परिक अर्थ से अलग अर्थ प्रस्तुत किये हैं, जिनका परस्पर कोई विरोध नहीं है और जो कई विसङ्गतियों का भी समाधान करने वाले हैं। जैसे कि मोहनीय कर्म के अन्तर्गत कषाय के स्वरूप पर प्रकाश डालते हुए लोढ़ा सा. का कथन है कि चित्त का कुपित, क्षुब्ध या अशान्त होना क्रोध कषाय है। अपने से भिन्न पदार्थों से तादात्म्य स्थापित कर अपने को उस रूप मानना मान कषाय है। अनित्य वस्तु आदि के प्रति ममत्व का आचरण माया कषाय है। पर पदार्थों के संग्रह की लालसा लोभ कषाय है। इसी प्रकार से कषाय में सहायक भावों को नोकषाय कहा है और उन नोकषायों के भी नये अर्थ दिये हैं।

प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने कर्म और करण, कषाय और योग तथा उत्कर्षण, अपकर्षण, संक्रमण

उद्वर्तनाकरण और अपवर्तनाकरण आदि को परिभाषित करते हुए उनमें अन्तर स्पष्ट किया है। प्रत्येक अध्याय में लेखक ने प्रश्नोत्तर शैली को अपनाते हुए सर्वप्रथम जिज्ञासा प्रकट की है और फिर जिज्ञासा का समाधान करते हुए विषय को स्पष्ट किया है, जिससे पुस्तक रोचक हो गई है और पाठक को उसको पढ़ने एवं विषय को जानने-समझने की उत्सुकता बनी रहती है। पुस्तक में ज्ञान, उपयोग, कर्म और उनकी प्रकृतियों के साथ-साथ उनमें अन्तर तथा मुक्ति का स्वरूप एवं मुक्ति-प्राप्ति के सरलतम उपाय भी बताये हैं।

प्रस्तुत पुस्तक सरल भाषा में लिखी गई है, जो पाठकों के लिए सुगम और सुबोध है। यह सभी जिज्ञासु जनों के लिए ज्ञानवर्धक, भ्रान्त धारणाओं का निराकरण करने वाली और जीवनोपयोगी है। यह पुस्तक सामान्य जनों और विद्वज्जनों के साथ-साथ साधु-साध्वियों के लिए भी पठनीय है।

चउप्पण-महापुरुषचरित्र-रचयिता-आचार्य शीलांक। अनुवादिका-साध्वी डॉ. सुरेखाश्रीजी। प्रकाशक एवं प्राप्ति-स्थल-प्राकृत भारती अकादमी, 13 ए, मेन मालवीय नगर, जयपुर-302017 (राज.), फोन 0141-2524828, ISBN No. 978-81-946417-3-5, प्रथम संस्करण-सितम्बर 2020, पृष्ठ-628+25 = 653, मूल्य-800 रुपये।

प्रस्तुत ग्रन्थ 'चउप्पन्न महापुरुष चरित्र' की रचना श्री शीलांकाचार्य द्वारा प्राकृत भाषा में की गई है, जो गद्य-पद्य मय है। इसका हिन्दी भाषा में अनुवाद साध्वी डॉ. सुरेखाश्रीजी के द्वारा किया गया है। जैसा कि इसके नाम से ही स्पष्ट ज्ञात होता है कि इसमें 54 महापुरुषों के चरित्र का वर्णन किया गया है। वर्तमान अवसरिणी में 54 उत्तम पुरुष (महापुरुष) हुये हैं, जिन्हें शलाका पुरुष भी कहते हैं। 54 महापुरुष हैं-24 तीर्थङ्कर, 12 चक्रवर्ती, 9 बलदेव और 9 वासुदेव। इन सभी के चरित्र का वर्णन प्रस्तुत ग्रन्थ 'चउप्पन्न महापुरुष चरित्र' में किया गया है। आचार्य शीलांक की यह रचना विक्रम

सम्बत् 1050 या 1150 की है, अतः यह श्री हेमचन्द्राचार्य द्वारा रचित लोकप्रिय ग्रन्थ त्रिषष्टिशलाका पुरुष चरित्र से पूर्व की रचना मानी जाती है। प्रस्तुत ग्रन्थ की रचना का उद्देश्य यह है कि मानव समाज त्याग एवं नीति के मार्ग में प्रवृत्ति करे। इसमें मूल रूप से धर्मकथा का विषय प्रस्तुत किया गया है। धर्मकथाओं में शुभ एवं अशुभ कर्मों के बन्ध के फलस्वरूप प्राप्त होने वाले देव, नरक, तिर्यञ्च, मनुष्यभव, नीरोगता, सुरूपता, रुग्णता, दारिद्र्य, सम्पन्नता आदि का वर्णन किया गया है। ताकि इन सबको जानकर पाठक या श्रोता अशुभ कर्मों का परित्याग करे और शुभ कर्मों में प्रवृत्ति करे।

प्रस्तुत पुस्तक में तीर्थङ्करों का जीवन चरित्र पढ़ने से ज्ञात होता है कि तीर्थङ्कर होने वाले जीवों को भी हिंसा आदि से उपार्जित दुष्कर्मों का कटुफल भोगना ही पड़ता है। इसलिये हमें कोई भी कर्म या प्रवृत्ति करते समय जागरूक और सावधान रहना चाहिए ताकि हम अशुभ कर्म नहीं करें और हमें कटुफल नहीं भोगने पड़ें।

प्रस्तुत ग्रन्थ का हिन्दी अनुवाद साध्वीजी ने बहुत ही सरल एवं सुबोध तथा रोचक शैली में किया है, जो कि पाठक को सहजता एवं सुगमता से समझ में आ जाता है। जीवन चरित्र एवं सम्बन्धित कहानियाँ भी इतनी रोचक हैं कि उनको लगातार पढ़ने का मन करता है। प्रस्तुत पुस्तक में समकालीन तीर्थङ्कर और चक्रवर्ती का चरित्र भी साथ-साथ प्रस्तुत किया गया है, जो प्रसङ्गानुसार उचित ही है। प्रथम तीर्थङ्कर श्री ऋषभदेव स्वामी के पूर्वभवों के वर्णन के साथ तीर्थङ्कर भव का विस्तार से वर्णन किया गया है। इसी प्रकार से अन्तिम तीर्थङ्कर भगवान महावीर (वर्द्धमान) स्वामी के चरित्र का भी विस्तृत वर्णन हुआ है, जिसमें अन्य सभी समकालीन घटनाओं का भी वर्णन है। सभी चक्रवर्ती, बलदेव और वासुदेव के चरित्र का वर्णन करते हुए श्री कृष्णवासुदेव का भी विस्तृत प्रामाणिक वर्णन किया गया है।

अतः साध्वी डॉ. सुरेखाश्रीजी कृत प्रस्तुत हिन्दी अनुवाद सभी श्रावक-श्राविकाओं एवं साधु-साध्वीवृन्द के लिए पठनीय है। यह ज्ञानवर्धक है तथा

इसमें वर्णित शिक्षाओं एवं कथाओं से शुभ प्रवृत्ति करने एवं अशुभ प्रवृत्ति से निवृत्त होने की प्रेरणा प्राप्त होती है।

विश्व की प्राचीन सभ्यताएँ-लेखक-डॉ. एस. एल. नागोरी। **प्रकाशक**-श्री सरस्वती सदन, ए-1/32, सफ़दरजंग इन्वलेव, नई दिल्ली-110029, फोन 011-26101539, 26183864, **चतुर्थ संस्करण**-2009, **पृष्ठ**-292, **मूल्य**-350 रुपये।

प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने विश्व की प्राचीन सभ्यताओं के बारे में प्रामाणिक जानकारी व्यवस्थित एवं क्रमबद्ध रूप से प्रस्तुत की है। पुस्तक में पूर्व ऐतिहासिक युग का वर्णन करते हुए विश्व की प्राचीन सभ्यताओं मिश्र, मैसोपोटामिया, बेबीलोनिया, असीरिया, चीन, फारस, यूनान, रोम और भारत की सभ्यताओं का विशद एवं विस्तृत वर्णन किया गया है। भारत की सभ्यता में सिन्धु घाटी की सभ्यता, ऋग्वैदिक कालीन सभ्यता और महाकाव्यकालीन सभ्यता का सामाजिक, राजनैतिक एवं धार्मिक वर्णन विस्तृत रूप से किया गया है। साथ ही जैनधर्म एवं बौद्धधर्म का भी वर्णन करते हुए उसके उदय एवं प्रसार के कारणों का भी उल्लेख किया गया है।

पुस्तक की भाषा सरल, सुगम एवं सुबोध है तथा शैली रोचक है। पुस्तक इतनी रोचक शैली में लिखी गई है कि उसको बीच में छोड़ने का मन ही नहीं करता और उपन्यास की तरह लगातार पढ़ने की इच्छा करती है। इतिहास के विद्यार्थियों के लिए पुस्तक अतीव उपयोगी है। प्रस्तुत पुस्तक का चतुर्थ संस्करण प्रकाशित होना ही इसकी लोकप्रियता सिद्ध करता है।

आप्रतिम महायोगी आचार्यश्री नाबेश-पथ के आलोक-आचार्य श्री विजयराजजी म.सा.। **सम्पादक मण्डल**-नेमीचन्द कोठारी, डॉ. दिलीप धींग, डॉ. हंसा हिंङ्ग, डॉ. सुभाष कोठारी। **प्रकाशक एवं प्राप्ति स्थल**-श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी शान्त-क्रान्ति जैन श्रावक संघ, उदयपुर (राज.), **प्रकाशन वर्ष**-दिसम्बर 2020, **पृष्ठ**-450, **मूल्य**-500 रुपये।

प्रस्तुत विशेषाङ्क 'समता विभूति आचार्यश्री

नानेश' की जन्म शताब्दी 2019-20 के शुभ अवसर पर प्रकाशित हुआ है। इसमें आचार्यश्री नानेश की जीवन-साधना और उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व के सम्बन्ध में अनेक साधु-साध्वियों तथा श्रद्धाशील श्रावक-श्राविकाओं के लेख प्रस्तुत किये गये हैं। विशेषाङ्क को आठ भागों में विभाजित किया गया है। प्रथम भाग भावाञ्जलि में सर्वप्रथम लेखाञ्जलि के अन्तर्गत आचार्यश्री विजयराजजी म.सा. ने 'आचार्यश्री नानेश सदा जयवन्त हो' शीर्षक लेख के माध्यम से अपनी भावाभिव्यक्ति करते हुए आचार्यश्री नानेश के आठ प्रमुख गुणों का वर्णन किया है। इसी लेखाञ्जलि उप विभाग में महास्थविर श्री शान्तिमुनिजी म.सा., तपस्वी गुरुदेव श्री सुन्दरमुनिजी म.सा., आचार्य सम्राट् डॉ. श्री शिवमुनिजी म.सा., श्रमण संघीय युवाचार्य श्री महेन्द्रऋषिजी म.सा., पूज्य श्री युगप्रभजी म.सा. और उपाध्याय श्री रमेशमुनिजी शास्त्री म.सा. ने भी आचार्य के गुणों का वर्णन करते हुए अपनी श्रद्धाभिव्यक्ति प्रस्तुत की है। काव्याञ्जलि उपविभाग में आचार्यश्री नानेश के गुणों का कीर्तन करते हुए दो सुन्दर कविताएँ प्रस्तुत की गई हैं। लेखाञ्जलि उपविभाग के अन्तर्गत बीस महासतीवृन्द के लेख प्रस्तुत किये गये हैं।

विशेषाङ्क के द्वितीय भाग में आचार्यश्री नानेश के 'व्यक्तित्व का उन्मेष, कर्तृत्व का आलोक' के अन्तर्गत डॉ. सुभाष कोठारी और नेमीचन्द कोठारी के व्यक्तिगत अनुभव प्रस्तुत किये गये हैं जो उनकी आचार्यश्री के प्रति दृढ़ श्रद्धा को व्यक्त करते हैं।

विशेषाङ्क के तृतीय विभाग शोधाञ्जलि के अन्तर्गत 11 विद्वान् और विदुषियों के लेख प्रस्तुत किये गये हैं। इन लेखों में आचार्यश्री नानेश के साहित्य-साधना के अन्तर्गत सृजित महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ-पुस्तकों का परिचय दिया गया है। साथ ही समता दर्शन के प्रमुख सिद्धान्तों का भी परिचय दिया गया है। समीक्षण ध्यान पद्धति की भी वर्तमान सन्दर्भ में उपयोगिता बतलायी है।

विशेषाङ्क के चतुर्थ भाग लेखाञ्जलि के अन्तर्गत 33 लेखकों के लेख प्रकाशित किये गये हैं। लेखकों ने

विभिन्न लेखों में आचार्यश्री नानेश के व्यक्तित्व, कृतित्व और उनकी साधना तथा समाज को योगदान के विषयों का सुन्दर चित्रण प्रस्तुत किया है, जो पाठकों को पढ़ने के लिए आकर्षित करता है और प्रेरणा प्रदान करता है। आचार्यश्री ने गुराड़िया बलाई जाति के भाई-बहनों को मांस-मदिरा का त्याग करवाया और उन्हें धर्मपाल जैन के नाम से सम्बोधित किया। यह घटना जैन समाज के इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में लिखने योग्य है। लेखों में आचार्यश्री की गुणग्राहकता, अप्रमत्तता, साहित्य-सर्जन और संघ में समन्वय आदि प्रमुख गुणों का विस्तृत विवेचन किया गया है। समीक्षण ध्यान-पद्धति को भी विस्तार से समझाया गया है।

प्रस्तुत विशेषाङ्क के पाँचवें भाग 'अपने अनुभव/अपना गौरव' में 49 श्रावक-श्राविकाओं के लेख प्रस्तुत किये गये हैं, जो सभी चमत्कारी, प्रभावोत्पादक एवं श्रद्धा को दृढ़ करने वाले हैं।

विशेषाङ्क के छठे भाग में आचार्यश्री नानेश के जीवन पर आधारित नाट्याञ्जलि प्रस्तुत की गई है। सातवाँ भाग अर्चना और अभ्यर्थना से सम्बन्धित है। इसके उपविभाग भजनाञ्जलि में पाँच सुन्दर भजन दिये गये हैं, जो गेय एवं स्मरणीय हैं। काव्याञ्जलि नाम उपविभाग में बारह सुन्दर कविताओं का संग्रह है, जो भावना प्रधान और गेयात्मक भी हैं। कतिपय कविताएँ तो बहुत ही प्रभावकारी एवं रुचिकर हैं। मुक्ताञ्जलि उपविभाग में 9 कवियों द्वारा प्राकृत और हिन्दी भाषा में सुन्दर मुक्तक प्रस्तुत किये गये हैं।

विशेषाङ्क के अन्तिम अष्टम भाग 'सूक्ताञ्जलि' में चार कवियों द्वारा सूक्तियाँ प्रस्तुत की गई हैं। इस अन्तिम भाग में पावस-प्रवचन : समता के स्वर-12 से कतिपय नानेश चिन्तन करने योग्य एवं जीवन में अनुकरण करने योग्य हैं। अन्त में आचार्यश्री नानेश के जन्म शताब्दी में किये गये जप-तप-त्याग का विवरण प्रस्तुत किया गया है।

-पूर्व डी.एस.ओ., 70, 'ज्यणार', विश्वकर्मा नगर-
द्वितीय, महारानी फॉर्म, जयपुर (राजस्थान)

10 अप्रैल 2021

जिनवाणी 77

ISSN 2249-2011

समाचार विविधा

पूज्य आचार्यप्रवर की सन्निधि में पीपाड़ की धर्मधरा निरन्तर सिञ्चित

रत्नसंघ के अष्टम पट्टधर, आगमज्ञ, प्रवचन-प्रभाकर, सामायिक-शीलव्रत-रात्रिभोजन-त्याग एवं व्यसनमुक्ति के प्रबल प्रेरक, जिनशासन गौरव, परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा., महान् अध्यवसायी, सरस व्याख्यानी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. आदि ठाणा-10 पीपाड़ के श्रीमती शरदचन्द्रिका मुणोत भवन में विराजित हैं।

जब से परमाराध्य पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. आदि चारित्रात्माओं का पीपाड़ की पावनधरा पर पदार्पण हुआ है तब से ही तप-त्याग, धर्म-ध्यान का ठाट लगा हुआ है और चारित्रात्माओं के अनवरत आवागमन होने से पीपाड़ श्रीसंघ में उत्साह, उमङ्ग, भक्ति भावना, सेवा उत्तरोत्तर वृद्धिगत होने से धर्म गङ्गा प्रवाहित हो रही है।

सन्त-सतीवृन्द के आवागमन एवं पीपाड़ श्री संघ की अक्षुण्ण विहार-सेवा, साधर्मी सेवा सम्भाल, सन्त-सती-सेवा भक्ति से पीपाड़ नगरी में धर्मोल्लास एवं जयघोषों से गुञ्जायमान होने का अद्भुत नज़ारा दिन-प्रतिदिन सन्त-सतीवृन्द के आवागमन से बना हुआ है। इसी शृङ्खला में अनेक सन्त-सती मण्डल जो समय-समय पर पावन-पदार्पण कर, पूज्य आचार्यश्री के दर्शन एवं चरणसन्निधि में गुरुदेशनाओं और मार्गदर्शन को आत्मसात् कर, गुरु आज्ञा-आराधन हेतु धर्मप्रभावना के लिए इंगित क्षेत्रों की ओर क्रम बढ़ा रहे हैं। 27 फरवरी 2021 को व्याख्यात्री महासती श्री दर्शनलताजी म.सा. आदि ठाणा-3 का आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों में धर्मप्रभावना करते पुनः पीपाड़ कुछ रोज पश्चात् पावन पदार्पण हुआ। 28 फरवरी को श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा., श्रद्धेय श्री विनम्रमुनिजी म.सा. धर्मप्रभावना हेतु नागौर की ओर विहार कर आगे बढ़े।

5 मार्च को व्याख्यात्री महासती श्री मनोहरकँवरजी म.सा., महासती श्री कौशलयाजी म.सा. आदि ठाणा-3 का पूज्य आचार्यश्री की पावन चरणसन्निधि में आगमन हुआ। 21 मार्च को गुरु आज्ञा आराधन में विहार कर धर्मप्रभावना हेतु ग्रामानुग्राम विचरण हेतु प्रस्थान किया। 22 मार्च को व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकँवरजी म.सा. आदि ठाणा-4 एवं 23 मार्च को व्याख्यात्री महासती श्री विमलावतीजी म.सा. आदि ठाणा-3 भी गुरु आज्ञा आराधन के ध्येय से धर्मप्रभावना करते हुए ग्रामानुग्राम में पीपाड़ से विहार कर इंगित क्षेत्रों की ओर बढ़ रहे हैं। तपागच्छीय महासती श्री पूर्णप्रज्ञाजी म.सा. आदि ठाणा-4 पूज्य आचार्यप्रवर के दर्शन एवं सुखसाता की पृच्छा हेतु सेवा में पधारे। 27 मार्च को तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. आदि ठाणा-3 का आचार्य भगवन्त की सेवा में पदार्पण हुआ।

संघसंरक्षक सुश्रावक श्री मोफतराजजी मुणोत, राष्ट्रीय अध्यक्ष सुश्रावक श्री प्रकाशचन्द्रजी टाटिया, राष्ट्रीय महामन्त्री श्री धनपतजी सेठिया आदि कई पदाधिकारियों ने संघहित चिन्तनार्थ मार्गदर्शन प्राप्त किया। श्रीकालाहस्ती श्रीसंघ, नागौर श्रीसंघ, ब्यावर, जयपुर, पाली, गोटन, कोटा, राधानिकुञ्ज-जयपुर, सूरत, नाशिक, महेसिया, गोविन्दगढ़, भीलवाड़ा, चेन्नई, विल्लीपुरम्, सवाईमाधोपुर, गोपालगढ़-भरतपुर, बालोतरा, कोयम्बटूर, बारणी, विराई, जोधपुर, सैलाना, इन्दौर, मुम्बई, बेंगलुरु, मानसरोवर-जयपुर, लालभवन-जयपुर, बीकानेर, शोरापुर, अजमेर, चौथ का बरवाड़ा, पालनपुर तथा मारवाड़ अञ्चल के अनेक ग्राम-नगरों से श्रीसंघ चातुर्मासार्थ विनति करने, साधना-आराधना के लिए एवं दर्शन-वन्दन हेतु पधारे।

सुश्रावक श्री अरविन्दजी पारख-सूरत ने सदार शीलव्रत एवं सुश्रावक श्री हंसमुखराजजी रांका (भोपालगढ़ वाले), चामराजपेट ने सदार शीलव्रत के प्रत्याख्यान पूज्य गुरुदेव के पावन मुखारविन्द से ग्रहण किये। विजयनगर के पूनमिया श्रावकों श्री पारसजी खटोड़, श्री निहालजी साण्ड, श्री नाहरजी एवं संजयजी श्री श्रीमाल का प्रत्येक पूर्णिमा को दर्शन-वन्दन का क्रम संकल्प पूर्वक विगत 25 वर्षों से अक्षुण्ण एवं अनवरत जारी है।

श्री चुन्नीलालजी बाघमार के निधन के पश्चात् परिवारजन (मेड़ता वाले) चेन्नई से, संधारापूर्वक सुश्राविका श्रीमती भँवरीदेवीजी धर्मसहायिका श्री पनराजजी ओस्तवाल के समाधिमरण के पश्चात् परिवारजन (भोपालगढ़ वाले), सैलाना से सुश्रावक श्री रतनजी रांका के देहावसान के पश्चात् रांका परिवारजन, मुम्बई से सुश्राविका श्रीमती पुष्पाजी धर्मपत्नी श्री विजयराजजी के स्वर्गगमन पर सुपुत्र श्री धनपतजी भंसाली परिवारजन, श्री लाडेशजी अपनी रांका माताजी के निधन के बाद, श्री आनन्दजी चोरड़िया के निधन के बाद श्री कपिलजी चोरड़िया एवं परिवारजन ने पूज्य आचार्यश्री की चरण सन्निधि में आकर दर्शन-वन्दन कर मांगलिक श्रवण, धर्मध्यान एवं साधना-आराधना का लाभ लिया।

वीरपरिवारजनों में हैदराबाद से गुगलिया परिवार, जोधपुर से श्री इन्द्रचन्दजी गाँधी आदि परिवारजन, वीरपिता एवं चेन्नई संघाध्यक्ष श्री प्रेमचन्दजी कवाड़ सपरिवार, कोटा से वीरपिता श्री घनश्यामजी जैन (पोरवाल) आदि ने गुरु चरणसन्निधि में पधार कर दर्शन-वन्दन का लाभ लिया।

पीपाड़ श्रीसंघ के श्रावकसंघ, श्राविका मण्डल, युवक परिषद्, बालिका मण्डल सभी के सर्वतोभावेन सेवा, स्वधर्मी वात्सल्य एवं श्रद्धाभक्ति, भावना, धर्मध्यान, तप-त्याग में अनवरत सहभागिता धर्मोल्लासपूर्वक गतिशील है।

-गिर्राज जैन

पोरवाल क्षेत्र एवं अन्य ग्राम-नगरों में निरन्तर धर्म प्रभावना

चौथ का बरवाड़ा-सवाईमाधोपुर में दीक्षा शताब्दी की सम्पूर्ति के अनन्तर मधुरव्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. आदि ठाणा का विहार कुशतला की ओर हुआ। कुशतला ग्राम में घर भले ही कम हैं, पर भक्ति किसी बड़े शहर से कम नहीं थी। इस बीच गम्भीरा के बाबूलालजी उज्ज्वल अपने गाँव सन्तों को लेकर गये और मुई, रवांजना चौड़, बगावदा, पचाला एवं चौरू आदि छोटे-छोटे गाँवों में भी लोगों की विशाल उपस्थिति गुरुभक्ति का सहज में परिचय करवा रही थी।

इस क्रम में विहार करते हुए सन्तों का चौथ का बरवाड़ा आगमन हुआ और यहाँ पर सन्तों के आह्वान पर रात्रिकालीन कम से कम 21 संवर और प्रवचन के समय प्रतिष्ठान बन्द करने का निर्णय लिया। परिणामस्वरूप प्रवचन में उपस्थिति पर्युषण जैसी नज़र आती और बेला, तेला, उपवास एवं तीन अठाइयाँ चातुर्मास के सावन माह की याद दिलाती हैं तथा दो भाइयों ने आजीवन शीलव्रत के प्रत्याख्यान लेकर सन्तों के प्रति अपार भक्ति का परिचय दिया। साथ ही जहाँ एक ओर युवा पीढ़ी का धर्म के प्रति लगाव का स्पष्ट नज़ारा सामूहिक रविवारीय कक्षा की उपस्थिति से लगाया जा सकता है तो दूसरी ओर महिला मण्डल की सामूहिक कक्षा में महिलाओं का उपस्थित होना भी धर्मजागरणा की बानगी प्रस्तुत कर रहा था।

सन्तों के दर्शनार्थ भाई-बहिनों का आना भी निरन्तर जारी है तथा आगामी धार्मिक पर्वों को लेकर छोटे-छोटे गाँव और शहरों में होड़ लगी हुई है, कोई भी सन्त-सेवा, धर्म-साधना-आराधना में पीछे नहीं रहना चाहता है।

-ऋषभ जैन

नागौर-पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के आज्ञानुवर्ती श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा. आदि ठाणा-2 का विचरण नागौर क्षेत्र में चल रहा है। 28 फरवरी को पीपाड़ शहर से विहार करके रणसीगाँव, हरियाडाना, बोरुंदा,

गोटन आदि ग्राम-नगरों में धर्म जागरण की प्रभावी प्रेरणा करते हुए 17 मार्च को नागौर पधारे। श्री योगेशमुनिजी म.सा. के लगभग 21 वर्ष के लम्बे अन्तराल के पश्चात् नागौर पधारने पर श्रद्धालुओं में उमंग, उल्लास और भक्ति की अपूर्व लहर है। सन्त सन्निधि की प्यास लिये हुए हर एक धर्म क्रियाओं में लोग बढ़-चढ़कर भाग ले रहे हैं। प्रतिक्रमण एवं रात्रिकालीन युवाओं की ज्ञान-चर्चा में अच्छी उपस्थिति हर्ष जन्य है। पूज्य सन्त भगवन्तों ने नागौर वासियों के अत्यधिक आग्रह स्वीकार करके फाल्गुनी चौमासी पर्व नागौर में तप-त्याग पूर्वक मनाया। 11 दिन के अल्प प्रवास एवं फाल्गुनी चौमासी पर्व पर तपस्या का प्रवाह भी निरन्तर बना रहा और सात की तपस्या एक, तेले की 5, बेले 2, एकाशन के तेले 5, आयम्बिल 5 एवं उपवास, एकाशन नीवी आदि भी अच्छी संख्या में हुए।

-सन्त कुमार सुराणा, नागौर

जयपुर-साध्वी प्रमुखा विदुषी महासती श्री तेजकँवरजी म.सा. आदि ठाणा-13 स्वास्थ्य कारणों से महारानी फार्म में श्री गौतमचन्द्रजी जैन (डी.एस.ओ.) के निवास पर विराज रहे हैं। स्वास्थ्य में समाधि है। व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा-3 का उपचार के पश्चात् जयपुर के विभिन्न उपनगरों और क्षेत्रों को फरसने के पश्चात् हरसाना, हिण्डौनसिटी, भरतपुर आदि क्षेत्रों को फरसने के लिए शीघ्र जयपुर से विहार होने की सम्भावना है। व्याख्यात्री महासती श्री निष्ठाप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा-3 हिण्डौनसिटी चातुर्मास सम्पन्न कर जयपुर उपचार हेतु पधारे। उपचार में सभी टैस्ट नॉर्मल आये। फाल्गुनी चातुर्मास हेतु लाल भवन पधारने की सम्भावना है। यहीं पर मासिक सामूहिक सामायिक का कार्यक्रम एक वर्ष के अन्तराल के पश्चात् पुनः रविवार 28 मार्च को रखा गया है।

-सुरेशचन्द कोठारी, मन्त्री

पल्लीपट्ट-व्याख्यात्री महासती श्री विवेकप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 22 मार्च को पल्लीपट्ट पधारे। प्रातः 9 से 10 बजे प्रवचन हुआ, जिसमें लगभग 60-70 श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति रही। पल्लीपट्ट में लगभग 15 घर हैं। दोपहर में धार्मिक कक्षा 2 से 3.30 बजे रहती थी जिसमें लगभग 20 बहनें थोकड़ा का अध्ययन करने आती थी। शाम को प्रतिक्रमण एवं रात्रि 10 बजे तक धर्मचर्चा चलती थी। 26 मार्च को भिक्षु दया हुई, 28 मार्च को होली चातुर्मास के दिन प्रवचन 9 से 11.15 बजे तक चला, जिसमें लगभग 150 श्रावक-श्राविका उपस्थित रहे। बाहर क्षेत्र से चेन्नई, चितूर, पुतूर, तिरुतनी, कोलार, आरकोणम, कनकामा छत्रम आदि क्षेत्रों से दर्शनार्थी पधारे। होली चातुर्मास के दिन एकाशन, उपवास, बेआसना, नीवी, बेले, तेले आदि की तपस्या सम्पन्न हुई। लगभग आठ जोड़ों ने मर्यादा रखकर ब्रह्मचर्य व्रत के प्रत्याख्यान ग्रहण किये। बहिनों में रोज संवर हुआ।

-कुशलचन्द मेहता, मन्त्री

आवश्यक सूत्र की लिखित परीक्षा 04 जुलाई, 2021 को

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड द्वारा आवश्यक सूत्र की लिखित परीक्षा 04 जुलाई, 2021 को आयोजित की जायेगी। शिक्षण बोर्ड की जुलाई माह में आयोजित होने वाली कक्षा 1 से 12 तक की परीक्षा इस बार नहीं होगी। थोकड़ों की कक्षा 1 से 12 तक की परीक्षा जनवरी-2022 में आयोजित की जायेगी। सभी से विनम्र निवेदन है कि आवश्यक सूत्र की लिखित परीक्षा में स्वयं भी भाग लें तथा अन्य भाई-बहिनों को भी परीक्षा में भाग लेने हेतु अवश्य प्रेरित करने की कृपा करावें। आवश्यक सूत्र की परीक्षा से सम्बन्धित नियमावली इस प्रकार है-

1. परीक्षा में आवेदन करने की अन्तिम दिनांक 07 जून, 2021 है।
2. यह फार्म ऑनलाइन एवं ऑफलाइन दोनों तरह से उपलब्ध है। ऑनलाइन फार्म रत्नसंघ एप्प एवं लिंक के माध्यम से भरे जा सकेंगे। जिन्होंने पूर्व में फार्म भर दिया है, उन्हें वापस भरकर भिजवाने की आवश्यकता नहीं है।
3. परीक्षा का समय 3.00 घण्टे रहेगा, जिसमें दो तरह के प्रश्न पत्र होंगे। प्रथम Objective Type के प्रश्न-पत्र का

समय आधा घण्टा रहेगा, जिसमें श्रावक सामायिक-प्रतिक्रमण सूत्र (सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर से प्रकाशित) पुस्तक में से 30 अंकों के प्रश्न पूछे जायेंगे। इन सभी प्रश्नों के उत्तर बिना पुस्तक देखे कण्ठस्थ ज्ञान के आधार पर देना होगा। आधा घण्टे बाद प्रथम प्रश्न-पत्र वापस ले लिया जायेगा। (श्रावक सामायिक प्रतिक्रमण सूत्र पुस्तक का मूल्य 10/- रखा गया है।)

4. द्वितीय Subjective Type के प्रश्न पत्र का समय 2 घण्टे 30 मिनट रहेगा, जिसमें आवश्यक सूत्र आगम की पुस्तक साथ में लेकर प्रश्नों के उत्तर ढूँढ़कर लिखे जा सकेंगे। द्वितीय प्रश्न-पत्र 70 अंकों का रहेगा।
5. परीक्षा हेतु सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल द्वारा प्रकाशित आगम 'आवश्यकसूत्र' ही मान्य होगा। इस पुस्तक में से कहीं से भी प्रश्न दिए जा सकते हैं। परीक्षार्थियों के लिए आवश्यकसूत्र पुस्तक का अर्द्धमूल्य 50/-रखा गया है। जो परीक्षार्थी इस परीक्षा में भाग लेने हेतु फार्म भरकर देंगे, उन्हें ही पुस्तक दी जायेगी। डाक द्वारा पुस्तक माँगवाने पर उसका व्यय अलग से देय होगा।
6. जहाँ कम से कम 10 परीक्षार्थी होंगे वहाँ परीक्षा का केन्द्र रखा जायेगा।
7. आवश्यक सूत्र की परीक्षा में बैठने वाले सभी परीक्षार्थियों को प्रोत्साहन पुरस्कार दिया जायेगा।
8. उक्त परीक्षा से सम्बन्धित अन्य कोई जानकारी एवं किसी भी प्रकार का उचित परिवर्तन होने पर उसकी सूचना जिनवाणी, रत्नम् एवं रत्नसंघ एप्प के माध्यम से दी जायेगी। परीक्षा सम्बन्धी सर्वाधिकार शिक्षण बोर्ड का रहेगा।

आवश्यकसूत्र की पुस्तकें प्राप्त करने हेतु देश के विभिन्न स्थानों में निम्नलिखित महानुभावों से सम्पर्क किया जा सकता है-(1) शान्तिलालजी गुन्देचा, हैदराबाद- 9247199931 (2) प्रसन्नजी बागमार, बैंगलोर- 9880665551 (3) दिलखुश जी जैन, मुम्बई- 9930732407 (4) आशीष जी जैन, दिल्ली- 9811110381 (5) किरणजी जैन, पंजाब-9463118600 (6) ज्ञानचन्दजी भण्डारी, कर्नाटक-9019555670 (7) महेन्द्रजी कटारिया, नागपुर-9850345615 (8) रेशमाजी लुंकड़, बालोतरा-9649318421 (9) सुरेखाजी भटेवरा, पुणे- 9405875108 (10) मधुबालाजी ओस्तवाल, नाशिक-9422510571 (11) कन्हैयालाल जी जैन, भीलवाड़ा- 8764409328 (12) सुमन जी जैन, हरियाणा-8950182548 (13) सुनीलजी नाहर, सूरत-9825125718 (14) आशाजी मेहता, अहमदाबाद-7228865547 (15) विनोदजी जैन, चेन्नई-9444734394 (16) सुरेशजी हिंगड़, चेन्नई-9444852330 (17) मनोजजी जैन, जलगांव- 9156898108 (18) महावीर प्रसादजी जैन, पल्लीवाल क्षेत्र-8949816129 (19) आनन्दजी जैन, पोरवाल क्षेत्र-8104104285 (20) रिकूजी जैन, मध्यप्रदेश-9685073123 (21) सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर-0141-2575997 (22) प्रधान कार्यालय, जोधपुर-7610953735 -सुभाषचन्द नाहर-सचिव अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

आचार्य हस्ती दीक्षा-शताब्दी वर्ष में रत्नसंघ एप्प के माध्यम से आयोजित ऑनलाइन मासिक प्रतियोगिताओं का परिणाम

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड द्वारा सामायिक- स्वाध्याय के प्रबल प्रेरक, इतिहास मार्तण्ड, युगमनीषी, अध्यात्म-योगी, परम पूज्य आचार्य भगवन्त 1008 श्री हस्तीमलजी म.सा. के दीक्षा शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में रत्न संघ मोबाइल एप्प के माध्यम से 10 मासिक प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

प्रथम प्रतियोगिता में 583, द्वितीय प्रतियोगिता में 634, तृतीय प्रतियोगिता में 538, चतुर्थ प्रतियोगिता में 445, पाँचवीं प्रतियोगिता में 385, छठी प्रतियोगिता में 270, सातवीं प्रतियोगिता में 209, आठवीं प्रतियोगिता में

213, नवमी प्रतियोगिता में 176 तथा दसवीं प्रतियोगिता में 138 भाई-बहिनों ने भाग लिया। दो-दो प्रतियोगिताओं के अंकों को जोड़कर वरीयता प्राप्त करने वाले प्रथम प्रतिभागी को 2100/-, द्वितीय प्रतिभागी को 1500/-, तृतीय प्रतिभागी को 1100/- एवं प्रत्येक परीक्षा के 10 प्रतिभागियों को सान्त्वना पुरस्कार स्वरूप 250/- की राशि प्रदान की गई। वरीयता सूची इस प्रकार है-

प्रथम-द्वितीय प्रतियोगिता-प्रियंकाजी जैन-जयपुर (प्रथम), संजयजी देशलहरा-इन्दौर (द्वितीय) और कमलेशजी मुणोत-मुम्बई (तृतीय)। **तृतीय-चतुर्थ प्रतियोगिता**-कविनाजी डागा-जयपुर (प्रथम), कमलेशजी मुणोत-मुम्बई (द्वितीय), और दिव्याजी मेहता-जोधपुर (तृतीय)। **पांचवीं एवं छठी प्रतियोगिता**-कमलेशजी मुणोत-मुम्बई (प्रथम), चिरागजी जैन-मुम्बई (द्वितीय) और इन्दुजी मुणोत-मुम्बई (तृतीय)। **सातवीं-आठवीं प्रतियोगिता**-रेखाजी सुराणा- नागौर (प्रथम), सुनीलचन्दजी डागा-जयपुर (द्वितीय) और कमलेशजी मुणोत-मुम्बई (तृतीय)। **नवमी-दसवीं प्रतियोगिता**-दिव्याजी मेहता-जोधपुर (प्रथम), पल्लवीजी जैन-जयपुर (द्वितीय) और संजयजी देशलहरा-इन्दौर (तृतीय)।

नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं तथा सामायिक-प्रतिक्रमणसूत्र से सम्बन्धित सभी दस मासिक परीक्षाओं में भाग लेने वाले प्रतिभागियों में वरीयता प्राप्त करने वालों को विशेष पुरस्कार देने का निर्णय किया गया था। जिसके अन्तर्गत निम्नांकित महानुभावों ने सबसे कम समय में सर्वोच्च अंक प्राप्त कर वरीयता (मेरिट) में स्थान प्राप्त किया।

प्रथम स्थान (3100/-) कमलेशजी मुणोत-मुम्बई, **द्वितीय स्थान (2500/-)** कविनाजी डागा-जयपुर **तृतीय स्थान (2100/-)** सुनीलजी डागा-जयपुर। प्रतिभागी अपने अंक तथा अपना वरीयता स्थान रत्न संघ एप्प के ऑनलाइन मासिक प्रतियोगिता विभाग में देख सकते हैं।

-सुभाषचन्द नाहर-सचिव

पर्युषण पर्वाराधना हेतु स्वाध्यायी आमन्त्रित कीजिए

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर विगत 76 से भी अधिक वर्षों से सन्त-सतियों के चातुर्मासों से वंचित गाँव/शहरों में 'पर्वाधिराज पर्युषण पर्व' के पावन अवसर पर धर्मारोधन हेतु योग्य, अनुभवी एवं विद्वान् स्वाध्यायियों को बाहर क्षेत्र में भेजकर जिनशासन एवं समाज की महती सेवा करता आ रहा है। इस वर्ष भी उन क्षेत्रों में जहाँ जैन सन्त-सतियों के चातुर्मास नहीं हैं, स्वाध्यायी बन्धुओं को भेजने की व्यवस्था है। इस वर्ष **पर्युषण पर्व 04 से 11 सितम्बर 2021** तक रहेंगे। अतः देश-विदेश के इच्छुक संघ के अध्यक्ष/मन्त्री इस हेतु कार्यालय को अपनी माँग सूचित करने का श्रम करारें। **सम्पर्क सूत्र**-संयोजक/सचिव, श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, प्रधान कार्यालय-प्लॉट नं. 2, सामायिक स्वाध्याय भवन, नेहरूपार्क, जोधपुर-342003 (राज.) फोन 0291-2624891, 94141-26279 (कार्यालय), 94605-51096 (संयोजक) ईमेल-swadhyaysanghjodhpur@gmail.com

विज्ञान और जैनदर्शन पर अन्तरराष्ट्रीय सम्मेलन सम्पन्न

विज्ञान और जैनदर्शन पर चार दिवसीय अन्तरराष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस का ऑनलाइन आयोजन 19 से 22 मार्च को किया गया। इस कॉन्फ्रेंस में 27 देशों से दस हजार प्रतिनिधियों ने फेसबुक और जूम के माध्यम से भाग लिया। फ्लोरिडा इंटरनेशनल यूनिवर्सिटी स्टीवन जे. ग्रीन स्कूल ऑफ इंटरनेशनल एण्ड पब्लिक अफेयर और जैन एजुकेशन एण्ड रिसर्च फाउण्डेशन अमेरिका की ओर से यह कॉन्फ्रेंस सफलता पूर्वक आयोजित की गई। इस दौरान एफआईयू में जैन समुदाय के योगदान और जैन अध्ययन प्रोग्राम को पहचान देने के लिए मियामी के मेयर ने 19 मार्च को जैन अध्ययन प्रोग्राम दिवस घोषित किया है। अपनी तरह की इस अनूठी कॉन्फ्रेंस का विषय आधुनिक विज्ञान में चेतना (Consciousness) और जैनदर्शन रखा गया था। कॉन्फ्रेंस में यूएसए, यूके, भारत, तंजानिया, कनाडा, रूस सहित अनेक देशों के दस हजार प्रतिनिधियों ने जूम और फेसबुक में लाइव देखा। कॉन्फ्रेंस का उद्घाटन यूनाइटेड स्टेट में भारत के राजदूत तरनजीतसिंह सन्धु ने किया। इस दौरान उन्होंने जैनदर्शन के महत्त्व को लेकर अपने

विचार साझा किए। उन्होंने कहा कि जैनदर्शन की विभिन्न अवधारणाओं को अपनाकर दुनिया को रहने के लिए सबसे सुन्दर जगह बनाया जा सकता है। पद्मश्री डॉ. आर.ए. माशेलकर ने कॉन्फ्रेंस की रूपरेखा रखी। उन्होंने कहा कि कैसे भारतीय दर्शन खासतौर से जैनदर्शन ज्ञान के लिहाज से सबसे समृद्ध है। डॉ. गुलाब कोठारी कॉन्फ्रेंस के समापन समारोह के मुख्य अतिथि थे।

यह ऐसी अन्तरराष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस थी जिसमें जैन समुदाय के चारों सम्प्रदाय के लोग एक मञ्च पर आए हैं। कॉन्फ्रेंस में मुनिश्री महेन्द्रकुमारजी ने जैनदर्शन के विभिन्न पहलुओं पर अपने विचार साझा किए। इस बीच उन्होंने आई.सी.एस.जे.पी. से जुड़े लक्ष्य को लोगों के सामने रखा। उन्होंने कहा कि जैन अवधारणाओं को लेकर वैज्ञानिक शोध और प्रयोग किए जाने चाहिए। आचार्य विजयन्दीघोषसूरीजी ने जीवों में मौजूद चेतना के विषय में वैज्ञानिक तथ्य साझा किए। इस दौरान श्री नम्रमुनिजी म.सा. ने विज्ञान और अध्यात्म के पहलू पर प्रकाश डाला। उन्होंने कॉन्फ्रेंस को ज्ञान का त्यौहार बताया। आचार्य कनकनन्दीजी, डॉ. नरेन्द्रजी भण्डारी, डॉ. नारायण लालजी कछारा, डॉ. सुरेन्द्रसिंहजी पोखरना आदि ने भी शोधपत्र प्रस्तुत किए। फेडरेशन ऑफ जैन एसोसिएशन ऑफ नार्थ अमेरिका, जैन विश्व भारती, दाविस और वर्धमान चेरिटेबल फाउण्डेशन, स्प्रिचुअल टेक्नोलॉजी रिसर्च फाउण्डेशन (मुम्बई) और वर्ल्ड जैन कॉन्फ्रेंस ने कार्यक्रम के आयोजन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। सभी शोधपत्र अंग्रेजी भाषा में प्रस्तुत हुए।

चार दिन चली इस कॉन्फ्रेंस (Internation Conference on Science and Jain Philosophy) के विभिन्न सत्रों में लगभग 40 सन्तों एवं विद्वानों ने चेतना के विभिन्न पक्षों पर शोध प्रस्तुति दी एवं चर्चा हुई। इसके आयोजन में डॉ. समणी चैतन्य प्रज्ञा, मियामी एवं डॉ. प्रताप संचेती, जोधपुर की विशेष भूमिका रही। जिनवाणी सम्पादक डॉ. धर्मचन्द जैन ने 'चेतना की अभिव्यक्ति पर नामकर्म का प्रभाव' (Effect of Nāmakarma on Manifestation of consciousness) विषय पर विचार प्रस्तुत किए।

-डॉ. प्रताप संचेती

जैन स्थानकों की डॉयरेक्ट्री हेतु सूचनाएँ आमन्त्रित

सम्पूर्ण भारत के श्वेताम्बर स्थानकवासी सम्प्रदाय में वर्तमान में दस हजार से अधिक स्थानों पर जैन स्थानक भवन एवं श्रीसंघ विद्यमान हैं, लेकिन उन सभी की जानकारीयों कहीं पर भी उपलब्ध नहीं हैं। यह कमी काफी समय से महसूस की जा रही है। इस कमी की पूर्ति हेतु एवं सभी जैन स्थानकों की सम्पूर्ण जानकारीयों एक स्थान पर सुगमता से ज्ञात हो सकें इसी उद्देश्य से उज्ज्वल प्रकाशन मुम्बई द्वारा सम्पूर्ण भारत के श्वेताम्बर स्थानकवासी सम्प्रदाय के सभी जैन स्थानक उपाश्रय भवनों की एक वृहद् डॉयरेक्ट्री का प्रकाशन किया जा रहा है, जिसमें सभी जैन स्थानकों का नाम, पूरा पता, सम्पर्क सूत्र, वर्तमान संघ अध्यक्ष-मन्त्री का नाम, फोन नं., मोबाइल नम्बर आदि की जानकारीयों प्रकाशित की जायेगी। हमारे पास अभी तक दो हजार से अधिक जैन स्थानकों की जानकारीयों एकत्रित हो चुकी हैं। अतः सभी श्री संघों से नम्र निवेदन है कि अपने-अपने क्षेत्रों में विद्यमान स्थानकवासी जैन सम्प्रदाय के जैन स्थानकों उपाश्रय भवनों की जानकारीयों निम्न पते पर शीघ्र प्रेषित करने की कृपा करावें। सम्पर्क सूत्र- बाबूलाल जैन 'उज्ज्वल' सम्पादक, उज्ज्वल प्रकाशन, 105, तिरुपति अपार्टमेण्ट्स, आकुर्ली रोड नं. 1, कांदिवली (पूर्व), मुम्बई-400101 (महाराष्ट्र) फोन 022-28871278, 9324521278 Email : ujjwalprakashan@gmail.com

कोरोना का पुनः प्रसार, बचाव ही है आधार

वर्तमान में कोरोना की दूसरी लहर का प्रसार हो रहा है। भारत के कुछ राज्यों में इसका असर अधिक हो रहा है। अतः पुनः सभी से निवेदन है कि अपने क्षेत्र में जारी सरकारी गाइडलाइन का पालन करें तथा बचाव के सभी

उपाय अपनाएँ। साथ ही श्रद्धेय साधु-साध्वीगण, जो हमारी अमूल्य धरोहर हैं, उनकी सुरक्षा और स्वास्थ्य-सम्बन्धी देखभाल आदि भी हमारा परम कर्तव्य है, एतदर्थ विशेष ध्यान रखने की आवश्यकता है।

गत तीन माह से कोरोना वेक्सीन अलग-अलग स्तर पर लगाई जा रही है और आगे भी जारी रहेगी। वेक्सीन कोरोना संक्रमण होने से रोकने का प्रयास है, कोरोना हो जाने पर उसे दूर करने की दवाई नहीं है। अतः कोरोना से संक्रमित नहीं हों, उसके उपाय आज भी मास्क पहनना, 6 फीट की दूरी और सेनेटाइजेशन ही है।

पूर्व में संघ द्वारा जारी गाइडलाइन के अनुसार ही सन्त-सतीवृन्द की सुरक्षा का विशेष खयाल रखावें। कुछ ध्यान रखने हेतु बिन्दु इस प्रकार हैं-

1. सन्त-सतीवृन्द के विचरण-विहार में स्वस्थ श्रावक-श्राविकाएँ ही सेवा दें।
2. विहार के दौरान रुकने वाले क्षेत्रों की पूरी जानकारी पूर्व में प्राप्त कर लें, सुरक्षित क्षेत्रों में ही सन्त-सतीवृन्द रुकें, इसका विशेष खयाल रखावें।
3. सन्त-सतीवृन्द को दर्शन-वन्दन दूर से ही किए जावें। किसी भी तरह से उन्हें छुएँ नहीं। स्पर्श निषेध के व्यापक पालनार्थ पूर्णरूपेण वस्तुरहित होकर (मुखवस्त्रिका, नाकवस्त्रिका को छोड़कर) आयें।
4. धार्मिक स्थलों पर सभी धार्मिक सभाएँ, प्रवचन, शिविर, सामूहिक कक्षाएँ आदि कार्यक्रम स्थानीय प्रशासन द्वारा जारी दिशा-निर्देशों के आधार पर ही आयोजित हों। उसमें भी जगह की क्षमता से 50 प्रतिशत व्यक्ति ही सम्मिलित हों, इसका विशेष खयाल रखें।
5. स्थानक में मुँहपत्ती एवं नाकवस्त्रिका के बिना प्रवेश वर्जित हो। स्थानक में प्रवेश के पूर्व हाथों को सेनेटाइज करें। थर्मल स्क्रीनिंग द्वारा शरीर का तापमान लेना भी आवश्यक है। स्वस्थ व्यक्ति को ही स्थानक परिसर में प्रवेश करने दें।
6. कई राज्यों में सरकार ने बाहरी राज्यों से आने वाले महानुभावों का कोरोना टेस्ट अनिवार्य कर दिया है। अतः बाहर राज्यों से पधारने वाले दर्शनार्थियों की कोरोना रिपोर्ट अवश्य देखें।
7. करने योग्य/न करने योग्य बातों की सूचना स्थानक के बाहर जगह-जगह पर प्रदर्शित करें।
8. भोजनशाला में प्रत्येक व्यक्ति के बीच बैठने के लिये पर्याप्त दूरी कम से कम 6 फीट रखें। खाना बनाते और परोसते समय पर्याप्त दूरी आपस में रखें।
9. अगर किसी भी दर्शनार्थी या कर्मचारी को खाँसी, बुखार, जुखाम, गले में खराश, आँखें लाल, उल्टी, दस्त, शरीर में अकड़न, तकलीफ आदि हो तो तुरन्त डॉक्टर या सरकारी अधिकारी को सूचित करें।
10. संघ-सेवक सन्त-सती सेवा में सन्नद्ध रहता है, इसलिए उसको कोई बाहरी वस्तु नहीं सौंपे। वह सिर्फ सन्त-सतियों के दवा, पुस्तक, साफ-सफाई में ही संलग्न रहे ताकि संक्रमण से बचा रहे एवं सन्त-सतीवृन्द का भी बचाव हो सके।
11. स्थानक के बाहर मोबाइल जमा करते वक्त, मोबाइल रखने वाला व्यक्ति, दस्ताने पहने और दस्ताने पहन कर ही मोबाइल प्राप्त करें और वापस दे।
12. नकारात्मक सोच नहीं रखें। अफवाहों पर विश्वास नहीं करें। जागरूकता ही बचाव है।
13. उपर्युक्त नियमों के अतिरिक्त समय-समय पर केन्द्र सरकार, राज्य सरकार एवं जिला कलेक्टर द्वारा जारी दिशा-निर्देशों की पालना भी सुनिश्चित करवावें।

अगर नियमों की पालना में शिथिलता, उल्लंघन जैसी स्थिति नज़र आवे तो सन्त-सतीवृन्द एतदर्थ प्रभावी प्रेरणा एवं संघ को पालनार्थ निर्देशित कर सकते हैं। कोरोना महामारी से साध्वाचार एवं सन्त-सतीवृन्द रूपी अमूल्य धरोहर की रक्षा सर्वोपरि है।

-धनपत सेठिया, महामन्त्री-अ. भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

संक्षिप्त समाचार

नई दिल्ली—ज्ञानोदय चेरिटेबल सोसायटी जैन बच्चों के लिए सैकेण्डरी तक शिक्षा जारी रखने हेतु आवश्यक आर्थिक सहायता प्रदान करती है। इच्छुक महानुभाव आवेदन-पत्र हेतु निम्नलिखित पते पर सम्पर्क करें— **Gyanoday Charitable Society (Regd. No. 40194/2001) 572, Asiad Village, New Delhi-110049** Ph. 011-26493538/26492386 or 9811449431 www.gcsdelhi.org (फार्म हमारी वेबसाइट से भी डाउनलोड कर सकते हैं) **नोट**—श्रीसंघों के कार्यकर्ताओं से निवेदन है कि अपने नगर के योग्य जैन विद्यार्थियों को सहायता हेतु ऊपर लिखे पते पर सम्पर्क करें। सभी जानकारी और सहायता कार्य गुप्त रखे जाते हैं।

बधाई

दिल्ली—श्रीमती रुचिजी जैन को तीर्थङ्कर महावीर विश्वविद्यालय, मुरादाबाद ने 'जैन परम्परा में योग-विज्ञान' विषय पर पीएच-डी. की उपाधि प्रदान की है। डॉ. श्रीमती रुचि जैन ने इसके पूर्व रसायन शास्त्र में MSc, Science of living and Yoga Meditation में MSc तथा जैन विद्या तुलनात्मक धर्म एवं दर्शन विषय में एम.ए. की उपाधि प्राप्त की है। डॉ. रुचि ने यह शोध कार्य प्रो. वीरसागर जैन के कुशल निर्देशन में सम्पन्न किया है। आप राष्ट्रपति सम्मानित सुप्रसिद्ध वरिष्ठ मनीषी प्रो. फूलचन्दजैन 'प्रेमी' एवं विदुषी डॉ. मुन्नीपुष्पा जैन, वाराणसी की पुत्रवधू हैं तथा युवा राष्ट्रपति सम्मान से सम्मानित प्रो. अनेकान्त कुमार जैन की धर्मपत्नी हैं।



नवबर्ह—कु. आयुषीजी सुपुत्री श्री नरेशचन्दजी जैन (मन्त्री-श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, नदबई) ने एम.ए. (ड्राइंग एण्ड पेंटिंग) 2019 में महाराजा सूरजमल ब्रज विश्वविद्यालय, भरतपुर से सर्वाधिक अंक प्राप्त किए। 10 मार्च, 2021 को विश्वविद्यालय प्राङ्गण में राजस्थान के राज्यपाल एवं कुलाधिपति श्री कलराज मिश्र की वर्चुअल अध्यक्षता में कुलपति द्वारा भव्य समारोह में उन्हें गोल्ड मेडल से सम्मानित किया गया।



जोधपुर—संघनिष्ठ श्रावकरत्न श्री नवरतनजी डागा को श्री वर्धमान जैन रिलीफ सोसायटी, जोधपुर के सचिव पद पर मनोनीत किया गया है। अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के पूर्व महामन्त्री एवं सम्प्रति उपाध्यक्ष श्री डागा एक उत्साही एवं विवेकशील कार्यकर्ता हैं। श्रावकरत्न श्री पूरणराजजी अबानी पुनः सर्वसम्मति से अध्यक्ष बने हैं।



जोधपुर—अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के पूर्व महामन्त्री श्री जगदीशमलजी कुम्भट को महावीर इण्टरनेशनल ब्लू सिटी, जोधपुर के 2021-2023 की अवधि के लिए सर्वसम्मति से चेयरमेन नियुक्त किया गया है। कुम्भट साहब सेन्ट ऑस्ट्रिन्स सीनियर सैकेण्डरी स्कूल के भी अध्यक्ष होने के साथ ही कई सामाजिक संस्थाओं में विभिन्न पदों पर अपनी सेवाएँ प्रदान कर रहे हैं।



पीपाड़ा—श्री अरिहंतजी सुपुत्र श्री उज्ज्वलचन्दजी मेहता को राजस्थान सरकार द्वारा स्वायत्त शासन विभाग की पैरवी करने के लिए राजकीय अधिवक्ता के पद पर मनोनीत किया गया है। मेहता वर्तमान में लोकसभा सांसद दमन-दीव के विधिक सलाहकार और पुलिस वेलफेयर बोर्ड की राष्ट्रीय कार्यकारिणी में सदस्य भी हैं एवं इससे पहले मेहता भारत सरकार के श्रम एवं रोजगार मन्त्रालय और सूचना एवं प्रसारण मन्त्रालय की सलाहकार समितियों में भी सदस्य रह चुके हैं।



विजयनगर-प्राज्ञ भवन में आयोजित 07 मार्च, 2021 के भव्य समारोह में श्री रतनलालजी-श्रीमती किरणजी नाहर को सीनियर सिटीजन वेलफेयर सोसायटी अजमेर द्वारा 'समाज रत्न' से अलङ्कृत किया तथा भारत विकास परिषद् राजस्थान मध्य प्रान्त द्वारा नाहर दम्पती को 'विकास रत्न' से सम्मानित किया गया। सन् 1993 से ही नाहर दम्पती द्वारा सेवा, संस्कार के कार्य, पर्यावरण-संरक्षण, सामूहिक सरल विवाह का आयोजन, रक्तदान-शिविर, मेडिकल केम्पों का आयोजन, भारत को जानो जैसे अनेकों कार्यक्रम सम्पादित करवाये गये हैं।



श्रद्धाञ्जलि

नीमच-धर्मनिष्ठ, श्रद्धानिष्ठ, संघ समर्पित, समाज सेवी वीरपिता सुश्रावक श्री शम्भूसिंहजी कांठेड़ का 21 मार्च, 2021 को देहावसान हो गया। आपने नीमच श्रीसंघ के मन्त्री पद को सुशोभित किया। नगर में आने वाले समस्त सन्त-सतिथों की खूब अर्हनिश भाव से सेवा की। आपकी सुपुत्रियाँ रत्नसंघ में दीक्षित हैं जो अभी महासती श्री श्रुतिप्रभाजी म.सा. और महासती श्री मतिप्रभाजी म.सा. के नाम से जिनशासन की अपूर्व प्रभावना कर रहे हैं। आपकी एक सुपुत्री आचार्यश्री नानेश के चरणों में दीक्षित हुई जो महासती श्री किरणप्रभाजी म.सा. के नाम से जिनशासन की प्रभावना कर रहे हैं। आपने अपने जीवन में अनेक त्याग-प्रत्याख्यान ग्रहण कर रखे थे। त्याग-तप से युक्त उनका जीवन हम सबके लिए प्रेरणादायी है। वरिष्ठ स्वाध्यायी के रूप में स्वाध्याय संघ को सेवाएँ प्रदान की थी। आपके सुपुत्र संघसेवी वीरभ्राता श्री विनोदजी कांठेड़ संघ में सक्रिय कार्यकर्ता के रूप में अपनी सेवाएँ प्रदान कर रहे हैं। स्वधर्मी वात्सल्य एवं आतिथ्य-सत्कार में भी कांठेड़ परिवार सदैव समर्पित रहा है।



-*धन्यत सेठिया, महामन्त्री*

भरतपुर-धर्मनिष्ठ, गुरुभक्त, श्रावकरत्न श्री सुमेरचन्दजी जैन (मुड़िया वाले) का 28 फरवरी, 2021 को 71 वर्ष की अवस्था में देवलोकगमन हो गया। आपका जीवन सरलता, मधुरता, विनम्रता, कर्तव्यनिष्ठा एवं स्पष्टता आदि सद्गुणों से युक्त था। आप आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्रजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी विदुषी महासती श्री सौभाग्यवती म.सा. की सुशिष्या महासती श्री विजयश्रीजी म.सा. के सांसारिक दादाजी थे। आपने वर्धमान श्वेताम्बर स्थानकवासी संघ, भरतपुर के उपाध्यक्ष पद को सुशोभित किया। आपने 2013 के महासती मण्डल के चातुर्मास में संयोजक पद को कर्तव्यनिष्ठा से सम्पादित किया। अखिल भारतीय श्री जैन रत्न संस्कार केन्द्र के वर्षों तक पल्लीवाल-पोरवाल क्षेत्र के निरीक्षक पद पर अमूल्य सेवाएँ प्रदान की। आपकी धर्मसहायिका श्रीमती राजुलजी जैन ने आपको धर्ममार्ग पर बढ़ाने में सहयोग किया। आपके ज्येष्ठ सुपुत्र श्री मानवेन्द्रजी जैन, श्री जैन रत्न युवक परिषद् भरतपुर के मन्त्री पद को सुशोभित कर चुके हैं। आपके छोटे सुपुत्र श्री राजीवजी जैन (आर.टी.ओ. इन्स्पेक्टर) जयपुर में रहकर संघ की गतिविधियों में भाग लेते हैं। आपकी पुत्रवधुएँ श्रीमती गीताजी जैन अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल की कार्यकारिणी सदस्या एवं श्राविका मण्डल, भरतपुर की मन्त्री रह चुकी हैं। आपकी छोटी पुत्रवधु श्रीमती अलकाजी जैन धार्मिक प्रवृत्ति की श्राविका हैं। आपका सम्पूर्ण परिवार संघ की गतिविधियों में तन, मन एवं धन से सक्रिय रूप से जुड़ा है। आप अपने पीछे धर्मनिष्ठ एवं संस्कारवान भरापूरा परिवार छोड़कर गये हैं।



-*नरेशचन्द जैन, नदबर्द*

अहमदाबाद-धर्मनिष्ठ, सन्तसेवी, गुरुभक्त सुश्रावक श्री चन्द्रप्रकाशजी सुपुत्र स्व. श्री विजयमलजी मेहता का 6 मार्च, 2021 को 67 वर्ष की आयु में स्वर्गवास हो गया। आपने सम्पूर्ण सजग अवस्था में अन्तिम वक्त में सागरी संधारे के प्रत्याख्यान किये थे। धर्म और गुरु के प्रति आपका समर्पण भाव प्रशंसनीय रहा। आप बहुत ही सेवाभावी और विनम्र स्वभाव के धनी थे। जोधपुर जिले के मूल बारणी खुर्द गाँव



के निवासी मेहताजी अहमदाबाद में राजस्थान एस.एस.जैन संघ स्थानक में ट्रस्टी रहे। आप अपने पीछे पत्नी अनीता देवी, तीन पुत्र उन्नत मेहता, प्रियंक मेहता और सौम्य मेहता तथा पोता-पोती का भरापूरा परिवार छोड़ कर गये हैं।

दिल्ली-धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती नगीनादेवीजी धर्मपत्नी स्व. लाला कल्लूमलजी तातेड़ का 99 वर्ष की आयु में



11 मार्च, 2021 को देहावसान हो गया। आप दया, दान एवं परोपकार के कार्यों में सर्वदा अग्रणी रही। आचार्यप्रवर पूज्य श्री हस्तीमलजी म.सा., संघ शास्ता श्री सुदर्शनलालजी म.सा., आचार्यश्री आनन्दऋषिजी म.सा., आचार्यश्री शिवमुनिजी म.सा. आदि की आप कृपा पात्र रहीं। अनेक वरिष्ठ सन्तों की आपने खूब सेवा की। आपके सुपुत्र श्री निर्मलजी जैन जैन कॉन्फ्रेंस के तीन बार राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष रहे हैं तथा अन्य सुपुत्र श्री धर्मचन्दजी, अभयचन्दजी भी माता-पिता से विरासत में मिले संस्कारों से मतिमान बने हुए हैं। श्री निर्मलजी जैन ने अपने विवाह की 50वीं वर्षगाँठ को सादगीपूर्वक मनाते हुए भगवान महावीर अस्पताल में भारी-भरकम दान राशि समर्पित की। 12 मार्च को आयोजित श्रद्धाञ्जलि सभा में अनेक गुरुभगवन्तों एवं पूज्य साधु-साध्वियों के धर्मसन्देश पढ़कर सुनाये गये। -सुभाष ओसवाल, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष-जैन कॉन्फ्रेंस

कोटा-धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती शीलालाजी धर्मसहायिका श्री सूरजमलजी जैन (पर्यावरण विशेषज्ञ एवं लेखक) का



22 फरवरी, 2021 को स्वर्गवास हो गया। आप धर्मनिष्ठ, सेवाभावी एवं आत्मीयता से सम्पन्न श्राविका थी। आपकी छोटी ननद डॉ. सुश्री शान्तिजी जैन जो जीवन भर परिवार के अभिन्न अङ्ग के रूप में आपके साथ रहीं, दोनों का अगाध प्रेम इतना था कि शान्तिजैन के देह परिवर्तन दिवस पर ही 22 फरवरी को आपका देहावसान हुआ। आपने जैन आगम सम्मत शास्त्रों के अनुरूप जीवन जीया। आप अपने पीछे भरापूरा परिवार जिनमें दो सुपुत्र डॉ. विनोदजी, सुबोधजी जैन तथा सुपुत्री लीनूजी गुप्ता सहित सभी उच्च शिक्षा प्राप्त हैं। -डॉ. विनोद जैन

जोधपुर-धर्मनिष्ठ, श्रद्धानिष्ठ सुश्राविका श्रीमती ललिताजी धर्मपत्नी श्री सुनीलजी भण्डारी का संधारा पूर्वक प्रयाण



09 मार्च, 2021 को हो गया। आपने अपने जीवन में अधिकांश समय धर्मध्यान, तप-त्याग एवं सन्त-सतियों की सेवा में बिताया। आपके ससुर स्व. श्री माणकमलजी भण्डारी ने कई वर्षों तक अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के महामन्त्री के रूप में सेवाएँ प्रदान की। आपका सम्पूर्ण परिवार संघ द्वारा संचालित गतिविधियों में एवं प्रवृत्तियों में निष्ठापूर्वक जुड़ा हुआ है। आपके ज्येष्ठजी श्री दौलतमलजी भण्डारी श्री जैन रत्न युवक परिषद् की गतिविधियों में सक्रिय रहे हैं। आप अपने पीछे दो पुत्र एवं एक पुत्री का भरापूरा परिवार छोड़कर गई हैं। -धनयत सेठिया, महामन्त्री

प्रतापनगर-जयपुर-धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती राजबाईजी धर्मसहायिका श्री सुरेश कुमारजी जैन (खातोली वाले)



का 13 मार्च, 2021 को देवलोकगमन हो गया। आपकी सन्त-सतीवृन्द के प्रति गहरी आस्था थी। आप नियमित सामायिक-स्वाध्याय, माला जप-तप की साधना-आराधना किया करती थी। आप धार्मिक प्रवृत्ति की भद्र महिला थी। आप अपने पीछे संस्कार सम्पन्न, धर्मशील भरापूरा परिवार छोड़कर गई है। आपके सुपुत्र श्री पवनजी, मनीषजी एवं अंकितजी जैन हैं। आपने 2019 में जयपुर-प्रतापनगर के चातुर्मास में साध्वी प्रमुखा महासती तेजकँवरजी म.सा. से आजीवन शीलव्रत के नियम ग्रहण किए थे।



पुष्कर-अनन्य गुरुभक्त, संघसेवी, धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्री पुखराजजी लुणावत का 88 वर्ष एवं धर्मसहायिका सुश्राविका श्रीमती कंचनदेवीजी लुणावत का 84 वर्ष की आयु में देहावसान एक साथ 17 सितम्बर, 2020 को हो गया। आप दोनों दृढ़ संकल्प के धनी, दूरदृष्टा एवं सहृदय

समर्पित श्रावक-श्राविकारत्न थे। आप दोनों के जीवन में गहराई तक सरलता, सहजता, करुणा एवं दया की भावना व्याप्त थी। आप दोनों सन्त-सतियों की सेवा में हमेशा अग्रणी रहते थे। आप दोनों ने जैनधर्म के सभी नियमों का पालन किया। आपने जीवन में नियमित सामायिक की पालना की। आप दोनों ने कई स्थानों पर स्थानक, छात्रावास, धार्मिक संस्थाओं के उन्नयन में महत्वपूर्ण अर्थसहयोग प्रदान किया। आप दोनों के जीवन में धर्ममय आस्था, गुरु के प्रति श्रद्धा तथा जनसामान्य के प्रति करुणा की भावना थी। आपने अपने जीवन में गरीबों के उद्धार के लिए कई कार्य किये। आपने अपने जीवन में कई अठाइयाँ, तेले एवं उपवास किये। आपके जीवन का एक ही लक्ष्य था कि आपके देखते हुए कोई भी इन्सान भूखा नहीं सोये। आप दोनों के विचारों में नवीनता और प्राचीनता का समन्वय था। -

हजौर-धर्मनिष्ठ श्रावकरत्न श्री रमेशचन्दजी सुपुत्र स्व. श्री तेजमलजी जैन (चिमनबाग वाले) का 07 मार्च, 2021 को संधारापूर्वक 64 वर्ष की आयु में प्रयाण हो गया। आप बहुत ही सरल स्वभावी, स्नेही, मृदुभाषी एवं शान्तचित्त, सात्त्विक विचारों वाले श्रावकरत्न थे। सन्त-सतीवृन्द की सेवा एवं समाज-कल्याण के कार्यों में रुचि लेते थे। वर्तमान में आप पोरवाल संघ समिति क्षेत्र सवाईमाधोपुर के कार्यकारिणी सदस्य थे। आप अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़कर गये हैं।



-धर्मन्द्र कुमार जैन, जयपुर

जयपुर-सन्तसेवी, श्रद्धानिष्ठ श्राविकारत्न श्रीमती उम्मेदकैवर जी मेहता (जोधपुर वाले) धर्मसहायिका स्व. श्री नरपतराजी मेहता का 88 वर्ष की आयु में 17 मार्च, 2021 को देहावसान हो गया। आपने हर समय देव-गुरु-धर्म की शरण रखी। आप अत्यन्त सरल, सहज एवं सौम्य व्यवहार की धनी थी। आपका पूरा जीवन धार्मिक एवं सत्कार्यों से ओतप्रोत था। जीवनभर आप जैनधर्म एवं साधु-सन्तों की सेवा के प्रति समर्पित रहीं और मृत्यु के उपरान्त भी आपने अपना भौतिक शरीर लोकहित भावना से समाज को समर्पित कर दिया। निधन के पश्चात् आपकी इच्छानुसार परिवारजन द्वारा आपका देहदान मेडिकल कॉलेज जे.एन.यू. जयपुर में किया गया। आप अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़कर गई हैं। -शेखरराज मेहता, जयपुर



किशनगढ़-धर्मनिष्ठ गुरुभक्त सुश्रावक श्री कालूसिंहजी चोरड़िया का 23 फरवरी, 2021 को 101 वर्ष की आयु में देहावसान हो गया। सभी गुरु भगवन्तों के आप निकट में रहे तथा 70 वर्षों से रात्रि-भोजन त्याग, आजीवन 1 विगय का त्याग, 50 वर्ष की आयु में शीलव्रत अङ्गीकार किया। दैनिक जीवन में सामायिक-स्वाध्याय अन्त समय तक करते रहे और समता की प्रतिमूर्ति थे। आप अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़कर गये हैं।



-पुष्पेन्द्र महण्योत

उपर्युक्त विवंगत आत्माओं को जिनवाणी परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धाञ्जलि

जिनवाणी पर अभिमत

जिनवाणी का मार्च, 2021 अङ्क पढ़ा, इस अङ्क में हस्तीमलजी म.सा. का आत्मशक्ति, अनन्त उपकारी अप्रमत्त साधक गुरु हीरा, व्यावहारिक-जीवन के नीति-वाक्य, विज्ञान पर अहिंसा का अंकुश आवश्यक इत्यादि आलेख बहुत अच्छे लगे। व्यक्ति को समता, अहिंसा, स्वावलम्बन की सीख जिनवाणी पढ़ने से मिलती है। यह पत्रिका हर महीने ज्ञान का सागर अपने में समेट कर लाती है। इस पत्रिका के बेहतर अङ्कों हेतु आपको बहुत-बहुत धन्यवाद। आज हमें ऐसी पत्रिकाएँ अवश्य पढ़नी चाहिए, क्योंकि इससे हमें समाज में बेहतर व्यवहार करने की सीख मिलती है।

-नारायणी देवी, सहायक कर्मचारी

महाराज श्री राजाराम बालिका छात्रावास, महाराज श्रीराजाराम शिक्षण संस्थान, पाल रोड, जोधपुर (राज.)

जिनवाणी पर अभिमत

श्री अभय कुमार जैन

जैन जीवनशैली विशेषाङ्क-(1) जीवन शैली के उन्नयन हेतु अमृत वाक्-आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा., एक-एक बात को ध्यान रख, चिन्तन-मनन और आचारण किया जाये तो मानव-जीवन बहुत ही सुन्दर तनावरहित और धर्मयुक्त बन जायेगा। परिणामस्वरूप जीवन-जीने की कला तथा मरने की कला भी आ जायेगी तथा भविष्य भी सुखमय (परलोक) हो जायेगा। (2) सम्पादकीय-प्रो. धर्मचन्दजी जैन, एक-एक बिन्दु को ध्यान में रखकर आचरण किया जाये तो व्यक्ति का व्यक्तिगत, सामाजिक, पारिवारिक, आर्थिक व्यापारिक कार्य स्थल का जीवन बहुत ही शान्त, उन्नत और तनावरहित रहेगा तथा वह लोकप्रियता को प्राप्त करेगा। (3) जैनों का आहार : कितना वैज्ञानिक-डॉ. नन्दलाल बोरदिया, 42 वर्ष पूर्व का लेख आज भी उतना ही सटीक उपयोगी है तथा आगे आने वाले कई दशकों तक इस प्रकार के लेख उपयोगी और प्रासङ्गिक रहेंगे। पत्रिका के लेखों का चयन भी कितना प्रामाणिक है कि लेख हर काल और समय के लिए उपयुक्त है। (4) जैन जीवनशैली और तनाव प्रबन्ध-डॉ. तृप्ति जैन, आधुनिक युग तनाव का युग कहा जाता है, क्रम-क्रम पर तनाव है। ऐसी स्थिति में तनाव के कारण, तनाव प्रबन्ध तथा तनाव रहित रहने के जो उपचार बताये निश्चित ही जीवन के हर क्षेत्र में प्रत्येक व्यक्ति के लिए यह लेख पठनीय और चिन्तन तथा आचरण योग्य है।

- 'तृप्ति' बन्दर रोड़, भवानी मण्डी (राज.)

सुविचार

- ◆ बाहर का यह अपरम्पार संसार, जो हमारे मन में भरा रहता है उसको बन्द किये बिना एकाग्रता साधना कठिन है। अपनी आत्मा की अपार ज्ञान शक्ति हम बाह्य शुद्ध वस्तुओं में खर्च कर डालते हैं। यह ज्ञान शक्ति हमारी अमूल्य थाती है, परन्तु हम इन्हें स्थूल विषयों में खर्च कर डालते हैं। यह सब्जी अच्छी नहीं बनी, इसमें नमक कम पड़ा। इस विचार से ही हमारा ज्ञान खर्च हो जाता है। जो ज्ञान परमेश्वर की प्राप्ति करा सकता है उसे हम साग-सब्जी के जायके की चर्चा में खो देते हैं।
- ◆ बन्ध की प्रक्रिया को रोकने का उपाय करना ही श्रेयस्कर है। उपाय सीधा-सा है कर्म के उदय में हम शान्त रहे।
- ◆ चाहे जैसी कठिन परिस्थिति हो अपने ज्ञान-ध्यान के लिए समय निकाल लेना चाहिए। यह अमूल्य जीवन चला जा रहा है इसे व्यर्थ नहीं गँवाना।
- ◆ पाप का मूल लोभ, रोग का मूल गरिष्ठ भोजन और शोक का मूल राग-द्वेष इन तीनों को छोड़ने वाला परमसुखी होता है।
- ◆ सुख-दुःख जिसके निमित्त से मिलते हैं उन्हें माध्यम मानकर अपने ही कर्मों को मूल कारण माने तो भावों में विषमता नहीं आ पायेगी और सबके प्रति मैत्री और क्षमा का भाव बना रहेगा।
- ◆ जिन्दगी प्रसन्नता का दूसरा नाम है। हर पल, हर क्षण मुस्कराने का नाम जीवन है।
- ◆ जैसे अग्नि कूड़े-कचरे को साफ कर देती है उसी तरह ज्ञान रूपी अग्नि राग-द्वेष आदि मलों को साफ कर देती है।
- ◆ स्मृति का अर्थ यह भी है कि आत्मा की स्मृति बनी रहे, देह की नहीं। हम निरन्तर देह की स्मृति में बने रहते हैं। हम तो अपने को शरीर मान बैठे हैं।

❁ साभार-प्राप्ति-स्वीकार ❁

4000/-मण्डल साहित्य सदस्यता		
(अधिकतम 20 वर्ष) सदस्यता हेतु प्रत्येक		
816	श्री महेशभाईजी शाह, नाशिक (महाराष्ट्र)	2100/-
1000/-जिनवाणी पत्रिका की आजीवन		
(अधिकतम 20 वर्ष) सदस्यता हेतु प्रत्येक		
क्रम संख्या 16211 से 16213 तक कुल 3 सदस्य बने		
जिनवाणी मासिक पत्रिका प्रकाशन योजना हेतु		
साभार प्राप्त		
100000/-	सेठ चंचलमल गुलाबदेवी सुराणा ट्रस्ट, बीकानेर	
जिनवाणी मासिक पत्रिका हेतु साभार प्राप्त		
21000/-	श्री महावीरप्रसादजी जी मेहता, दूद्र, जयपुर सुपुत्र श्री संदीपजी मेहता की वैवाहिक वर्षगाँठ के उपलक्ष्य में।	2100/-
11000/-	श्री विनयचन्दजी बम्ब, जयपुर, धर्मपत्नी श्रीमती कान्तादेवीजी बम्ब का 17 फरवरी, 2021 को निधन होने पर उनकी पुण्य-स्मृति में।	1111/-
11000/-	श्री महावीरजी, बिरधीचन्दजी, अशोकजी, सन्तोषजी, अरविन्दजी, कमलजी लूणावत (तिलोरा वाले) पुष्कर-अजमेर, पूज्य पिताजी श्री पुखराजजी एवं पूज्या मातुश्री श्रीमती कंचनदेवीजी लूणावत का 17 सितम्बर, 2020 को एक साथ देवलोकगमन होने पर पुण्य स्मृति में।	1101/-
5100/-	श्री सागरमलजी छाजेड परिवार, अडियार-चेन्नई, सपरिवार गुरुचरण सन्निधि में साधना-आराधना का सौभाग्य प्राप्त होने की खुशी में।	1100/-
5100/-	श्री निर्मल कुमारजी जैन, दिल्ली, माता श्रीमती नगीनादेवीजी तातेड़ का 99 वर्ष की आयु में 11 मार्च को देहावसान हो जाने पर उनकी पुण्यस्मृति में।	1100/-
5000/-	श्री दौलतराजजी मेहता, साहुकारपेट, चेन्नई सुपुत्री सौ. का. निधि के विवाह उपलक्ष्य में।	1100/-
3100/-	श्री प्रसन्नचन्दजी बाघमार, (कोसाणा वाले) बैंगलोर सुपुत्र चि. उदितजी बाघमार संग सौ. आयुष्मती निकिताजी के 30 नवम्बर, 2020 को शुभविवाहोपलक्ष्य में।	1100/-
2100/-	श्री रोशनराजजी विकासराजजी मेहता, निर्माण	1100/-
	नगर-जयपुर, पूज्या माताजी श्रीमती उम्मेदकँवरजी मेहता की पुण्य स्मृति में।	
	श्री दौलतमलजी, अशोकजी, सुनिलजी भण्डारी, जोधपुर, श्रीमती ललिताजी पत्नी श्री सुनिलजी (पुत्रवधू स्व. श्री माणकमलजी भू.पू. महामन्त्री अ.भा.श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ) के 9 मार्च, 2021 को संथारा पूर्वक प्रयाण की स्मृति में।	
	श्री शम्भुसिंहजी चोरड़िया, किशनगढ़ धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री कानसिंहजी चोरड़िया का 23 फरवरी, 2021 को 101 वर्ष की आयु में देहावसान होने पर पुण्य स्मृति में।	
	श्री उन्नतजी, प्रियंकजी, सौम्यजी मेहता, अहमदाबाद, पूज्य पिताजी श्री चन्द्रप्रकाशजी सुपुत्र स्व. श्री विजयमलजी मेहता का 6 मार्च, 2021 को देहावसान होन पर पुण्य स्मृति में।	
	श्री राजेन्द्र कुमारजी, गौरव कुमारजी जैन (एण्डवा वाले), शिवशक्ति नगर-जयपुर, चि. सौरभजी सुपुत्र श्री राजेन्द्र कुमारजी-श्रीमती चन्द्रकलाजी जैन का शुभविवाह 15 मार्च, 2021 को सौ.कां. प्रियाजी सुपुत्री श्री गौतमचन्दजी-श्रीमती सरोजजी जैन-जरखोदा वाले के संग सम्पन्न होने पर।	
	श्री सोहनलालजी निर्मलकुमारजी जैन, सिपोली वाले, विवाहोपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।	
	श्री ताराचन्दजी जिनेन्द्र कुमारजी जैन, करेला वाले, सवाईमाधोपुर विवाहोपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।	
	श्री यशवन्तराजजी खींचा, बैंगलोर जिनवाणी को सप्रेम भेंट।	
	श्रीमती कंचनजी-रूपराजजी जीरावला, जोधपुर अपने सुपौत्र सध्य (सुपुत्र श्रीमती-खुशबूजी-मनोजजी जीरावला) के प्रथम जन्म-दिवस के उपलक्ष्य में।	
	श्रीमती कंचनजी-रूपराजजी जीरावला, जोधपुर अपनी दौहित्री प्रिशा (सुपुत्री श्रीमती-मोनिकाजी-राजजी बोहरा) के जन्मोपलक्ष्य में।	
	श्री राजेशजी, राकेशजी, मुकेशजी बागपतिया, नदबई, पूज्य पिताजी श्री कपूरचन्दजी जैन के देवलोकगमन होने पर पुण्य स्मृति में।	
	श्री प्रकाशचन्दजी जैन (पचाला वाले) सवाई	

- माधोपुर, पूज्य पिताजी श्री पदमचन्दजी जैन की पुण्य स्मृति में।
- 1100/- श्री अरुणकुमारजी, अर्पितकुमारजी आंचलिया, भीलवाड़ा, चि. हर्षित संगसौ. कां. विनीता सुपुत्री श्री पारसमलजी पालडेचा चितौड़गढ़ का शुभ-विवाह 11 दिसम्बर, 2020 को सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में।
- 1100/- श्री प्रह्लादकुमारजी जैन, जयपुर धर्मपत्नी श्रीमती पुष्पाजी जैन की प्रथम पुण्य स्मृति में।
- 1100/- श्री सुरेश कुमारजी जैन (खातौली वाले) जयपुर, धर्मसहायिका एवं श्री पवनजी, मनीषजी, अंकित जी की पूज्या माताजी श्रीमती राजबाईजी जैन का 13 मार्च को स्वर्गगमन होने पर पुण्य स्मृति में।
- 1100/- श्री नरेशचन्दजी, पूरणमलजी, तपनजी जैन (चिमन बाग वाले), इन्दौर, श्री रमेशचन्दजी जैन का 7 मार्च, 2021 को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्य-स्मृति में।
- 1100/- श्री ओमप्रकाशजी, नीरज कुमारजी जैन (आलनपुर वाले), स्योपुर रोड़-जयपुर, चि. कार्तिकजी सुपुत्र श्रीमती निर्मला-श्री ओमप्रकाशजी जैन का शुभविवाह सौ.कां. सुरभिजी सुपुत्री श्रीमती मधुबालाजी-स्व. श्री महेन्द्र कुमारजी जैन (पाटोली वाले) के संग 15 मार्च को सम्पन्न होने की खुशी में।
- सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल हेतु साभार**
- 25000/- कानमल कोठारी मेमोरियल ट्रस्ट, जयपुर सप्रेम।
- 11000/- श्रीमती बीनाजी-भागचन्दजी मेहता, जोधपुर, सुपुत्री बिन्दु जी मेहता की 150 की तपस्या के उपलक्ष्य में।
- गजेन्द्र फाउण्डेशन हेतु ट्रस्टी**
1. श्रीमती पिंकीजी-श्री अनिलजी सुराणा, मुम्बई (महाराष्ट्र)
2. श्रीमती चन्द्रकान्ताजी-श्री प्रमोदजी लोढ़ा, जयपुर (राजस्थान)
- गजेन्द्रनिधि/गजेन्द्र फाउण्डेशन संघ-सेवा सोपान हेतु**
- 250000/- श्रीमती कमलादेवी दुलीचन्द बाघमार चेरिटेबल ट्रस्ट, चेन्नई (तमिलनाडु)।
- 51000/- श्री प्रवीणजी रूणवाल, बीजापुर (कर्नाटक)।
- 21000/- श्री कैलाशमलजी दुगड़ (प्रकाश पुष्पा दुगड़ फाउण्डेशन), चेन्नई (तमिलनाडु)।
- 21000/- श्री सोहनलालजी, बुधमलजी, सम्पतराजजी, राजनजी बाघमार, मैसूर, स्व. श्री अभिषेकजी बाघमार की पुण्यस्मृति में और सोहनलालजी बाघमार के 78वें वर्ष में प्रवेश करने के उपलक्ष्य में।
- 21000/- श्री दलपतजी, अरविन्दजी, अभिषेकजी सिंघवी, मैसूर (कर्नाटक)।

आठवामी पर्व तिथि

चैत्र शुक्ला 7, सोमवार	19.04.2021	आयम्बिल ओली प्रारम्भ
चैत्र शुक्ला 8, मंगलवार	20.04.2021	अष्टमी
चैत्र शुक्ला 13, रविवार	25.04.2021	भगवान महावीर जन्म कल्याणक (महावीर जयन्ती)
चैत्र शुक्ला 14, सोमवार	26.04.2021	चतुर्दशी, पक्खी
चैत्र शुक्ला 15, मंगलवार	27.04.2021	आयम्बिल ओली पूर्ण
वैशाख कृष्णा 8, मंगलवार	04.05.2021	अष्टमी
वैशाख कृष्णा 14, सोमवार	10.05.2021	चतुर्दशी
वैशाख कृष्णा 15, मंगलवार	11.05.2021	पक्खी
वैशाख शुक्ला 3, शुक्रवार	14.05.2021	अक्षय तृतीया, आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमलजी म.सा. का 92वाँ आचार्य पदारोहण दिवस-स्वाध्याय दिवस, आचार्यप्रवर पूज्य श्री कजोड़ीमलजी म.सा. का 142वाँ स्मृति-दिवस।

बाल-जिनवाणी

प्रतिमाह बाल-जिनवाणी के अंक पर आधारित प्रश्नोत्तरी में भाग लेने वाले श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को सुगनचन्द प्रेमकँवर रांका चेरिटेबल ट्रस्ट-अजमेर द्वारा श्री माणकचन्दजी, राजेन्द्र कुमारजी, सुनीलकुमारजी, नीरजकुमारजी, पंकजकुमारजी, रौनककुमारजी, नमनजी, सम्यक्जी, क्षितिजजी रांका, अजमेर की ओर से पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-600 रुपये, द्वितीय पुरस्कार-400 रुपये, तृतीय पुरस्कार- 300 रुपये तथा 200 रुपये के तीन सान्त्वना पुरस्कार। पुरस्कार राशि सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर द्वारा भिजवाई जाती है।

सत्य-दृष्टि

किसी नगर में एक सेठ रहता था। उसके पास लाखों की सम्पत्ति थी और भरा-पूरा परिवार था। सब तरह की सुख-सुविधाएँ थीं। अभाव न किसी वस्तु का था, न व्यक्ति का। इतना सब कुछ होते हुए भी उसका मन हमेशा अशान्त रहता था। कोई-न-कोई चिन्ता उसके मन में बनी रहती थी।

कुछ दिन तो उसने अपने जीने का तरीका इस तरह से बनाया कि जो भी इच्छा मन में जाग्रत होती, वह उसकी पूर्ति कर लेता। परन्तु एक चाह की पूर्ति दूसरी चाह पैदा करके ही दम लेती थी। अतः थोड़े दिनों में उसकी चिन्ता और भी बढ़ती चली गई।

जब दिनोंदिन उसकी सेहत गिरने लगी तो लोगों ने मिलकर उसे सलाह दी कि आपकी बीमारी को कोई वैद्य या डॉक्टर ठीक नहीं कर सकेगा। यदि आप शान्ति पाना चाहते हैं तो अमुक साधु के चरणों में चले जाएँ वह तुम्हें अवश्य मार्ग बताएगा। सेठ को लोगों की बात पसन्द आयी। दूसरे ही दिन वह साधु के चरणों में पहुँच गया। श्रद्धाभाव से नमन करके उन्हें अपना कष्ट बताकर प्रार्थना की कि-“महाराज! जैसे भी हो, मेरी अशान्ति दूर कीजिए।”

साधु ने उसकी बात ध्यान से सुनी और कहा कि

अमुक नगर में एक बहुत बड़ा धनी रहता है, उसके पास जाओ वह तुम्हें रास्ता बताएगा तथा शान्ति की विधि भी बता देगा।

सेठ ने सोचा, साधु उसको बहका रहा है। उसने साधु से कहा-“स्वामी जी! मैं तो आपके पास बड़ी आशा लेकर आया हूँ। आप ही मेरा उद्धार कीजिए।” लेकिन साधु ने दोबारा वही बात दोहरा दी।

सन्त-वचन तर्क से रहित होता है, यह सोचकर सेठ उस नगर की ओर रवाना हो गया। वहाँ पहुँचकर वह देखता क्या है कि उस धनपति का कारोबार चारों ओर फैला हुआ है। लाखों का व्यापार है और उस धनिक का चेहरा फूल की तरह खिला हुआ है। वह एक ओर बैठ गया और सोचने लगा-‘यह धनी, जो लाखों की माया में फँसा हुआ है, अनेक झंझटों से घिरा हुआ है, अतः यह मुझे क्या रास्ता बताएगा?’

इतने में एक आदमी आया, उसका मुँह उतरा हुआ था। घबराते हुए उसने कहा-“मालिक! हमारा जहाज समुद्र में डूब गया है और लाखों का नुकसान हो चुका है।”

उद्योगपति ने मुस्कराकर कहा-“मुनीमजी! इसमें परेशान होने की क्या बात है? व्यापार में तो ऐसा होता ही रहता है।” इतना कहकर वह अपने साथी से उसी

तरह बात करने लगा।

थोड़ी देर में एक दूसरा आदमी आया, उसके चेहरे पर खुशियों की तरङ्गें थीं। वह बोला-“सरकार! रूई के दाम बढ़ गए हैं। हमें लाखों का फायदा हो गया है।”

धनिक ने कहा-“मुनीमजी! इसमें खुश होने की क्या बात है? व्यापार में ऐसा होता ही रहता है।”

सेठ को अपनी समस्या का समाधान मिल गया। उसने समझ लिया कि शान्ति स्रोत वैभव में नहीं, अपितु मन की समता में है।

चाहते तो हम भी हैं कि मन में समता जागे। किन्तु चाहने मात्र से समता नहीं आ जाएगी। समता-साधना के लिए हमें अपने मन को मार्गदर्शन देना होगा कि जीवन में अच्छा-बुरा जो भी हो रहा है, वह अपने ही कर्मों का प्रतिफल है। इस तरह का चिन्तन मन में समता दीप को प्रज्वलित कर सकता है।

-पुस्तक 'रोचक बोधकथाएँ' से साभार

Questions and Answers

Sh. Dulichand Jain

Q.1- Does being born into a Jaina family automatically make us Jainas ?

Ans.- Yes, having parentage makes one Jaina by birth. However, this designation is by name only. In reality, we become real Jainas by practicing non-violence, honesty and compassion in our daily lives. A true adherent of Jainism will uphold Jaina values, gain control over his passions and not indulge in vices like gambling, eating meat or getting intoxicated.

Q.2- What impact do Jaina ascetics have upon our lives ?

Ans.- While most of us are busy with our familial and social responsibilities, the Jaina monks and nuns dedicate their lives to religion and service. They deliver

religious discourses to the masses, promote self-study and instill moral and spiritual values in us. They are our teachers and guides and strive to bring about positive changes in our lives. They also inspire householders to take certain vows that will keep them away from vices.

-70, टी.टी.के. रोड़, आल्वारपेट, चेन्नई-600018 (तमिलनाडु)

पाया की पाती

डॉ. अनेकान्त जैन

प्रिय सुनय!

आज तुम्हारा जन्मदिन है। तुम अब किशोरावस्था के उत्तरार्द्ध में प्रवेश कर रहे हो। अभी तुम्हारी वह अवस्था है जिससे सभी युवा गुजरते हैं। इन दिनों स्वप्न और यथार्थ का अन्तर्द्वन्द्व अपनी चरम सीमा पर होता है। हमेशा लगता है कि हम अपनी रुचि के अनुकूल कलाओं में डूबे रहें और उनमें आत्मिक अनुभूति करते रहें, लेकिन तभी संसार का यथार्थ आपको बाहर खींचता है कि दुनिया की सफलता ही सफलता है, तुम्हारा आत्मिक आनन्द तुम्हें कैरियर निर्माण से दूर ले जा रहा है-ऐसा प्रतीत होता है।

जगत् में, समाज में, परिवार में सफलता के नियम-उपनियम और उनके द्वारा गढ़ी गयी सफलता की परिभाषाएँ तुम्हें तुम्हारे निजानन्द से दूर करने की पूरी कोशिश करती हैं और इसीलिए कितने ही कार्य हमें न चाहते हुए भी जगत् को दिखाने के लिए, समाज का मुँह बन्द करने के लिए और परिजनों के सन्तोष के लिए करने ही पड़ते हैं।

अभी तो तुम्हें और भी अधिक कड़वे, किन्तु सच्चे यथार्थ से रूबरू होना है। एक बात याद रखना दुनिया की सिर्फ जुबां होती है उसका दिल और दिमाग या मन कुछ भी नहीं होता।

कोई यदि हमारे बारे में हमसे या किसी से कुछ कह दे तो हम व्यर्थ ही इतने परेशान हो जाते हैं यह

सोचकर कि दुनिया की हमारे बारे में यह राय है ?

जब कि सच यह है कि दुनिया हमेशा दो नावों पर चलने वाली चीज है। कोई कुछ नहीं सोचता। कोई कुछ नहीं मानता। सिर्फ जब आप दिखते हैं तो आपको हतोत्साहित करने के लिए और अपनी हीनभावना से उबरने के लिए वे ऐसा ही कुछ कहकर आपके मनोबल को तोड़ने की कोशिश करते हैं।

यदि आप उनकी बातों को दिल से लगा लेते हैं तो वे अपनी योजना में सफल हो जाते हैं और यदि उनकी आप उपेक्षा कर यह प्रदर्शित कर देते हैं कि आपको कोई फर्क नहीं नहीं पड़ा तो वे निराश और असफल होकर, आपके गीत गाने को विवश हो जाते हैं।

दुनिया में सब तरह के लोग मिलते हैं, भड़काने वाले ज्यादा और समझाने वाले कम। लेकिन यह भी कितना आश्चर्य है कि हम अपने शुभ चिन्तकों की प्रेरणाओं को हल्के में लेते हैं और दुष्टों की निन्दाओं को दिल से लगाकर हतोत्साहित हो जाते हैं।

एक हमेशा ध्यान रखना, आप अपने बारे में जैसा सोचते हैं दुनिया भी आपके बारे में वैसा ही खयाल रखती मिलेगी। लोग कुछ नहीं करते सिर्फ आपके खुद के बारे में विश्वास की जाने-अनजाने परीक्षा लेते रहते हैं, वह भी सिर्फ तब-जब आप उनसे मिलते हैं, न आगे न पीछे, उन्हें आपके बारे में विचार करने की फुर्सत ही नहीं होती है।

यदि खुद पर हो भरोसा तो कोई नहीं फसाना।

खुद ही झुकने लगता है अपने पैरों पर ज़माना।।

कभी यह मत सोचना कि तुम्हें क्या बनना है? हमेशा यह सोचना कि तुम्हें क्या करना है? करना तय हो जायेगा तो बनना स्वयमेव तय होगा।

तुम अदम्य साहसी हो, प्रतिभाशाली हो और अत्यन्त भावुक भी। ये तीनों चीजें एक सफल मनुष्य के लिए आवश्यक हैं। साहस तुम्हें मजबूती प्रदान करता है, प्रतिभा तुम्हें समझदार बनाती है और भावुकता तुम्हें संवेदनशील।

मेरी अनन्त शुभकामनाएँ तुम्हारे साथ हैं कि तुम धर्म, अध्यात्म और विज्ञान के संवाहक बनो, इन तीनों की विकृतियों को निर्मूल करके स्व-पर कल्याण करो। चाहे जिस भी क्षेत्र में कार्य करो-उसे संसार ही समझो, अपना पूर्ण लक्ष्य नहीं। इस संसार में रहकर भी जल में कमल की भाँति उससे अलिप्त रहकर सदा खिलते रहो।

-जैन फिलोसॉफी विभाग, श्री लालबहादुर शास्त्री संस्कृत विश्वविद्यालय, कुतूब इंस्टिट्यूशनल एरिया, दिल्ली-110016

राजा श्रेणिक और सामायिक का महत्त्व

एक बार श्रेणिक महाराज ने भगवान महावीर से पूछा-“भगवन्! मैं मरकर कहाँ जाऊँगा?”

तब भगवान महावीर ने कहा-“श्रेणिक! आप मरकर पहली नरक में जाओगे।”

श्रेणिक बोले-“भगवन्! मैं नरक में नहीं जाना चाहता, इसके लिए आप कोई उपाय बताओ।”

भगवान बोले-“यदि तुम (1) पूर्णिया श्रावक की एक सामायिक का फल खरीद लो अथवा (2) एक दिन के लिए कालसौकरिक कसाई से भैंसों को मारना बन्द करवा दो अथवा (3) कपिला दास से दान दिलवा दो या (4) तुम स्वयं एक नवकारसी का पच्चकखाण कर लो तो तुम्हारा नरक गमन छूट जायेगा।”

यह सुनकर श्रेणिक महाराज तुरन्त पूर्णिया श्रावक के पास उसकी एक सामायिक का फल खरीदने के लिए आए। परन्तु पूर्णिया श्रावक ने कहा-“हे राजन्! जिन्होंने आपको सामायिक का फल लेने भेजा है, उनसे पहले सामायिक की कीमत तो पता कर लो।”

राजा श्रेणिक श्रमण भगवान महावीर के पास आये और उनसे सामायिक के महत्त्व के बारे में पूछा। तब प्रभो ने बताया-“सामायिक एक ऐसा कीमती आराधना रत्न है जिसकी कोई मनुष्य/देव कीमत नहीं लगा सकता। इसके अलावा किसी के द्वारा की गई सामायिक का फल, किसी दूसरे को नहीं मिल

सकता।” यह सुनकर राजा श्रेणिक प्रभु को वन्दन-नमस्कार करके वापस अपने महल लौटा आए।

स्वयं के द्वारा की गई सामायिक का फल स्वयं के ही काम में आता है। इसलिए सामायिक करने में आलस्य अथवा प्रमाद नहीं करना चाहिए।

इसके बाद राजा श्रेणिक ने कालसौकरिक कसाई को अपने राजदरबार में बुलाकर कहा कि एक दिन के लिए जीवों का मारना बन्द कर दो। वह बोला- “राजन्! यदि मैंने एक दिन के लिए भैंसों को मारना बन्द कर दिया तो पीढ़ियों से चला आ रहा मेरा पुश्तैनी धन्धा चौपट हो जायेगा।” इससे राजा श्रेणिक कुपित हो गया और उसे कुएँ में डलवा दिया। कुएँ में रहकर वह कालसौरिक कसाई भैंसों के चित्र बना-बनाकर उनकी भाव हिंसा करने लगा। इस तरह राजा श्रेणिक द्वारा भैंसों की हिंसा बन्द न करवाने से उसके नरक गमन न जाने का दूसरा उपाय भी विफल हो गया।

बच्चों! जिस प्रकार भैंसों को मारे बिना उसके चित्र बना-बनाकर उन्हें भावों से मारने के कारण पाप लगता है। उसी प्रकार मोबाइल, कम्प्यूटर अथवा इण्टरनेट में कार एक्सीडेंट आदि का वीडियो गेम खेलने से भी भाव हिंसा के कारण पापों का बन्ध होता है।

तत्पश्चात् राजा श्रेणिक ने कपिला दासी से श्रमण मुनियों को दान देने के लिए कहा। कपिला दासी ने दान देने से साफ इन्कार कर दिया। तब राजा ने बलपूर्वक उसका हाथ पकड़ा और मुनिराज को दान दिलाने लगे। दान देते हुए कपिला दासी मन ही मन बड़बड़ाने लगी कि यह दान मैं नहीं दे रही बल्कि चम्मच दे रही है। ऐसा मन में भाव रखने से कपिला को दान का फल नहीं मिला और उसके द्वारा दिया गया दान सुपात्रदान नहीं कहलाया।

अतः बच्चों! हमें सुपात्रदान देते समय अपने भाव शुद्ध और निर्मल रखने चाहिए। जैनधर्म में भावों को ही सर्वाधिक महत्ता दी गई है।

अन्त में राजा श्रेणिक ने नवकारसी का तप करने का विचार किया। नवकारसी अर्थात् सूर्योदय से 48 मिनट तक कुछ नहीं खाना-पीना। अगले दिन राजा श्रेणिक ने नवकारसी का पचचक्खाण तो लिया, परन्तु प्रातःकाल श्रेणिक महाराज को इतनी जोर से भूख लगी कि उन्होंने फल खाकर नवकारसी का पचचक्खाण तोड़ दिया। इस तरह अनेक प्रयत्न करने पर भी राजा श्रेणिक स्वयं को नरक में जाने से रोक नहीं सके।

-पुस्तक 'संस्कार सूत्रम्-3' से साभार

सामायिक-प्रश्नोत्तर

प्र. 1-अरिहन्त किसे कहते हैं?

उत्तर- जिन्होंने चार घातिकर्मों-ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, मोहनीय और अन्तराय का क्षय करके अनन्त ज्ञान, अनन्त दर्शन, अनन्त चारित्र और अनन्त बल वीर्य नामक चार मूल गुणों को परिपूर्ण रूप से प्रकट कर लिया है, उन्हें अरिहन्त कहते हैं, इन्हें तीर्थङ्कर या जिन भी कहते हैं।

प्र. 2-सिद्ध किसे कहते हैं?

उत्तर- जो आठों कर्मों का क्षय कर चुके हैं तथा जिन्होंने आत्मा के आठों गुणों को हमेशा के लिए सम्पूर्ण रूप से प्रकट कर लिया है, उन्हें सिद्ध कहते हैं।

प्र. 3-अरिहन्त और सिद्ध में क्या अन्तर है?

उत्तर- अरिहन्त भगवान चार घातिकर्मों-ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, मोहनीय और अन्तराय का क्षय कर चुके हैं। अरिहन्त सशरीरी होने से तीर्थ की स्थापना करते हैं, उपदेश देते हैं और धर्म से गिरते हुए साधकों को स्थिर करते हैं, जबकि सिद्ध आठ कर्मों (1. ज्ञानावरणीय, 2. दर्शनावरणीय, 3. वेदनीय, 4. मोहनीय, 5. आयु, 6. नाम, 7. गोत्र, 8. अन्तराय) को क्षय करके सिद्ध हो गये हैं और वे सुख रूप सिद्धालय में विराजमान हैं। वे अशरीरी होने से उपदेश आदि की प्रवृत्ति नहीं करते।

- 'श्रावक सामायिक प्रतिक्रमणसूत्र' पुस्तक से

गुण-ग्रहण की आकांक्षा

श्रीमती कमला हणवन्तमल सुराणा

बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित रचना को पढ़कर अन्त में दिए गए प्रश्नों के उत्तर 20 वर्ष की आयु तक के पाठक 15 मई, 2021 तक जिनवाणी सम्पादकीय कार्यालय, ए-9, महावीर उद्यान पथ, बजाज नगर, जयपुर-302015 (राज.) के पते पर प्रेषित करें। उत्तर के साथ अपनी आयु तथा पूर्ण पते का भी उल्लेख करें। श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को श्री महावीरचन्द्र जी बाफना, जोधपुर द्वारा अपनी धर्मपत्नी एवं श्रीमती अरुणा जी, श्री मनोजकुमार जी, श्री कमलेश कुमार जी बाफना की माताश्री स्व. श्रीमती मोहिनीदेवी जी बाफना की पुण्य-स्मृति में पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-500 रुपये, द्वितीय पुरस्कार-300 रुपये, तृतीय पुरस्कार-200 रुपये तथा 150 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार। पुरस्कार राशि सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर द्वारा भिजवाई जाती है।

दसवीं कक्षा की परीक्षा चल रही थी। प्राञ्जल कमरे में पढ़ रही थी। अगली परीक्षा गणित की थी। गणित के प्रश्न हल नहीं हो रहे थे। उसे झुँझलाहट और घबराहट होने लगी। उसका शरीर पसीने से लथपथ होने लगा। मन को सन्तुलित करने के लिए छत पर टहलने चली गई। मार्च का महीना था। मन्द-मन्द, ठण्डी-ठण्डी बयार चल रही थी। नीम, गुलाब, चमेली आदि-आदि फूलों की मिश्रित सुगन्धित हवा से उसका मन प्रफुल्लित और हल्का होने लगा। वह छत की मुण्डेर पर बैठ गई। आस-पास के वृक्षों पर पक्षी फुदक रहे थे। वह उनकी आकर्षित करने वाली गतिविधियाँ देखकर परीक्षा के लिए पढ़ाई करना भूल गई। पक्षियों की अठखेलियों में मग्न हो गई। प्राञ्जल की माँ नीलू कमरे में गई। प्राञ्जल दिखाई नहीं दी तो वह भी छत पर चली गई।

माँ-“बेटी! कल कठिन विषय की परीक्षा है; तू छत पर क्या कर रही है?”

प्राञ्जल-“मैंने बहुत मस्तिष्क लड़ाया, लेकिन गणित के प्रश्नों का उत्तर सही नहीं आने के कारण मुझे उबासी आने लगी, इसलिए छत पर आ गई। यहाँ पक्षियों की और वृक्षों की छवि देखकर आनन्दानुभूति हो रही है।”

माँ-“पक्षियों की चहचहाहट में अमूल्य समय गवाँ रही हो। बीता समय पुनः नहीं आता है।”

प्राञ्जल-“इन पक्षियों से तो मैंने वे बातें सीख ली हैं जो जीवन में अपना अस्तित्व रखती हैं।”

माँ-“बता, क्या सीखा?”

प्राञ्जल-“काले कलूटे कौवों की काँव-काँव कोई जन पसन्द नहीं करता है, लेकिन मैंने उनमें विचित्र बात पायी जो मानव जाति को ग्रहण करने योग्य है। कल के भोज का जूठन और बची-खुची खाद्य-सामग्री आपने सड़क के किनारे डलवाई थी। वृक्ष पर बैठे एक कौए की दृष्टि उस पर पड़ गई, वह ढेर के पास बैठकर काँव-काँव करने लगा। उसकी काँव-काँव सुनकर अनेक कौए ढेर के पास बैठकर ढेर से पुरियों के टुकड़े, मिठाई का जूठन खाने लगे। बड़े प्रेम से सबने भोजन किया। जूठन के लिए किसी प्रकार की खींचा-तानी नहीं और एक-दूसरे को देखकर खुश हो रहे थे। उनकी बाँटकर खाने की प्रवृत्ति ने बहुत प्रभावित किया। उनमें लेशमात्र भी लालच नहीं दिखाई दिया। मेरे मन में मन्थन चला कि मानव जाति बाँटकर खाए तो संसार का कोई प्राणी भूखा नहीं सोएगा और संग्रह प्रवृत्ति कम हो जाएगी। मिल, फैक्ट्री, कारखाने के स्वामी

और व्यापारी श्रमिकों को उचित पारिश्रमिक दें तो शोषण की प्रवृत्ति का बोल-बोला नहीं रहेगा।”

प्राञ्जल-“माँ! मुझे समझ में आया कि मनुष्य, पशु, पक्षी या अन्य कोई भी प्राणी हो उनके गुणों को ग्रहण कर आचरण में लाना चाहिए।”

माँ-“बेटी! तेरे विचारों से मैं भी सहमत हूँ, वे प्रशंसनीय भी हैं।”

प्राञ्जल-“माँ-माँ! चिड़ियों में भी अद्भुत, रोचक सक्रियता देखने को मिली। छोटी-छोटी चहचहाती चिड़ियों से सीख ली। सूर्योदय के कुछ पहले सभी उठकर एक पेड़ पर बैठकर सुमधुर स्वर में गीत गाती हैं। मुझे ऐसा आभास हुआ कि ये सभी मिलकर ईश प्रार्थना कर रही हैं, पश्चात् दाना चुगने उड़ी। दिन भर अपने कार्यक्रम में लगी रहीं। सन्ध्या होते ही सब चिड़ियाँ वृक्ष पर इकट्ठी होकर गाने लगी। चुग्गा-पानी सब लेना बन्द और अपने-अपने स्थान पर चली गई। ये पक्षी कितने समझदार हैं कि सूर्योदय से पहले कुछ नहीं खाते और सूर्यास्त के पश्चात् भी कुछ नहीं खाते हैं।

माँ अपने तो खाने का समय ही निर्धारित नहीं है।”

माँ-“बेटी! हम अतिमहत्वाकांक्षी, अतिलोभी, अतिपरिग्रही हो गए हैं; उसी अन्धी भागदौड़ में भाग रहे हैं। टीवी, मोबाइल भी समय पर उठने, समय पर सोने और समय पर खाना खाने में बाधा बने हुए हैं।”

प्राञ्जल-“टी वी, मोबाइल का प्रयोग बहुत आवश्यक है, माँ! इन उपकरणों का प्रयोग अनिवार्य हो गया; इनके बिना पिछड़ जाएँगे।”

माँ-“बेटी! रोटी खाना जरूरी है ज्यादा खाली तो अजीर्ण हो जाएगा ठीक उसी प्रकार अति नहीं होनी चाहिए, संयम रखना आवश्यक है।”

प्राञ्जल-“मुझे तो चिड़ियों की ईश प्रार्थना ने भी बहुत लुभाया। हम भी सामूहिक प्रार्थना करें।

दादाजी, दादीजी तो भजन गाते ही हैं, सब मिलकर प्रार्थना करेंगे। स्कूल में भी मेम ने प्रार्थना का महत्त्व बताया था।

स्कूल में प्रार्थना की घण्टी लगी। लगभग सभी लड़कियाँ प्रार्थना स्थल पर आ पहुँची। कुछ लड़कियाँ कक्षाओं में बैठकर गपशप करने लगीं। गपशप की आवाज़ मेम के कानों में पड़ गई और वे कक्षाओं से लड़कियों को निकाल कर प्रार्थना स्थल में ले आईं। प्रार्थना समाप्त होने पर प्रार्थना का महत्त्व समझाया गया। दिवस तथा स्कूल प्रारम्भ के समय को शुभ करने के लिए ईश-प्रार्थना करनी चाहिए। सामूहिक प्रार्थना में बहुत बल है। ईश्वर का स्मरण करने से विनय और नम्रता की शक्ति मिलती है।”

माँ-“बेटी! बात तो सही है। इन गुणों को आचरण में लाने की आवश्यकता है।”

प्राञ्जल-“तीन-चार दिन के अवलोकन के पश्चात् कौवों से बाँटकर प्रेम से खाने की शिक्षा मिली।

चिड़ियों से जल्दी उठना, जल्दी सोना, रात्रि में कुछ नहीं खाना और ईश प्रार्थना से दिनचर्या प्रारम्भ करने के गुण लिए।

भोर उठ ईश वन्दना करें
दिन प्रारम्भ प्रार्थना से करें
समय का सदुपयोग करें
नई उपलब्धियाँ प्राप्त करें।
तड़का शान्ति का प्रतीक है
इसका आनन्द स्वर्ग से बढ़कर है
कल्पनाओं का सागर है
मधुर भावों का हस्त हैं।

-ई-123, नेहरू पार्क, जोधपुर (राज.)

प्र. 1. प्राञ्जल को कौओं में कौनसी विचित्र बात दिखाई दी?

प्र. 2. प्राञ्जल की घबराहट का क्या कारण था तथा

- उसने इसे किस प्रकार दूर किया ?
- प्र. 3. 'पक्षियों के आचरण से भी बहुत कुछ सीखा जा सकता है।' कहानी के आधार पर स्पष्ट कीजिए।
- प्र. 4. 'प्रार्थना का महत्त्व' विषय पर आठ-दस पंक्तियों में एक अनुच्छेद लिखिए।
- प्र. 5. 'टी.वी., मोबाइल के प्रयोग के बिना हम पिछड़

जाएँगे।' प्राञ्जल के इस कथन से हम कहाँ तक सहमत हैं? तर्क सहित उत्तर लिखिए।

- प्र. 6. दिए गए शब्दों से एक-एक वाक्य बनाइए-
अपरिग्रही, पारिश्रमिक, प्रवृत्ति और अठखेलियाँ।

जीओ और जीने दो सबको, प्रभु क्या यह सन्देश है

श्री मोहन कोठारी 'खिन्नर'

जीओ और जीने दो सबको,

प्रभु का यह सन्देश है,

नफ़रत की आँधी को रोको, महावीर उपदेश है।

जीओ और जीने दो सबको.....।।टेर।।

भाईचारा बढ़े निरन्तर, न कोई सन्ताप हो,

मिलजुल कर हम जीना सीखें,

सबकी यह आवाज़ हो।

खामोशी न हो रिश्तों में,

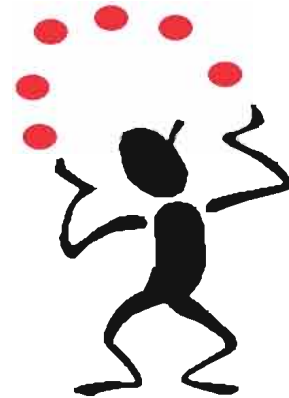
मिट जाए सब क्लेश हैं।

जीओ और जीने दो सबको.....।।1।।

सत्य, अहिंसा की बातों का,
तुम सदा सम्मान करो,
प्यार, मोहब्बत का सब मिलकर,
दिल से तुम आगाज़ करो।
हर आँगन में हो खुशहाली, मज़हब का निर्देश है,
जीओ और जीने दो सबको.....।।2।।
इन्सानों की इस दुनिया में,
मत हैवानी आने दो,
टूट रहे जो प्रेम के रिश्ते,
उनको फिर जुड़ जाने दो।
वीर प्रभु की हम सन्तानें, नहीं रहे किसी से द्वेष,
जीओ और जीने दो सबको.....।।3।।
-जबलता साहू सेण्टर, फरिश्ता कॉम्प्लेक्स, स्टेशन
रोड, दुर्ग (छत्तीसगढ़)

WHAT IS A FACILITATOR?

- Literally means : 'making things easy'
- A person who helps a group or teams to :
 - ◇ Achieve results in interactive events
 - ◇ By using a range of skills and methods
 - ◇ To bring the best out in people as they work together
 - ◇ Focus on the process of how



बाल-स्तम्भ [फरवरी-2021] का परिणाम

जिनवाणी के फरवरी-2021 के अंक में बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत 'स्वार्थी बेटा' के प्रश्नों के उत्तर जिन बालक-बालिकाओं से प्राप्त हुए, वे धन्यवाद के पात्र हैं। पूर्णांक 25 हैं।

पुरस्कार एवं राशि नाम		अंक
प्रथम पुरस्कार-500/-	अंशुल कचोलिया, बेंगलुरु (कर्नाटक)	25
द्वितीय पुरस्कार-300/-	चेतन कुमार जैन, अलीगढ़-रामपुरा-टोंक (राजस्थान)	24
तृतीय पुरस्कार- 200/-	यशवर्धन आहूजा, मानसरोवर-जयपुर (राजस्थान)	23
सान्त्वना पुरस्कार- 150/-	श्रेयांश जैन, मोरवन बाँध-नीमच (मध्यप्रदेश)	22
	साक्षी जैन, मोरवन बाँध-नीमच (मध्यप्रदेश)	22
	नमन जैन, जरखोदा-बूँदी (राजस्थान)	22
	विशाल सिंघवी, जोधपुर (राजस्थान)	22
	काजल जैन, राधानिकुब्ज, जयपुर (राजस्थान)	22

बाल-जिनवाणी मार्च, 2021 के अंक से प्रश्न (अन्तिम तिथि 15 मई, 2021)

- प्र. 1. रामू के पास सभी भौतिक सुख-सुविधाएँ होने पर भी वह खुश क्यों नहीं था ?
- प्र. 2. नवकार मन्त्र मंगल रूप क्यों है ?
- प्र. 3. According to Jain Philosophy, what should children learn from their childhood?
- प्र. 4. How can we be happy for a lifetime?
- प्र. 5. प्रिया का अपने ससुर के प्रति कैसा रवैया था ? इस रवैये पर उसे कब शर्मिन्दा होना पड़ा ?
- प्र. 6. 'रिश्तों की मिठास मत जाने दो' कविता में निहित मूलभाव स्पष्ट कीजिए।
- प्र. 7. महावीर का सिपाही बनकर कवि क्या इच्छा रखता है ?
- प्र. 8. ज्ञानी सन्त की प्रेरणा से रामू के जीवन में क्या परिवर्तन दृष्टिगत हुआ ?
- प्र. 9. Which effects are visible on children's behavior?
- प्र. 10. तीन-तीन पर्यायवाची लिखिए-अमृत, सौन्दर्य, मिठास।

बाल-जिनवाणी [जनवरी-2021] का परिणाम

जिनवाणी के जनवरी-2021 के अंक की बाल-जिनवाणी पर आधृत प्रश्नों के उत्तरदाता बालक-बालिकाओं का परिणाम इस प्रकार है। पूर्णांक 40 हैं।

पुरस्कार एवं राशि नाम		अंक
प्रथम पुरस्कार-600/-	सुदर्शन जैन, चौथ का बरवाड़ा-सवाईमाधोपुर (राजस्थान)	38
द्वितीय पुरस्कार-400/-	अरिष्ट कोठारी, अजमेर (राजस्थान)	37
तृतीय पुरस्कार- 300/-	प्रणव भण्डारी, सरदारपुरा-जोधपुर (राजस्थान)	36
सान्त्वना पुरस्कार (3)- 200/-	भूमि सिंघवी, जोधपुर (राजस्थान)	35
	कविश जैन, चौथ का बरवाड़ा-सवाईमाधोपुर (राजस्थान)	35
	राहुल जैन, मोरवन बाँध-नीमच (मध्यप्रदेश)	35

संस्कार केन्द्रों हेतु दो नये प्रकाशन

आध्यात्मिक संस्कार केन्द्र एवं धार्मिक पाठशालाओं के अध्यापकों से निवेदन है कि सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल द्वारा दो नवीन पुस्तकों 'प्रभो! तुम्हारे पावन पथ पर' और 'हमारे जीवन की नई कहानियाँ' का प्रकाशन किया गया है, जो बच्चों के लिए संस्कार प्रदात्री हैं। अतः बच्चों के लिए इनका उपयोग करें। बालकों को संस्कारित करने का यह भी एक उत्तम साधन है।

-सम्पादक

अहंकार के वृक्ष पर
विनाश के फल लगते हैं।



ओसवाल मेट्रीमोनी बायोडाटा बैंक

जैन परिवारों के लिये एक शीर्ष वैवाहिक बायोडाटा बैंक

विवाहोत्सुक युवा/युवती
तथा पुनर्विवाह उत्सुक उम्मीदवारों की
एवं उनके परिवार की पूरी जानकारी
यहाँ उपलब्ध है।

ओसवाल मित्र मंडल मेट्रीमोनियल सेंटर

४७, रत्नज्योत इंडस्ट्रियल इस्टेट, पहला माला,
इरला गांवठण, इरला लेन, विलेपार्ले (प.), मुंबई - ४०० ०५६.

फोन : 022 2628 7187

ई-मेल : oswalmatrimony@gmail.com

सुबह १०.३० से सायं ४.०० बजे तक प्रतिदिन (बुधवार और बैंक छुट्टियों के दिन सेंटर बंद है)

गजेन्द्र निधि आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

उज्ज्वल भविष्य की ओर एक कदम.....

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

Acharya Hasti Meghavi Chatravritti Yojna Has Successfully Completed 13 Years And Contributed Scholarship To Nearly 4500 Students. Many Of The Students Have Become Graduates, Doctors, Software-Professionals, Engineers And Businessmen. We Look Forward To Your Valuable Contribution Towards This Noble Cause And Continue In Our Endeavour To Provide Education And Spirituals Knowledge Towards A Better Future For The Students. Please Donate For This Noble Cause And Make This Scholarship Programme More Successful. We Have Launched Membership Plans For Donors.

We Have Launched Membership Plans For Donors

MEMBERSHIP PLAN (ONE YEAR)		
SILVER MEMBER RS.50000	GOLD MEMBER RS.75000	PLATINUM MEMBER RS.100000
DIAMOND MEMBER RS.200000		KOHINOOR MEMBER RS.500000

Note - Your Name Will Be Published In Jinwani Every Month For One Year.

The Fund Acknowledges Donation From Rs.3000/- Onwards. For Scholarship Fund Details Please Contact M.Harish Kavad, Chennai (+91 95001 14455)

The Bank A/c Details is as follows - Bank Name & Address - AXIS BANK Anna Salai, Chennai (TN)
A/c Name- Gajendra Nidhi Acharya Hasti Scholarship Fund IFSC Code - UTIB0000168
A/c No. 168010100120722 PAN No. - AAATG1995J

Note- Donation to Gajendra Nidhi are exempted u/s 80G of Income Tax Act 1961.

छात्रवृत्ति योजना में सदस्यता अभियान के सदस्य बनकर योजना की निरन्तरता को बनाये रखने में अपना अमूल्य योगदान कर पुण्यार्जन किया, ऐसे संघनिष्ठ, श्रेष्ठियों एवं अर्थ सहयोग एकत्रित करने करने वालों के नाम की सूची -

KOHINOOR MEMBER (RS.500000)	PLATINUM MEMBER (RS.100000)
श्रीमान् मोफ्तारज जी मुणोत, मुम्बई। श्रीमान् राजीव जी नीता जी डागा, ह्युस्टन। युवारत्न श्री हरीश जी कवाड़, चैन्नई।	श्रीमान् दलीचन्द बाघमार एण्ड संस, चैन्नई। श्रीमान् दलीचन्द जी सुरेश जी कवाड़, पूनामल्लई। श्रीमान् राजेश जी विमल जी पवन जी बोहरा, चैन्नई। श्रीमान् प्रेम जी कवाड़, चैन्नई।
SILVER MEMBER (RS.50000)	श्रीमान् अम्बालाल जी बसंतीदेवी जी कर्नावट, चैन्नई। श्रीमान् सम्पतराज जी राजकवंर जी भंडारी, ट्रिपलीकेन-चैन्नई। कन्हैयालाल विमलादेवी हिरण चैरिटेबल ट्रस्ट, अहमदाबाद। प्रो. डॉ. शैला विजयकुमार जी सांखला, चालीसगांव (महा.)। श्रीमान् विजय जतिन जी नाहर, इन्दौर। श्रीमान् गुप्त सहयोगी, चैन्नई। श्रीमान् विजयकुमार जी मुकेश जी विनीत जी गोठी, मदनगंज-किशनगढ़। श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, तमिलनाडु। श्रीमती सुशीला जी साण्ड धर्मपत्नी स्व. श्री कस्तूरमल जी साण्ड, अजमेर

सहयोग के लिए बैंक या ड्राफ्ट कार्यालय के इस पते पर भेजें - M.Harish Kavad - No. 5, Car Street, Poonamallee, CHENNAI-56
छात्रवृत्ति योजना से संबंधित जानकारी के लिए सम्पर्क करें - मनीष जैन, चैन्नई (+91 95430 68382)

छोटा सा चिदान पत्रिका को हल्का करने का, लाभ बढ़ा गुरु भाइयों को शिक्षा में सहयोग करने का

जिनवाणी की प्रकाशन योजना में आपका स्वागत है

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर द्वारा विगत 77 वर्षों से प्रकाशित 'जिनवाणी' हिन्दी मासिक पत्रिका मानव के व्यक्तित्व को निखारने एवं ज्ञानवर्धक सामग्री परोसने का महत्त्वपूर्ण कार्य कर रही है। इसमें अध्यात्म, जीवन-व्यवहार, इतिहास, संस्कृति, जीवन मूल्य, तत्त्व-चर्चा आदि विविध विषयों पर पाठ्य सामग्री उपलब्ध रहती है। अनेक स्तम्भ निरन्तर प्रकाशित हो रहे हैं, जिनमें सम्पादकीय, विचार-वारिधि, प्रवचन, शोधालेख, अंग्रेजीलेख, युवा-स्तम्भ, नारी-स्तम्भ आदि के साथ विभिन्न गीत, कविताएँ, विचार, प्रेरक प्रसङ्ग आदि प्रकाशित होते हैं। नूतन प्रकाशित साहित्य की समीक्षा भी की जाती है।

जैनधर्म, संघ, समाज, संगोष्ठी आदि के प्रासङ्गिक महत्त्वपूर्ण समाचार भी इसकी उपयोगिता बढ़ाते हैं। जनवरी, 2017 से 8 पृष्ठों की 'बाल जिनवाणी' ने इस पत्रिका का दायरा बढ़ाया है। अनेक पाठकों को प्रतिमाह इस पत्रिका की प्रतीक्षा रहती है तथा वे इसे चाव से पढ़ते हैं। जैन पत्रिकाओं में जिनवाणी पत्रिका की विशेष प्रतिष्ठा है। इस पत्रिका का आकार बढ़ने तथा कागज, मुद्रण आदि की महँगाई बढ़ने से समस्या का सामना करना पड़ रहा है। जिनवाणी पत्रिका की आर्थिक स्थिति को सम्बल प्रदान करने के लिए पाली में 28 सितम्बर, 2019 को आयोजित कार्यकारिणी बैठक में निम्नाङ्कित निर्णय लिये गए, जिन्हें अप्रैल 2020 से लागू किया गया है-

वर्तमान में श्वेत-श्याम विज्ञापनों से जिनवाणी पत्रिका को विशेष आय नहीं होती है। वर्ष भर में उसके प्रकाशन में आय अधिक राशि व्यय हो जाती है। अतः इन विज्ञापनों को बन्दकर पाठ्य सामग्री प्रकाशित करने का निर्णय लिया गया।

आर्थिक-व्यवस्था हेतु एक-एक लाख की राशि के प्रतिमाह दो महानुभावों के सहयोग का निर्णय लिया गया। ऐसे महानुभावों का एक-एक पृष्ठ में उनके द्वारा प्रेषित परिचय/सामग्री प्रकाशित करने के साथ वर्षभर उनके नामों का उल्लेख करने का प्रावधान भी रखा गया।

जिनवाणी पत्रिका के प्रति अनुराग रखने वाले एवं हितैषी महानुभावों से निवेदन है कि उपर्युक्त योजना से जुड़कर श्रुतसेवा का लाभ प्राप्त कर पुण्य के उपार्जक बनें। जो उदारमना श्रावक जुड़ना चाहते हैं वे शीघ्र मण्डल कार्यालय या पदाधिकारियों से शीघ्र सम्पर्क करें।

अर्थसहयोगकर्ता जिनवाणी (JINWANI) के नाम से चैक प्रेषित कर सकते हैं अथवा जिनवाणी के निम्नाङ्कित बैंक खाते में राशि नेफ्ट/नेट बैंकिंग/चैक के माध्यम से सीधे जमा करा सकते हैं।

बैंक खाता नाम-JINWANI, बैंक-State Bank of India, बैंक खाता संख्या-51026632986, बैंक खाता-SAVING Account, आई.एफ.एस. कोड-SBIN0031843, ब्राँच-Bapu Bazar, Jaipur

राशि जमा करने के पश्चात् राशि की स्लिप मण्डल कार्यालय या पदाधिकारियों की जानकारी में लाने की कृपा करें जिससे आपकी सेवा में रसीद प्रेषित की जा सके।

'जिनवाणी' के खाते में जमा करायी गई राशि पर आपको आयकर विभाग की धारा 80G के अन्तर्गत छूट प्राप्त होगी, जिसका उल्लेख रसीद पर किया हुआ है। 'जिनवाणी' पत्रिका में जन्मदिवस, शुभविवाह, नव प्रतिष्ठान, नव गृहप्रवेश एवं स्वजनों की पुण्य-स्मृति के अवसर पर सहयोग राशि प्रदान करने वाले सभी महानुभावों के प्रति आभार व्यक्त करते हैं। आप जिनवाणी पत्रिका को सहयोग प्रदान करके अपनी खुशियाँ बढ़ाना न भूलें।

-अशोक कुमार सेठ, मन्त्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, 9314625596

जिनवाणी प्रकाशन योजना के लाभार्थी

'जिनवाणी' हिन्दी मासिक पत्रिका की अर्थ-व्यवस्था को सम्बल प्रदान करने हेतु निम्नांकित धर्मनिष्ठ उदारमना श्रावकस्त्वों से राशि रुपये 1,00,000/- प्राप्त हुई है। सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल एवं जिनवाणी पब्लिशर उन्का हार्दिक आभारी है।

- (1) श्री चंचलमलजी बच्छावत, कोलकाता, अध्यक्ष-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
- (2) श्रीमती मंजूजी भण्डारी, बेंगलोर, अध्यक्ष-अ. भा. श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल
- (3) श्री पी. शिखरमलजी सुराणा, चेन्नई, पूर्व संघाध्यक्ष एवं पूर्व मण्डल अध्यक्ष
- (4) श्री विनयचन्दजी डागा, जयपुर, कार्याध्यक्ष-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
- (5) डॉ. धर्मचन्दजी जैन, जयपुर, कार्याध्यक्ष-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
- (6) श्री अशोक कुमारजी सेठ, जयपुर, मन्त्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
- (7) श्री राजेन्द्र कुमारजी रितुलजी पटवा, जयपुर, कोषाध्यक्ष-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
- (8) श्री हिमांशुजी सुपुत्र श्री सोहनलालजी जैन, अलीगढ़-रामपुरा, जिला-टोंक
- (9) श्री गौतमचन्दजी जैन, पूर्व जिला रसद अधिकारी (अलीगढ़-रामपुरा वाले), जयपुर
- (10) न्यायमूर्ति श्री जसराजजी श्री आनन्दजी चौपड़ा, जयपुर
- (11) श्री सुशीलजी सोलंकी, मुम्बई
- (12) श्री रतनराजजी नेमीचन्दजी भण्डारी, मुम्बई (पीपाड़ सिटी वाले)
- (13) नयनतारा रतनलाल सी. बाफणा एण्ड सन्स, जलगाँव
- (14) श्री राजरूपमलजी, संजयजी, अंजयजी, दिवेशजी मेहता, शिवाकाशी
- (15) डॉ. एस. एल. नागौरीजी, बून्दी
- (16) श्री अरुणजी मेहता, सुनीताजी मेहता छत्तरछाया फाउण्डेशन, जोधपुर
- (17) श्री उम्मेदराजजी, एवन्तकुमारजी, राजेशकुमारजी डूंगरवाल (थाँवला वाले), पाँच्यावाला-जयपुर
- (18) श्री दुलीचन्दजी-श्रीमती कमलाजी बाघमार, चेन्नई
- (19) श्री चंचलमलजी, अशोक कुमारजी चोरडिया, जोधपुर
- (20) श्री प्रमोदजी महनोत, जयपुर, अध्यक्ष-श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जयपुर
- (21) श्री चंचलराजजी मेहता, अहमदाबाद
- (22) श्री जिनेश कुमारजी, रोहितराजजी जैन (ढहरा वाले), हिण्डौनसिटी-जयपुर
- (23) श्री सागरमलजी, हुकमचन्दजी नागसेठिया, शिरपुर
- (24) श्री क्रान्तिचन्दजी मेहता, अलवर

वित्तीय वर्ष 2021-22 हेतु लाभार्थी

- (1) श्री भागचन्दजी हेमेशजी सेठ, जयपुर
- (2) श्री सौभाग्यमलजी, हरकचन्दजी, हनुमान प्रसादजी, महावीर प्रसादजी, कपूरचन्दजी जैन (बिलोता वाले), अलीगढ़-रामपुरा, सवाईमाधोपुर, कोटा एवं जयपुर
- (3) श्री स्वरूपचन्दजी बाफना, सूरत
- (4) श्री सुमतिचन्दजी कोठारी, जयपुर
- (5) श्री पवनलालजी मोतीलालजी सेठिया, होलनांथा
- (6) श्रीमती अलकाजी, विजयजी नाहर, इन्दौर
- (7) श्री कैलाशचन्दजी हीरावत, जयपुर
- (8) सेठ चंचलमल गुलाबदेवी सुराणा ट्रस्ट, बीकानेर
- (9) श्री रंगरूपमलजी चोरडिया, चेन्नई



JVS Foods Pvt. Ltd.

Manufacturer of :

NUTRITION FOODS

BREAKFAST CEREALS

FORTIFIED RICE KERNELS

WHOLE & BLENDED SPICES

VITAMIN AND MINERAL PREMIXES

*Special Foods for undernourished Children
Supplementary Nutrition Food for Mass Feeding Programmes*

With Best Wishes :

JVS Foods Pvt. Ltd.

G-220, Sitapura Ind. Area,
Tonk Road, Jaipur-302022 (Raj.)

Tel.: 0141-2770294

Email-jvsfoods@yahoo.com

Website-www.jvsfoods.com

FSSAI LIC. No. 10012013000138





**WELCOME TO A HOME THAT DOESN'T
FORCE YOU TO CHOOSE.
BUT, GIVES YOU EVERYTHING INSTEAD.**

Life is all about choices. So, at the end of your long day, your home should give you everything, instead of making you choose. Kalpataru welcomes you to a home that simply gives you everything under the sun.

 **022 3064 3065**



ARTIST'S IMPRESSION

Centrally located in Thane (W) | Sky park | Sky community | Lavish clubhouse | Swimming pools | Indoor squash court | Badminton courts

PROJECT
IMMENZA
THANE (W)
EVERYTHING UNDER THE SUN

TO BOOK 1, 2 & 3 BHK HOMES, CALL: +91 22 3064 3065

Site Address: Bayer Compound, Kolshet Road, Thane (W) - 400 601. | **Head Office:** 101, Kalpataru Synergy, Opposite Grand Hyatt, Santacruz (E), Mumbai - 400 055. | **Tel:** +91 22 3064 5000 | **Fax:** +91 22 3064 3131 | **Email:** sales@kalpataru.com | **Website:** www.kalpataru.com

In association with



This property is secured with Axis Trustee Services Ltd. and Housing Development Finance Corporation Limited. The No Objection Certificate/Permission would be provided, if required. All specifications, designs, facilities, dimensions, etc. are subject to the approval of the respective authorities and the developers reserve the right to change the specifications or features without any notice or obligation. Images are for representative purposes only. *Conditions apply.

If undelivered, Please return to

Samyaggyan Pracharak Mandal

Above Shop No. 182,

Bapu Bazar, Jaipur-302003 (Raj.)

Tel. : 0141-2575997

स्वामी सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के लिए प्रकाशक, मुद्रक - अशोक कुमार सेठ द्वारा डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर राजस्थान से मुद्रित एवं सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, शॉप नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-3 राजस्थान से प्रकाशित। सम्पादक-डॉ. धर्मचन्द जैन